प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank–Cum–Answer Book

2023

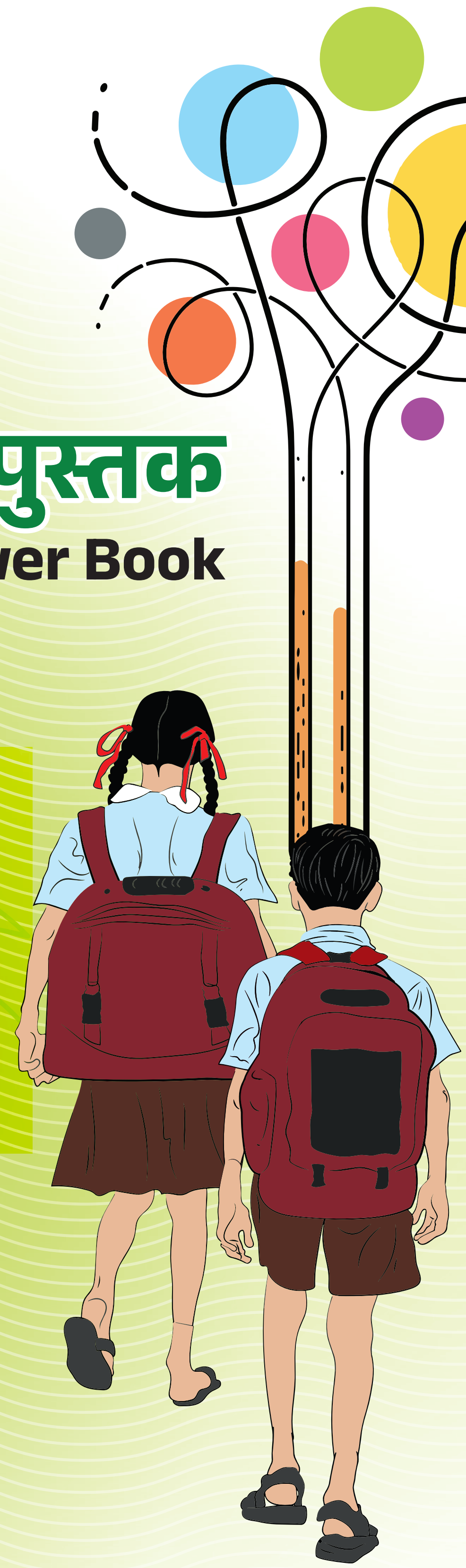

Class-10

हिन्दी (HINDI)

क्षितिज एवं कृतिका

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक
Question Bank-Cum-Answer Book

Class - 10

हिन्दी
Hindi

क्षितिज एवं कृतिका

नवोन्मेष शोध नेतृत्व

JCERT

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 10 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

भूमिका

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 10 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और बोर्ड परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक बोर्ड परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

अनिता कुमारी
TGT (हिन्दी)
जनता उच्च विद्यालय, बेड़ो, राँची

खुशबू कुमारी
TGT (हिन्दी)
एस. एस. +2 उच्च विद्यालय, चिलदाग, अनगड़ा, राँची

अजय लकड़ा
TGT (हिन्दी)
एस. एस. +2 उच्च विद्यालय, बेड़ो, राँची

विषय सूची

क्षितिज			
काव्य–खंड			
अध्याय 1.	सूरदास	पद	3–6
अध्याय 2.	तुलसीदास	राम–लक्ष्मण परशुराम संवाद	7–10
अध्याय 3.	देव	सवैया, कवित्त	11–13
अध्याय 4.	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	उत्साह, अट नहीं रही है	14–17
अध्याय 5.	नागार्जुन	यह दंतुरित मुसकान, फसल	18–21
अध्याय 6.	गिरिजाकुमार माथुर	छाया मत छूना	22–24
अध्याय 7.	ऋतुराज	कन्यादान	25–27
अध्याय 8.	मंगलेश डबराल	संगतकार	28–30
गद्य–खंड			
अध्याय 9.	स्वयं प्रकाश	नेताजी का चश्मा	31–33
अध्याय 10.	रामवृक्ष बेनीपुरी	बालगोबिन भगत	34–37
अध्याय 11.	यशपाल	लखनवीं अंदाज	38–39
अध्याय 12.	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	मानवीय करूणा की दिव्य चमक	40–42
अध्याय 13.	मन्नू भंडारी	एक कहानी यह भी	43–45
अध्याय 14.	यतींद्र मिश्र	नौबतखाने में इबादत	46–48
कृतिका			
अध्याय 1.	शिवपूजन सहाय	माता का आँचल	51–53
अध्याय 2.	कमलेश्वर	जॉर्ज पंचम की नाक	54–56
अध्याय 3.	मधु कांकरिया	साना–साना हाथ जोड़ि	57–60
	JAC वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2023 - प्रश्नोत्तर		61–66

क्षितिज

अध्याय 1 पद

- सूरदास

कवि परिचय

सूरदास- जन्म सन 1478,

जन्म स्थान- एक किवदन्ती के अनुसार मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र।

दूसरी किवदन्ती के अनुसार उनका जन्म स्थान दिल्ली के पास सीही।

गुरु- वल्लभाचार्य

मृत्यु- सन 1583

रचनाएं- सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली।

पठित पद की भाषा - ब्रजभाषा।

पाठ- परिचय:- भक्ति कालीन हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवि सूरदास सगुण काव्यधारा के कृष्ण मार्गी शाखा के कवि हैं। पाठ्यपुस्तक में सूरसागर के भ्रमरगीत से चार पद लिए गये हैं। कृष्ण के मथुरा जाने के बाद वे स्वयं न लौटकर उद्धव के जरिए गोपियों के पास संदेश भेजा। उन्होंने निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देकर गोपियों की विरह वेदना को शांत करने का प्रयास किया। गोपियाँ ज्ञान मार्ग के बजाय प्रेम मार्ग पसंद करती थी। इसी कारण उन्हें उद्धव का शुष्क संदेश पसंद नहीं आया। तभी वहां एक भौंरा आ पहुंचा। यहीं से भ्रमरगीत आरंभ होता है। गोपियों ने भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े। पहले पद में गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहती हैं। वे कभी स्नेह के धागे से बंधे होते तो विरह की पीड़ा को समझ पाते। दूसरे पद में गोपियाँ शिकायत करती हैं कि उनकी मन की अभिलाषा मन में ही रह गई। तीसरे पद में योग साधना को कड़वी-ककड़ी जैसा बतला कर अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती हैं। चौथे पद में उद्धव को ताना मारती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। अंत में गोपियों द्वारा उद्धव को राजधर्म याद दिलाया जाना है जिसमें सूरदास की लोक धर्मिता को दर्शाया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

1• गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर:- गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान कह कर उन पर व्यंग्य साधती हैं। उनके व्यंग्य का उद्देश्य है कि उद्धव से वे कहना चाहती हैं कि उन्हें कभी प्रेम नहीं हुआ है इसलिए वह गोपियों की पीड़ा को समझने में असमर्थ हैं। क्योंकि जो घायल होते हैं वही घायल की स्थिति जान सकते हैं अतः उद्धव गोपियों की पीड़ा का एहसास नहीं कर सकते।

2• उद्धव के व्यवहार की तुलना किससे की गई है?

उत्तर:- उद्धव के व्यवहार की तुलना भौंरे से की गई है भंवरा जैसे काला है वैसा ही उद्धव का मन है इसलिए गोपियों को कृष्ण को भूलने कह कर, निर्गुण उपासना का संदेश देते हैं। प्रथम पद में हम देखते हैं कि उद्धव की तुलना कमल के पत्ते एवं तेल की गगरी से की गई है। जिन पर जल की बूंदों का प्रभाव नहीं पड़ता वैसे उद्धव पर भी प्रेम का कोई प्रभाव कृष्ण के साथ रहने पर भी नहीं पडा।

3• गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उल्लाहने दिए हैं?

उत्तर:- जब गोपियों को उद्धव ने निर्गुण उपासना का संदेश दिया तब गोपियों को यह मार्ग पसंद नहीं आया। इस मार्ग पर चलने से इनकार करते हुए गोपियों ने उद्धव को उलाहने देने शुरू किए कि तुमने कभी प्रेम रूपी नदी में डुबकी नहीं लगाई अगर किसी से प्रेम किया होता तो यह संदेश हमें न सुनाते। कृष्ण के साथ रहकर भी तुमको उनसे प्रेम न हुआ यह अचरज की बात है। तुम हमें कितनी ही विशेषताएं योग मार्ग की बताओ हमारे मन से कृष्ण प्रेम की परतों को नहीं तोड़ सकता। क्योंकि हम मन, कर्म, वचन से कृष्ण को स्वीकार चुकी हैं। तुम तो जल में डूबे हुए कमल के पत्तों के समान हो जो जल में रहकर भी उससे कभी भींगता नहीं। हम तो इतने दूर रहकर भी कृष्ण को भूल नहीं पाए हैं। तुम साथ रहकर भी उनको समझ नहीं पाए हो।

4• उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर:- गोपियाँ कृष्ण से बहुत प्रेम करती थीं। कृष्ण से बिछड़ कर उनकी स्थिति बहुत खराब हो गई थी। वे पगली की तरह प्रतिदिन कृष्ण की बाट जोहा करती थीं। ऐसे में कृष्ण तो नहीं उनका संदेशा लेकर उद्धव आते हैं। जो योग मार्ग का संदेश लेकर आते हैं। जिसे सुनकर उनका हृदय टूट जाता है।वे विरह अग्नि में दहक उठती हैं। कृष्ण से मिलने की आशा टूट जाती है और वह अधीर हो जाती हैं। इस तरह पहले से जलती हुई विरह की आग में फिर से घी पड़ जाता हैं।

5• 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन सी मर्यादा रहने की बात की जा रही है?

उत्तर:- प्रेम की बात कहें तो इसकी सबसे बड़ी मर्यादा है कि प्रेमी और प्रेमिका दोनों प्रेम निभाए। एक-दूसरे की भावनाओं को समझें और सम्मान करें। किंतु कृष्ण ने गोपियों से प्रेम निभाने के स्थान पर उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान योग साधना का संदेश उद्धव के माध्यम से भेज दिया। जो कि गोपियों की नजर में एक प्रकार से छल था। इसी छल को गोपियों ने समझा कि कृष्ण ने हमारे प्रेम की मर्यादा नहीं रखी।

6• कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किए हैं?

उत्तर:- कृष्ण के प्रति गोपियों ने अनन्य प्रेम निम्न प्रकार से व्यक्त किए हैं:-

I• जागते, सोते, दिन-रात में कृष्ण को ध्यान में रखती हैं जैसे हारिल पक्षी एक लकड़ी को पकड़ता है उसी प्रकार वे भी कृष्ण को पकड़ी हैं।

II• वे कहती हैं कि वे कृष्ण के प्रेम में इस प्रकार सनी है जैसे गुड़ से चीटियां लिपटी रहती हैं।

III• गोपियों ने कृष्ण को मन , कर्म, वचन, से पकड़ रखा है।

IV. जब उद्धव के द्वारा योग का संदेश पाती हैं तो उनका धैर्य टूटने लगता है और वे व्यथित हो उठतीं हैं।

7• गोपियों ने उद्धव को योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तरः- गोपियाँ उद्धव से वैसे लोगों को योग संदेश देने कहती हैं, जिनका मन स्थिर नहीं है। जिनका मन चकरी की तरह घूमता है। यहां चकरी की तरह मन, कृष्ण का बताया गया है। अतः यह संदेश कृष्ण को ही पहुंचा देने की बात कही गई है।

8• प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों की योग साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तरः- सूरदास के पदों के आधार पर हम कह सकते हैं कि गोपियाँ योग-साधना को नीरस, व्यर्थ और बेकार मानती थी। उनका मानना है कि योग साधना प्रेम के साकार रूप का स्थान ग्रहण नहीं कर सकती। योग साधना को गोपियों ने कड़वी ककड़ी के समान बताया। जिसके मन में प्रेम पूर्ण समर्पण है वह ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। योग साधना तो पूर्णता नीरस और उबाऊ है यह प्रेम की दीवानगी के चरमपद को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। यह तो गोपियों को कृष्ण से दूर ले जाता हुआ दिखाई दे रहा है अतः गोपियाँ इसे स्वीकार नहीं करती। जिसके कारण उनका विरह और बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। इसलिए वे कृष्ण को निम्न प्रकार की उलाहना देने लगती हैं जैसेः-

सुनत जोग लागत है ऐसौ,
ज्यों करुई ककरी।
या
बड़ी बुद्धि जानी जो उनकी,
जोग संदेश पठाए।
या
हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।

अतः उपरोक्त पदों के माध्यम से स्पष्ट है कि गोपियाँ योग साधना के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं रखती थी उन्हें प्रेम मार्ग ही पसंद था।

9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिये ?

उत्तरः- गोपियों के अनुसार राजा का धर्म प्रजा की रक्षा करना है। एक राजा अपनी प्रजा की सभी समस्याओं से अवगत होता है एवं उसका पालक और रक्षक भी होता है।

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं ?

उत्तरः अब गोपियों ने कृष्ण के स्वभाव में निम्न प्रकार के परिवर्तन देखे :-

(1) अब वे भोले कान्हा नहीं रहे बल्कि राजा कृष्ण हो गए।

(2) राजा बनते ही राजनीति में कुशलता आ गई है।

(3) अभी तक प्रेम बाँटने वाले सबके लला कृष्ण अब योग संदेश बाँटने लगे।

(4) कभी-कभी राजा अपनी बात प्रजा से मनवाने के लिए अनीति एवं क्रूरता करते हैं। कृष्ण को भी ऐसी कला आ गई है।

(5) इस तरह राजधर्म की उपेक्षा भी हो रही है।

11• गोपियों ने अपने वाक् चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक् चातुर्य की विशेषताएं लिखिए।

उत्तरः- प्रेम की पीड़ा ने भोली-भाली गोपियों को बिल्कुल वाक्चातुर्य बना दिया था। तभी तो ब्रह्म ज्ञानी उद्धव उनके सामने मूक बने रह जाते हैं। भोली- भाली गोपियों के हृदय में कृष्ण के प्रेम का सच्चा ज्वार है, उसी की शक्ति ने उन गोपियों को सच्चा बल दिया। जिसके बल पर वह ज्ञानी उद्धव को हरा देती हैं यह उद्धव का सिर्फ हारना नहीं है बल्कि उनके ज्ञान के अहंकार का टूटना भी है गवारण गोपियों के हाथों से। उद्धव का ज्ञान गोपियों के हृदय के सामने झुक जाता है। उनके वाक्चातुर्य में निम्नलिखित विशेषताएं दिखाई पड़ती हैः-

1• कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम

2• उन्हें विभिन्न लोक व्यवहार का ज्ञान है।

3• अपनी बात कहने में कुशल एवं चतुर हैं।

4• चतुराई के साथ व्यंग्य करने में भी काफी कुशल हैं।

5• वक्रोक्ति पूर्ण कथन का प्रयोग भी कुशल है।

6• उपालंभ प्रधानता भी है।

12• संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएं बताएं।

उत्तरः- सूरदास ने गोपियों के हृदय में डूबकर जो भ्रमरगीत लिखे हैं उसकी निम्नलिखित विशेषता है -

(i) सूर के पदों में गोपियों का प्रेम निर्मल है। वह कृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती हैं उनका प्रेम अनन्य एवं अनूठा है।

(ii) गांव में रहने वाली गोपियाँ सरल और चंचल है किंतु इसमें वाक् चतुराई भी है। वह सिर्फ रोती नहीं बल्कि अपने अधिकार के लिए अपने भोले निश्चल तर्कों से उद्धव को परास्त करने की क्षमता भी रखती हैं।

(iii) भ्रमरगीत के इस अंक में हम साफ-साफ देख पाते हैं कि यहां व्यंग्य, कटाक्ष, उलाहना, निराशा, प्रार्थना, गुहार आदि अनेक- अनेक मनोभाव तीखे तेवरों के साथ प्रकट हुए हैं।

(iv) इन पदों में हम साफ-साफ देख रहे हैं सगुण भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग में द्वंद्व है। इस द्वंद्व के बीच में गोपियाँ सगुण प्रेम के मार्ग पर बल देती हैं और योग मार्ग को तुच्छ समझती हैं।

(v) इन पदों में कृष्ण के ज्ञानी मित्र उद्धव का अहंकार टूटता है, बेपढ़ी-लिखी, अज्ञानी गोपियों का प्रेम प्रतिष्ठित होता है।

(vi) ये पद गायन की दृष्टि से बहुत मन को मनोहर लगने वाले हैं, इन पदों को पहले शास्त्रीय रागों के आधार पर गाया गया फिर लिखा गया है।

(vii) श्रृंगार रस के विरह का सुंदर चित्रण इसमें दिखाई पड़ता है साथ ही ब्रजभाषा की कोमलता मधुरता और सरसता भरी हुई है।

(viii) अलंकारों का सहज प्रयोग है जिसमें अलंकार सहज जन जीवन की भाषा से लिए गए हैं।

(Ix) जिन पदों में अलंकार का प्रयोग नहीं है उसमें सूर के हृदय की सरसता भरी पड़ी है।

(x) वैसे तो इन पदों के नायक श्री कृष्ण ही हैं किंतु वह कहीं भी प्रत्यक्ष रूप में दिखाई नहीं देते सारी बातें कृष्ण को ही लेकर हो रही हैं लेकिन कृष्ण पर्दे के पीछे हैं गोपियाँ उनके मित्र उद्धव से खुलकर अपने हृदय की बातें करती हैं।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1• सूरदास का जन्म कब हुआ?

उत्तरः- सन 1478 ।

2• उनके गुरु का क्या नाम था?

उत्तरः- वल्लभाचार्य

3• उनकी मृत्यु कब और कहां हुई?

उत्तरः- सन 1583, पारसोली में।

4• उनके काव्य की भाषा क्या है?

उत्तरः- ब्रज

5• उनके काव्य में किन रसों का निखरा हुआ स्वरूप है?

उत्तरः- वात्सल्य और श्रृंगार

6• उनका प्रमुख काव्य ग्रंथ कौन सा है ?

उत्तरः- सूरसागर ।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1• गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तरः- गोपियों ने अपने प्रेम मार्ग के समर्थन में बहुत तरह के तर्क दिए हैं जबकि उद्धव योग मार्ग का संदेश लेकर आए हैं। इसलिए गोपियाँ कहती हैं यदि योग मार्ग इतना ही सहज और सुंदर है तो फिर प्यारे कृष्ण को संसार में सगुण रूप धरकर प्रेम को प्रतिष्ठित करने के लिए क्यों आना पड़ा? नंद और यशोदा में उनके बाल छवि को पाने की ललक क्यों जगी? कुब्जा को योग संदेश क्यों नहीं सुनाया जाता? अतः हम मानती है कि योग संदेश नीरस और कठोर है। इसे कोमल तन और मन वाले लोग अपना नहीं पाएंगे। अतः हमारे लिए यह मार्ग असंभव है।

2• उद्धव ज्ञानी थे; नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन सी शक्ति थी जो उनके वाक् चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तरः- भले ही गोपियाँ गांव की भोली-भाली बालाएं हैं। लेकिन उनमें कृष्ण प्रेम की सच्ची धारा है; जिससे प्रेम का सच्चा ज्वार उठता है। उनके प्रेम के ज्वार के सामने उद्धव का ज्ञान और नीति पूर्ण तर्क बह जाता है। गांव की गवार गोपियों के प्रेम की जीत होती है। उद्धव का अहंकार सच्चे प्रेम के सामने अपने घुटने टेक देता है।

3• गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नजर आता है?

उत्तरः- जब कृष्ण मथुरा चले गए विरहणी गोपियाँ उनके आने की प्रतीक्षा प्रतिदिन करने लगीं । कृष्ण तो आए नहीं किंतु उनका संदेशा लेकर कृष्ण के बाल सखा उद्धव आए, जो योग संदेश लेकर आए थे। यह योग मार्ग गोपियों को कृष्ण से दूर ले जाने वाला था। इसलिए गोपियों ने इसे छल माना और कृष्ण के ऊपर आरोप लगाया कि हरि ने राजनीति पढ़ ली है। इस संदर्भ में अगर हम आज की राजनीति को देखते हैं, तो पाते हैं कि राजनीति का गलियारा कपट और प्रपंच से भरा हुआ है। जब कोई राजनेता अपने पद को प्राप्त होता है तो जनता से किए वादों को भूल कर अपना स्वार्थ साधने लग जाता है। सेवा की भावना समाप्त हो जाती है। गरीब जनता का अंततः अहित ही होता है। इसलिए गोपियों का यह व्यंग्य बिल्कुल सटीक बैठता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

1• सूरदास भक्ति मार्ग के समर्थक थे ? उनके पदों के आधार पर यह प्रमाणित कीजिए।

उत्तरः- सूरदास का हृदय सगुण- भक्ति के प्रेम- रस से भरा है। गोपियों की स्थिति देखने से यह साफ दिखाई देता है कि गोपियों का प्रेम सूर के हृदय से बह रहा है। इसलिए गोपियों को उन्होंने कहलवाया कि हम गोपियाँ –अबला हम भोरी , गुर चांटी ज्यौ पागी।"

यह अबला गोपियाँ, सिर्फ गोपियाँ नहीं है बल्कि सूर का हृदय भी है जो अपने आराध्य कृष्ण के साकार सगुण स्वरूप से बहुत प्रेम करता है। तभी तो उद्धव के अहंकारी ज्ञानी मन को सूर ने गोपियों की निश्चल प्रेम के सामने तुच्छ माना है। गोपियों के प्रेम को महान बताया और उनकी महानता पदों के माध्यम से प्रतिष्ठित भी की है। तभी तो योग को कड़वी ककड़ी के समान कहलवाया । फिर गोपियाँ अपने प्रेम को प्रतिष्ठित करती हुई कहती हैं कि हमारा मन हारिल की पक्षी की तरह है जो अपने पैरों में पकड़ी हुई लकड़ी को आधार मानता है उसी प्रकार हमने भी कृष्ण को एकनिष्ठ प्रेम से पकड़ लिया है हम अपना रास्ता नहीं बदलेंगे।

2• उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे ; गोपियों के पास ऐसी कौन सी शक्ति थी जो उनके वाक्- चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तरः- गोपियाँ तो गांव की भोली भाली बालाएं हैं। किंतु उनमें कृष्ण प्रेम का सच्चा ज्वार है। एक सच्चे ज्वार के सामने उद्धव का ज्ञान और नीति पूर्ण तर्क बह जाता है। गांव की गवार गोपियों के प्रेम की जीत होती है। उद्धव तो राजधानी में रहते हैं, गुरुकुल में पढे हैं। कृष्ण के बाल सखा भी ठहरे। फिर भी वह कृष्ण के सच्चिदानंद स्वरूप को नहीं जान पाए। इसे भोली भाली गोपियाँ जान गई थी। इसीलिए तो उनके अत्यधिक ज्ञानी होने के अहंकार को गोपियों ने तोड़ा एवं हृदय के प्रेम को प्रतिष्ठित किया।

3• 'मन की मन ही मांझ रही' इन पदों में गोपियों की कौन सी भावना परिलक्षित होती है?

उत्तरः- मन की मन ही मांझ रही इस कथन में गोपियों की बहुत सी भावनाएं निहित हैं। एक तरफ तो हम देखते हैं कि गोपियाँ कृष्ण के आने की प्रतीक्षा में थी, किंतु कृष्ण वापस नहीं आए ,आया उनका संदेशा। जिसमें निर्देश था कि अब वे योग मार्ग का अनुसरण करें, कृष्ण को भूल जाएं। इससे गोपियों का कोमल हृदय टूट जाता है। कृष्ण का इंतजार ही उनके जीवन का आधार था। भले आज तक गोपियाँ कृष्ण के विरह को झेल रही थी लेकिन उस विरह में भी उन्हें कृष्ण से जुड़े होने की आनंद की अनुभूति थी। उनसे मिलने और उनको देखने की लालसा उनके मन में भरी हुई थी। किंतु यह योग मार्ग गोपियों को कृष्ण से दूर करने वाला मार्ग था। योग- संदेश से मन की बात मन में ही रह गई। गोपियाँ अपने मन की बात कृष्ण से करना चाहती थी अपनी पीड़ा

बतलाना चाहतीं थी लेकिन वह अब सब खत्म हो गया। उनका मानना है कि कृष्ण के प्रेम को उन्होंने बहुत दिनों तक निर्वाह भी नहीं किया है । इस योग साधना ने प्रेम साधना में बाधा का काम किया है। सूरदास इन पदों के माध्यम से यह भी मानते हैं कि योग साधना से कोई सिद्धि प्राप्त नहीं होती । जीवन का सच्चा सार है तो वह है- ईश्वर से सच्चा प्रेम।

4• 'उधौ तुम हो अति बड़भागी' इन पदों में कैसे लोगों पर व्यंग्य किया गया है? सूरदास इन पदों के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?

उत्तरः- 'उधौ तुम हो अति बड़भागी' इस पद में प्रथमतया तो उद्धव के ऊपर व्यंग्य दिखाई पड़ता है कि वे कृष्ण के समीप रहकर भी कृष्ण को नहीं समझ पाए हैं अर्थात् ईश्वर से वे अब तक अनछुए हैं उन्हें ईश्वर से प्रेम नहीं हुआ है। इसलिए गोपियाँ उनको कहती हैं कि आप बड़े भाग्यवान हैं। आपको प्रेम है ही नहीं तो आप प्रेम की पीड़ा कैसे जान पाएंगे। यहां भाग्यवान शब्द अच्छे भाग्य के लिए नहीं बल्कि व्यंग्य के रूप में आया है। फिर हम दृष्टि को विस्तार दे तो हमें पता चलता है कि इन पदों के माध्यम से गोपियाँ उद्धव के माध्यम से सभी प्राणियों की ओर इशारा करती है कि जो भी प्राणी कृष्ण के पास है और उनसे प्रेम न कर सको तो समझो वास्तव में वह सबसे बड़ा भाग्यहीन ही है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

1• गोपियाँ किसके प्रेम में आसक्त हो गई हैं?

क• उद्धव- प्रेम   ख• कृष्ण- प्रेम
ग• संगीत -प्रेम   घ• इनमें से कोई नहीं

उत्तरः- ख• कृष्ण- प्रेम

2• गोपियाँ कृष्ण के प्रति कैसी भावना रखती हैं?

क• विरोध की   ख• क्रोध की
ग• प्रेम की   घ• घृणा की

उत्तरः- ग• प्रेम की

3• कवि के अनुसार गोपियों का स्वभाव कैसा है?

क• चतुर   ख• निर्दयी
ग• घमंडी   घ• भोला

उत्तरः- घ• भोला

4• गोपियों को छोड़कर कृष्ण कहां चले गए थे?

क• वृंदावन   ख• मथुरा
ग• ब्रज   घ• द्वारका

उत्तरः- ख• मथुरा

5• कृष्ण का योग संदेश लेकर कौन आए थे?

क• सेवक   ख• सुदामा
ग• उद्धव   घ• बलराम

उत्तरः- ग• उद्धव

6• इनमें से किस पक्षी की तुलना गोपियों ने स्वयं से की है?

क• चकोर   ख• मोर
ग• कोयल   घ• हारिल

उत्तरः- घ• हारिल

7• उद्धव कृष्ण का कौन सा संदेश लेकर आए थे?

क• प्रेम संदेश   ख• अनुराग संदेश
ग• योग संदेश   घ• इनमें से कोई नहीं

उत्तरः- ग• योग संदेश

8• कृष्ण का संदेश सुनकर गोपियों की स्थिति कैसी हो गई?

क• मिलन की आस जगी   ख• विरह की आग जगी
ग• खुशी की आस जगी   घ• प्रेम की आस जगी

उत्तरः- ख• विरह की आग जगी

9• उद्धव के व्यवहार की तुलना किसके पत्ते से की गई है?

क• पीपल के पत्ते   ख• कमल के पत्ते
ग• केले के पत्ते   घ• नीम के पत्ते

उत्तरः- ख• कमल के पत्ते से

10• उद्धव किसकी संगति में रहकर भी प्रेम से अछूते रह गये ।

क• गोपियों की   ख• सूरदास की
ग• कृष्ण की   घ• किसी की भी नहीं

उत्तरः- ग• कृष्ण की

अध्याय 2 राम लक्ष्मण परशुराम संवाद

- तुलसीदास

कवि परिचय

कवि:- तुलसीदास

जन्म:- सन 1532, **मृत्यु** - 1623

स्थान:- एक मान्यता के अनुसार उत्तर प्रदेश, बांदा जिला, राजापुर गांव

- दूसरी मान्यता के अनुसार जिला एटा गांव सोरों ।
- बचपन में ही माता- पिता के बिछोह के कारण जीवन संघर्षपूर्ण रहा।
- गुरु कृपा से राम भक्ति का मार्ग मिला। तुलसी मानव मूल्यों के उपासक कवि थे ।
- उनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण रामचरितमानस है।
- **रचनाएं**:- रामचरितमानस (अवधी), कवितावली, गीतावली (ब्रज भाषा), दोहावली, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका।
- तुलसी ने रामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में की है।
- विनय पत्रिका तथा कवितावली की रचना ब्रजभाषा में की है।
- रामचरितमानस का मुख्य छंद चौपाई है तथा बीच-बीच में दोहे, सोरठे, हरिगीतिका तथा अन्य छंद पिरोए गए हैं।
- विनय पत्रिका की रचना गेय पदों में हुई है।
- कवितावली में सवैया और कविता छंद की छटा देखी जा सकती है।
- उनकी रचनाओं में प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप है।

पाठ- परिचय

पाठ में संकलित अंश रामचरितमानस के बालकांड से लिया गया है। सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव धनुष भंग हो जाने के बाद मुनि परशुराम को जब यह समाचार मिला तो वह अत्यंत क्रोधित होकर वहां आ पहुंचते हैं। शिव धनुष को खंडित देखकर वे आपे से बाहर हो जाते हैं। बाद में राम के विनय को देखकर और विश्वामित्र के समझाने पर वह राम की शक्ति परीक्षा लेकर वहां से जाते हैं। इसी बीच राम, लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद प्रस्तुत हुआ है, वह अपने आप में काफी अद्भुत है। परशुराम जी के क्रोध भरे वाक्यों का उत्तर नटखट लक्ष्मण व्यंग्य भरे वचनों से देते हैं। इस प्रसंग की मुख्य विशेषता है कि लक्ष्मण की वीर रस से पगी हुई व्यंग्योक्तियाँ और व्यंजना शैली की सरस अभिव्यक्ति।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन कौन से तर्क दिए?

उत्तर:- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए निम्न तर्क दिए:-

क. धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई दास होगा।

ख. ऐसे धनुष तो बचपन में हमने कई बार तोड़े हैं पर किसी ने हमसे कुछ नहीं कहा।

ग. इस धनुष में ऐसा क्या खास है कि आप इस पर ममता दिखा रहे हैं। सारे धनुष तो एक ही समान होते हैं।

घ. यह धनुष तो बहुत पुराना धनुष था।

ङ. इसलिए श्री राम जी के छूने पर ही टूट गया। इसमें श्री राम जी की कोई गलती नहीं है।

2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषता अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई हैं इसमें दोनों के स्वभाव के अलग-अलग विशेषताएँ दिखाई देती हैं:-

जैसा कि लक्ष्मण छोटे थे उनके स्वभाव में बालपन दिखता है। स्वभाव क्रोधी था इसलिए परशुराम जी के प्रश्नों का उत्तर क्रोध से देना चाहते थे। उनकी वाणी व्यंगपूर्ण थी। परशुराम के प्रश्नों का उत्तर भी वे व्यंग्यपूर्ण ही दिया करते थे।

जैसा कि राम बड़े थे तो उनमें बड़प्पन भी दिखाई देता है। वह अत्यंत विनम्र संयत एवं मृदु स्वभाव के थे। परशुराम के क्रोध पूर्ण प्रश्नों का भी उत्तर वे शांति से देना चाहते थे। परशुराम को समझाने के लिए धैर्य पूर्ण एवं तर्कपूर्ण उत्तर देते थे उनकी वाणी में सहनशीलता के दर्शन होते हैं। वास्तव में श्री राम संत स्वभाव के थे।

3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर:- लक्ष्मण और परशुराम के बीच शिव धनुष टूटने पर हुआ संवाद मुझे सबसे अच्छा लगा। उसका संवाद शैली में वर्णन इस प्रकार है:-

परशुराम:- (गुस्से में) शिवजी का यह धनुष किसने तोड़ा है ?

लक्ष्मण:- हे नाथ! इस धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई दास है ।

परशुराम:- वह जानता नहीं कि यह शिव धनुष है ? वह कौन है? शिव धनुष को तोड़ने वाला वह व्यक्ति सहस्त्रबाहु के समान मेरा दुश्मन है।

लक्ष्मण:-(व्यंग्यपूर्ण उत्तर देते हुए) हे नाथ! आप इस धनुष के टूटने पर इतना क्रोधित क्यों हो रहे हैं? हमने अपने बचपन में

बहुत सारी धनुहियाँ तोड़ी हैं उस समय तो कोई गुस्सा नहीं हुआ ! क्या हुआ जो यह धनुष टूट गया ?

परशुराम:- (परशुराम और भी क्रोधित होकर कहते हैं) हे बालक! तुम्हें यह शिव धनुष धनुही के समान दिखाई पड़ता है ? शिव धनुष की महिमा तुम नहीं जानते?

लक्ष्मण:-(लक्ष्मण अपनी चंचलता एवं बालपन में फिर से व्यंग्य बाण छोड़ते हैं) हमारे ज्ञान में तो सभी धनुष एक ही समान हैं! इस पुराने धनुष के टूटने पर इतना क्रोध क्यों है, यह मुझे नहीं पता?

परशुराम:- रे बालक ! यह शिव धनुष है! शिव धनुष को तोड़ने वाला मेरा शत्रु है। मैं उसे मार डालूंगा।

लक्ष्मण:- सुनिए मुनि! यह धनुष बहुत पुराना धनुष था, रामचंद्र जी के छूने मात्र से ही यह टूट गया उसमें उनका कोई दोष नहीं! आप बिना कारण ही क्रोध कर रहे हैं!

4• परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा इस चौपाई के आधार पर लिखिए-

ब्रह्मचारी अति कोही। विस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।

भुजबल भूमि भूप बिनू किन्ही। विपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ।।

सहस्रबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीप कुमारा।।

मातु-पितहि जनि सोचबस करसि महिस किशोर।

गर्भन्ह के अभर्क दलन परसु मोर अति घोर।।

उत्तर:- उपरोक्त पंक्तियों में परशुराम ने अपने बारे में कहा है- मैं बाल ब्रह्मचारी हूं और स्वभाव से बहुत ही क्रोधी हूं। सारे संसार में यह विख्यात है कि मैं क्षत्रियों का शत्रु हूं। उनके कुल का नाश करने वाला हूं। मैंने अनेक बार अपनी भुजाओं के बल पर इस धरती से सारे राजाओं को मार डाला है । यह पृथ्वी ब्राह्मणों को दान में दी है। देखो मेरा फरसा बहुत ही भयानक है। इसी फरसे से मैंने राजाओं को मार डाला है। मेरे क्रोध को देखकर गर्भिणी स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं।

5• लक्ष्मण ने वीर योद्धाओं की क्या-क्या विशेषताएँ बताई।

उत्तर:- लक्ष्मण ने वीर योद्धाओं की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं:-

- लक्ष्मण कहते हैं शूरवीर युद्ध भूमि में युद्ध करते हैं।
- अपनी बड़ाई खुद अपने से नहीं करते ।
- शत्रु को युद्ध में उपस्थित देखकर अपनी प्रशंसा करने के बजाय अपनी वीरता दिखाने में विश्वास करते हैं ।
- जो वीर होते हैं उनमें धैर्य और क्षमा भी भरपूर होता है।

6• साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है इस कथन पर अपने विचार लिखें।

उत्तर:- यह कथन बिल्कुल सत्य है कि साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। व्यक्ति यदि विनम्र है तो अपने किसी भी कार्य को सोच समझकर करता है। सूझबूझ से किया गया कार्य सराहनीय भी होता है। किंतु व्यक्ति अगर विनम्र नहीं है तो वह बात बात पर अपनी उद्दंडता दिखाता है। घमंड में अपनी बातों को बढ़-चढ़कर बोलता है। जैसा कि इस पाठ में परशुराम एवं लक्ष्मण दोनों ही करते हैं। हम देखते हैं कि दोनों में विनम्रता का अभाव है जिसके कारण उन दोनों में बहस छिड़ जाती है एक दूसरे को वह कुठार से भी कठोर वचन सुनाते हैं। साथ ही हंसी का पात्र भी बनते हैं। इस पाठ में लक्ष्मण और परशुराम के वचनों में हमें परशुराम के वचन अत्यंत कठोर लगते हैं जबकि लक्ष्मण के वचन कठोर होने पर भी हमें भले लगते हैं। फिर भी लक्ष्मण के वचन भी बाद में सारी सीमाएं तोड़ देता है और धीरे-धीरे उनमें भी उग्रता, कठोरता और उद्दंडता आ जाती है। इसी पाठ में एक और पात्र राम है जिनके यश पराक्रम और शक्ति को अभी-अभी शिव धनुष के टूटने पर सभी ने देखा है। उसी साहसी राम को विनम्रता पूर्वक परशुराम के साथ व्यवहार करते हुए भी देखा है। राम अपने शील पूर्ण व्यवहार के कारण ही सब का हृदय जीत लेते हैं। इसी तरह हमें भी अपने जीवन में साहस के साथ साथ नम्रता और धैर्य को भी अपने चरित्र में शामिल करना चाहिए।

7• भाव स्पष्ट कीजिए-

क• बिहसि लखनु बोले मृदु बानी।
अहो मुनीसु महाभट मानी ।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू।
चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।

उत्तर:- लक्ष्मण ने हंसकर कोमल वाणी में परशुराम से कहा - हे मुनिवर! आप तो बहुत बड़े योद्धा हैं। इसलिए बार-बार अपना फरसा मुझे दिखा रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि आप ऊँचे पहाड़ को अपनी फूँक से उड़ा दीजिएगा । अर्थात् इस स्थान पर आप एकमात्र ऐसे योद्धा हैं जिनमें वीरता कूट-कूट कर भरी है। इन बातों में लक्ष्मण परशुराम जी का गुणगान न करके उन पर व्यंग्य करते हैं कि आपकी वीरता दिखावटी एव खोखली है। उनमें कोई सच्चाई नहीं है यदि आप वास्तव में वीर होते तो आपको गरज- गरज कर अपनी वीरता का बखान नहीं करना पड़ता ।

ख•इहाँ कुम्हडबतिया कोउ नाहीं।
जे तरजनी देखि मरि जाहिं ।।
देखि कुठारु सरासन बाना।
मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।

उत्तर:- जब लक्ष्मण ने परशुराम जी के अत्यधिक अभिमान पूर्वक शब्द सुने तब उन्होंने उनका मजाक उड़ाते हुए कहा मुनेश्वर! यदि आप वास्तव में योद्धा हैं, तो हम भी कोई छुईमुई के फूल नहीं हैं जो तर्जनी को देखते ही मुरझा जाएंगे। यदि आप युद्ध करेंगे तो मैं सच कहता हूं कि आपको अभी तक मेरे जैसा योद्धा मिला नहीं होगा। परंतु आप यहां युद्ध के स्थान पर अपने अभिमान की व्याख्या कर रहे हैं ऐसा लगता है आप योद्धा नहीं ज्ञानी हैं। जब आप ज्ञानी हैं तो योद्धा का वेश क्यों बनाए हैं? आपको ढोंग की क्या आवश्यकता ? अर्थात् आप ज्ञानी -मुनि हैं, वीर -मुनि नहीं।

ग• गाधिसू नु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।

अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहूँ न बूझ अबूझ ।।

उत्तर:- परशुराम जी द्वारा अभिमान पूर्वक लक्ष्मण से संवाद करने पर विश्वामित्र मुनि हृदय में ही हँसकर कह रहे हैं। मुनि परशुराम को हरा ही हरा चारों ओर सूझ रहा है अर्थात् अत्यधिक विजय ने इनको अहंकारी बना दिया है इन्हें पता ही नहीं कि श्री राम लक्ष्मण कोई साधारण क्षत्रिय नहीं हैं । राम-लक्ष्मण लोहे के बने हुए खड़ग हैं, ऊख की बनी हुई खांड नहीं जो मुंह में लेते ही गल जाएंगे। यह बड़ी दुख की बात है

कि अहंकार के कारण परशुराम इनके पराक्रम को पहचान नहीं पा रहे हैं।

8• पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियां लिखिए।

उत्तरः- पठित पाठ राम लक्ष्मण परशुराम संवाद के आधार पर उनके भाषागत विशेषता निम्नलिखित हैं:-

1• यह रामचरितमानस के बाल कांड से लिया गया है।

2• जिसकी भाषा अवधि है।

3• तुलसीदास जी ने इसमें दोहा चौपाई छंद का सुंदर प्रयोग किया है।

4• दो चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम अत्यंत सुंदर है।

5• भाषा में व्यंग्यात्मक शैली का सुंदर प्रयोग है।

6• भाषा में अलंकारों का सुसज्जित प्रयोग है।

7• छंद में मात्राओं के बंधन का पूरी तरह निर्वाह हुआ है।

8• इन पदों को सुंदर से गाया जा सकता है क्योंकि इनमें गेयता के गुण विद्यमान हैं।

9• संवाद शैली का प्रयोग।

10• नाटकीयता का समावेश, ओज और वीर रस का समायोजन, भाषा विषय अनुरूप, अर्थ गंभीर युक्त भाषा के प्रयोग से काव्य में सुंदरता आई है।

9• इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः- रामचरितमानस के राम- लक्ष्मण- परशुराम -संवाद प्रसंग में मूल रूप से व्यंग्य का सुंदर प्रयोग है। व्यंग्य का आधार है वीर एवं वाकपटु लक्ष्मण। परशुराम के सामने जो एक छोटा सा बालक है। परशुराम जो मुनि है , ब्राह्मण है किंतु बहुत बड़बोले और घमंडी हैं। इसी कारण लक्ष्मण उनकी बातों का निर्भीक होकर जवाब देते हैं।ऐसे -ऐसे तर्क देते हैं जिससे परशुराम की बोलती बंद हो जाती है उनके अंदर और भी क्रोध बढ़ता जाता है।

जैसे ही शिव धनुष खंडित होता है वह सभा में अपने आप उपस्थित होते हैं ,और शिव धनुष तोड़ने वाले को मार डालने की घोषणा करते हैं। बताते हैं कि यह कोई साधारण धनुष नहीं था बल्कि शिवजी का धनुष था। यही बात लक्ष्मण सहन नहीं कर पाते हैं और विभिन्न प्रकार के तर्क देते हैं। कहते हैं कि हमने तो बचपन में बहुत सारे धनुष तोड़े हैं। पहले तो आप कभी गुस्सा नहीं हुए क्योंकि हमारी नजर में सारे धनुष एक समान हैं। लक्ष्मण के साहस को देखकर परशुराम कहते हैं अरे !बालक तुम मुझे जानता नहीं है मैं बाल ब्रह्मचारी, छत्रिय कुल द्रोही, सहस्त्रबाहु का संहारक हूं। लक्ष्मण फिर व्यंग्य करते हुए परशुराम को उत्तर देते हैं वाह मुनि! आप तो वास्तव में बहुत बड़े योद्धा हैं इसीलिए आपको अपनी महिमा कहनी पड़ रही है। लेकिन हम भी कोई छुईमुई के फूल नहीं हैं जो अंगुली दिखाने मात्र से ही हम मुरझा जाएंगे। लक्ष्मण की बातों से फिर क्रोधित होकर परशुराम विश्वामित्र की ओर इशारा करके कहते हैं कि विश्वामित्र बताओ कि मैं कौन हूं? मेरा गुस्सा कैसा है? मेरी महिमा इसे बताओ नहीं तो यह बालक मारा जाएगा। मुनि परशुराम की यह बात सुनकर लक्ष्मण फिर से कहते हैं कि मुनि आपसे बढ़कर आप की महिमा कौन बता सकता है ?अभी तक तो आपने अपनी इतनी सारी महिमा कही। इतने से भी आपका मन नहीं भरा तो और कहिए। जो वास्तव में वीर होते हैं वह युद्ध भूमि में अपनी वीरता दिखाते हैं न कि बखान करते हैं।परशुराम और अधिक चिढ़ जाते हैं और कहते हैं कि मैं अभी इस बालक को मारकर गुरु ऋण से उऋण हो जाता हूं। इस पर लक्ष्मण व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि हां हां क्यों नहीं माता-पिता का ऋण तो आप उतार ही चुके हैं।अब गुरु ऋण भारी पड़ रहा है उसे भी उतार लीजिए। ऋण उतारने में लंबा समय पड़ गया है, अगर ब्याज बढ़ गया है, तो बताइए, हिसाब किताब करने वाले को बुलाइए मैं अभी अपनी थैली खोलकर ऋण चुकाता हूँ। इस तरह से हम देखते हैं कि इस अंश में विभिन्न प्रकार के व्यंग्य भरे हुए हैं।

10• निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिएः-

क• बालकु बोलि बधौ नहि तोही।

उत्तरः- अनुप्रास अलंकार।

ख• कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।

उत्तरः- (सम - उपमा) उपमा एवं अनुप्रास अलंकार

ग• तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा।

बार-बार मोहि लागि बोलावा।।

उत्तरः- (बार - बार पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)

पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

घ• लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।

बढ़त देखि जल समान बचन बोले रघुकुल भानु।।

उत्तरः- (समान - उपमा) उपमा अलंकार।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1• परशुराम क्यों क्रुद्ध थे?

उत्तरः- परशुराम क्रुद्ध थे क्योंकि उनके गुरु शिवजी के धनुष को सीता स्वयंवर के दौरान श्रीराम ने तोड़ दिया था परशुराम इसे अपना तथा अपने गुरु का अपमान मान रहे थे।

2• राम ने क्रुद्ध परशुराम से क्या कहा? इससे उनकी कौन सी विशेषता उजागर होती है?

उत्तरः- राम ने क्रोधित परशुराम को शांत करते हुए कहा इस शिव धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई दास है। आप मुझे आज्ञा दें। मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूं। इससे यह पता चलता है कि राम विनयी और शांत स्वभाव के हैं।

3• परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन कौन से तर्क दिए हैं?

उत्तरः- लक्ष्मण ने परशुराम को व्यंग्य- भरे शब्दों में कहा मुनि जी हम तो सभी धनुष को एक -सा मानते हैं वैसे यह शिव धनुष तो काफी पुराना था। छूने मात्र से ही टूट गया यदि यह धनुष टूट ही गया है तो इससे क्या किसी को हानि या लाभ है।

4· किस कारण से लक्ष्मण क्रोध को रोककर परशुराम के वचनों को सहन कर रहे थे?

उत्तरः- लक्ष्मण परशुराम को ब्राह्मण जानकर अपने क्रोध रोके हुए हैं उनके कुल में ब्राह्मणों पर आघात नहीं किया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

1· जब विश्वामित्र ने लक्ष्मण का बीच बचाव करके परशुराम का गुस्सा शांत करने का प्रयास किया तो परशुराम ने क्या कहा?

उत्तरः- जब विश्वामित्र ने लक्ष्मण का बीच-बचाव करके परशुराम को शांत करने का प्रयास किया तो परशुराम फिर से अपनी ढींगे हाँकने लगे। वह कहने लगे मैं निर्मम क्रोधी मेरे हाथ में तेज धारदार फरसा हैं मैं अपने गुरु एवं उनके धनुष का अपमान करने वाले अपराधी को क्षमा नहीं कर सकता। यह बालक माफी मांगने के बजाय और बढ़ चढ़कर जवाब दिए जा रहा है। फिर भी मैं उसे बिना मारे छोड़ दूं। हे विश्वामित्र! मैं केवल आपके सुवचन एवं प्रेम के कारण लक्ष्मण को छोड़ रहा हूं वरना अब तक इसे अपने कठोर कुठार से काटकर गुरु का ऋण चुका देता।

2· राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद के आधार पर राम का चरित्र लिखें।

उत्तरः- राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद के आधार पर हमारे राम अत्यंत विनम्र मृदु एवं आज्ञाकारी हैं। परशुराम के क्रोध करने पर भी वे अत्यंत विनम्रता पूर्वक उत्तर देते हैं। इससे सिद्ध होता है कि उनके मन में बड़ों के प्रति श्रद्धा एवं आदर भाव है। फिर हम देखते हैं कि जब परशुराम एवं लक्ष्मण का संवाद अत्यंत उग्र होने जा रहा था तब राम लक्ष्मण को अपनी आंखों से इशारा करके चुप रहने का संकेत देते हैं। इससे राम के विनय भाव का पता चलता है। जो परिस्थिति को संभालने में सक्षम है अर्थात् वह एक कुशल नेतृत्व कर्ता भी है।

3· पाठ के आधार पर लक्ष्मण का चरित्र -चित्रण करें।

उत्तर- राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद के आधार पर लक्ष्मण का स्वभाव अधिक उग्र और प्रचंड है। उनकी जबान तीखी है। जब सभा में परशुराम अत्यंत उग्र होकर शिव धनुष को तोड़ने वाले को ढूंढ रहे थे। साथ ही अपना यश गान करने लगे थे कि मैं बड़ा क्रोधी हूँ। पृथ्वी को क्षत्रिय शून्य करके कई बार ब्राह्मणों को दान में देने वाला हूँ। शिव धनुष को तोड़ने वाला मेरे पराक्रम को नहीं जानता है। मैं उसे मार डालूंगा। तब ऐसे बड़बोले पन वाली बोली लक्ष्मण सह नहीं पाते हैं और अपने व्यंग्यपूर्ण बोली से परशुराम को जवाब देने लगते हैं। इससे पता चलता है कि लक्ष्मण अपने बड़े भाई के प्रति अत्यधिक लगाव रखते हैं। अत्यधिक स्नेह के कारण ही वे परशुराम के साथ भिड़ जाते हैं इससे स्पष्ट है कि वह भ्राता- प्रेमी एवं आज्ञाकारी अनुज हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

1· राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद पाठ के रचयिता हैं :-

क· कबीर दास ख· तुलसीदास
ग· मीराबाई घ· सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

उत्तरः- ख· तुलसीदास

2· राम लक्ष्मण परशुराम संवाद किस ग्रंथ का अंश है:-

क· रामायण ख· रामचरितमानस
ग· कवितावली ग· दोहावली

उत्तरः- ख· रामचरितमानस

3· शिव धनुष कैसे टूट गया?

क· जोर लगाने से ख· केवल छूने मात्र से
ग· गिरने से घ· उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः- ख· केवल छूने मात्र से

4· राम और लक्ष्मण 'सीता जी के स्वयंवर' में किस मुनि के साथ आए थे?

क· मुनि वशिष्ट ख· मुनि नारद
ग· विश्वामित्र घ· परशुराम

उत्तरः- ग· विश्वामित्र

5· राम का संबंध किस वंश से है?

क· सूर्यवंश ख· चंद्रवंश
ग· यदुवंश घ· हरिवंश

उत्तरः- क· सूर्यवंश

6· क्षत्रिय कुल द्रोही कौन हैं?

क· दशरथ ख· जनक
ग· परशुराम घ· राम

उत्तरः- ग· परशुराम

7· सहस्त्रबाहु सम सो रिपु मोराः- इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है-

क· अनुप्रास ख· रूपक
ग· मानवीकरण ग· उपमा

उत्तरः- क· अनुप्रास

8· शूरवीर को अपनी वीरता ------- में प्रदर्शित करनी चाहिए।

क· स्वयंवर के समय
ख· अपने को और उनसे बड़ा बताने के समय
ग· युद्ध भूमि में
घ· राजभवन में

उत्तरः- ग · युद्ध भूमि में

9· 'तुम तौ कालु हाँक जनु लावा' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

क· उपमा ख· उत्प्रेक्षा
ग· रूपक घ· श्लेष

उत्तरः- ख· उत्प्रेक्षा

10· 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में किस रस की प्रमुखता है:-

क· हास्य रस ख· करुण रस
ग· शांत रस घ· वीर रस

उत्तरः- घ· वीर रस

अध्याय 3 सवैया, कवित्त

- देव

कवि परिचय

देव (पूरा नाम देव दत्त द्विवेदी)

जन्म-1673 ई इटावा

गुरुः- श्री हित हरिवंश(वृंदावन)

राज आश्रय प्राप्त कवि, किंतु किसी भी राजा या नवाब के यहां अधिक समय तक नहीं रहे।

आश्रय दाता शासकः- आजमशाह, राजा सीताराम, कुशल सिंह, तथा राजा भोगीलाल आदि।

देव को अत्यधिक संतोष और सम्मान आश्रय दाता भोगीलाल से प्राप्त हुआ था। इन्होंने देव की कविता पर रीझ कर लाखों की संपत्ति दान में दी थी।

देहावसान :- सन 1767 ईस्वी।

रचनाः- उनके काव्य ग्रंथों की संख्या 52 से 72 तक मानी गई है।

प्रमुख ग्रंथः- रस विलास, भाव विलास, कुशल विलास, काव्य रसायन, सुजान विनोद, समिल विनोद, जय सिंह विनोद, प्रेमचंद्रिका, अष्टयाम, वैराग्य शतक, देव चरित्र, देव माया, भवानी विलास आदि।

रचना विशेषताः- देव की काव्य भाषा ब्रजभाषा है। इन्होंने मुक्तक शैली में रचनाएं की हैं। भाषा में माधुर्य के गुण विद्यमान हैं। अनुप्रास तथा यमक अलंकार उन्हें अत्यंत प्रिय रहे हैं। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है। भाषा एवं भाव दोनों दृष्टि से उनका काव्य श्रेष्ठ है। उन्होंने आचार्य एवं कवि दोनों कर्मों को निभाया।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

1• कवि ने 'श्री ब्रज दूल्ह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक क्यों कहा है?

उत्तरः- कवि ने ब्रज दूल्हा श्री कृष्ण के लिए प्रयुक्त किया है। उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक कहने के पीछे कवि का भाव है कि श्री कृष्ण के सौंदर्य की आभा सारे संसार को प्रभावित करती है। जिस प्रकार मंदिर का दीपक चारों ओर अपना उज्जवल प्रकाश बिखेर कर अंधकार दूर करता है वैसे ही श्रीकृष्ण भी अपनी सुंदरता से सभी के मन को हर लेते हैं तथा सभी के कष्टों को दूर करने वाले हैं।

2• पहले सवैये में से उन पंक्तियों को छांट कर लिखिए जिनमें अनुप्रास और रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ हैः-

उत्तर :- पहले सवैये में अनुप्रास और रूपक अलंकार युक्त पंक्तियां-

' जैसी- जग -मंदिर- दीपक सुंदर श्री ब्रज दूल्ह ' देव' सहाई।'

3• निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

पांयनि नूपुर मंजू बजे, कटि किंकिनि कै धूनि की मधुराई।

सांवरे अंग लसै पट पीत, हियै हुलस बन माल सुहाई।।

उत्तरः- काव्य की इन पंक्तियों में ब्रज के प्यारे दुलारे नंदलाल का सामंती रूप प्रस्तुत हुआ है। उनका रूप मनमोहक लग रहा है। कृष्ण के सांवले शरीर पर पीले रंग का वस्त्र है । गले में वन माल है। पांव में पाजेब और कमर में घुंघरू दार आभूषण है। उनकी यह मुद्रा नृत्य में लग रही है। ऐसा लग रहा है कि कृष्ण अभी नाचने वाले हैं।

- अनुप्रास अलंकार का प्रयोग इस तरह है कि शब्द ही नाचते और झनकते हुए प्रतीत हो रहे हैं।
- 'पायनि नूपुर मंजू बजै' में अनुप्रासिकता है। इन पंक्तियों का नाद सौंदर्य देखने योग्य है।
- 'कटि किंकिनि कै धुनि की' मे 'क' ध्वनि और 'न' की झंकार मिलकर ऐसे प्रतीत होते हैं।
- 'पट पीत' और 'हुलसै बन माल' में भी अनुप्रास है।
- भाषा कोमल मधुर और संगीतमय में है। सवैया छंद का माधुर्य मन को प्रभावित करता है।

4• दूसरे कवित के आधार पर स्पष्ट करें कि ऋतुराज वसंत के बाल रूप का वर्णन परंपरागत वसंत वर्णन से किस प्रकार भिन्न है।

उत्तरः- बसंत के परंपरागत वर्णन में हमेशा वसंत के युवा रूप का वर्णन दिखाई पड़ता है। जिसमें पूरी प्रकृति में यौवन का उन्माद झलकता है। जैसे फूलों का खिलना, ठंडी हवाओं का चलना, नायक- नायिका का परस्पर मिलना, झूले -झूलना, रूठना मनाना आदि होता था। परंतु यहां पर इस कविता में बसंत का नन्हे राजकुमार के समान वर्णन किया गया है। इसीलिए कवि ने शिशु को प्रसन्न करने वाले सारे उपकरणों को यहां जुटाए हैं। नवजात शिशु के लिए पालना, बिछौना, फूलों का झिंगुला, वायु को सेविका, मोर और तोते को झुनझुनी, कोयल को ताली बजाकर गाने वाली, परागकण को नजर से बचाने का सामान आदि दिखाया गया है। इस प्रकार यह वर्णन परंपरागत वसंत से भिन्न है।

5• 'प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै'- इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः- इस पंक्ति का भाव है कि- सवेरा स्वयं वसंत रूपी शिशु को जगाने के लिए फूलों का राजा गुलाब चुटकी बजाता है। आशय है कि वसंत ऋतु में प्रातः काल गुलाब के फूलों का खिलना बहुत प्यारा लगता है। ऐसा लगता है मानो कि यह वसंत ऋतु का स्वागत कर रहे हो।

6• चांदनी रात की सुंदरता को कवि ने किन किन रूपों में देखा है?

उत्तरः- चांदनी रात की सुंदरता को कवि ने निम्न रूपों में देखा है-

- चांद की फैली हुई दूधिया किरण कवि को आकाश में स्फटिक शिलाओं से बने मंदिर के रूप में दिखाई पड़ता है।
- फिर वही किरण दही के छलकते हुए समुद्र के रूप में भी दिखाई पड़ता है।

- फिर चांदनी की आभा ऐसी लग रही है मानो फर्श में दूध की झाग के रूप में फैली हो।
- फिर कवि की कल्पना विस्तारित होती है और वह चांदनी स्वच्छ शुभम दर्पण के रूप में प्रतीत होने लगती है।

7. 'प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताएं कि इनमें कौन सा अलंकार है।

उत्तरः- कवि इन पंक्तियों में प्यारी राधिका की सुंदरता और उज्ज्वलता का वर्णन कर रहे हैं। ये कहना चाहते हैं कि राधिका के सौंदर्य के सामने चांद का सौंदर्य बिल्कुल छोटा है। अर्थात् चांद का सौंदर्य राधिका की परछाई सी है। इसमें व्यतिरेक अलंकार है। व्यतिरेक में उपमान को अपने के सामने बहुत ही और तुच्छ दिखाया जाता है।

8. तीसरे कविता के आधार पर बताइए कि कवि ने चांदनी रात की उज्ज्वलता का वर्णन करने के लिए किन-किन उपमानों का प्रयोग किया है?

उत्तरः- कवि ने चांदनी रात की उज्ज्वलता दिखाने के लिए निम्नलिखित उपमानों का प्रयोग किया हैः-

1. स्फटिक शिला
2. सुधा मंदिर
3. उदधि दधि
4. दूध के झाग से बना फर्श
5. आरसी (दर्पण)
6. आभा
7. चंद्रमा।

9. पठित कविताओं के आधार पर कवि देव की काव्यगत विशेषताएं बताएं।

उत्तरः- पठित कविताओं के आधार पर कवि देव की निम्नलिखित विशेषताएं सामने आती हैंः-

क. कवि देव दरबारी कवि थे। उन्होंने विभिन्न आश्रय दाताओं के आश्रय में कविताएं लिखी। साथ ही उनको प्रसन्न करने के लिए दरबारी समाज के जगमगाते दृश्य का चित्रण किया। उन्होंने जीवन के दूसरे पक्ष दुख दर्द, अभाव तिरस्कार आदि का वर्णन नहीं किया है। हम देखते हैं कि उनकी कविताओं में वैभव विलास और सौंदर्य के चित्र खींचे पड़े हैं। तभी तो कृष्ण के ग्वाल बाल रूप का वर्णन नहीं बल्कि विभिन्न अलंकरण से अलंकृत एक दूल्हे के रूप में वर्णित किए गए हैं जिनकी मुद्रा भी नृत्यमयी है। अन्य दो कवितों में भी वसंत और चांदनी का राजसी वैभव विलास से भरा पूरा वर्णन दिखाया गया है।

ख. देव में कल्पना शक्ति का विलास देखने को मिलता है। वह नई-नई कल्पनाएं करते हैं। वृक्षों का पालना, पत्तों का बिछौना, फूलों का झिंगूला, वसंत को बालक, चांदनी रात को आकाश में बना सुधा मंदिर आदि कहना उनकी उर्वर कल्पना शक्ति का परिचायक है।

ग. देव ने सवैया और कविता छंदों का प्रयोग किया है। यह दोनों ही छंद वर्णिक है। छंद की कसौटी पर देव खरे उतरे हैं।

घ. देव की भाषा, संगीत, प्रवाह और लय की दृष्टि से बहुत मनोरम है।

ङ. देव अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि अलंकारों का सहज स्वाभाविक प्रयोग करते हैं।

च. उनकी भाषा में कोमल और मधुर शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1. कविवर देव का जन्म कब हुआ?

उत्तरः- सन 1673 इसवी।

2. कविवर देव का पूरा नाम क्या था?

उत्तरः- देवदत्त द्विवेदी।

3. कविवर देव के गुरु का नाम क्या था वह कहां रहते थे?

उत्तरः- श्री हित हरिवंश, वृंदावन।

4. उनके काव्य ग्रंथों की संख्या कितनी है?

उत्तरः- लगभग 52 से 72 तक।

5. उनका देहावसान कब हुआ?

उत्तरः- सन 1767 इसवी।

6. वह किस काल के कवि थे?

उत्तरः- रीतिकाल के।

7. उनको किस आश्रय दाता शासक से अधिक सम्मान मिला?

उत्तरः- भोगीलाल से।

8. कविवर देव ने किस शैली में रचना की?

उत्तरः- मुक्तक शैली में।

9. कविवर देव को कौन दो अलंकार अत्यंत प्रिय थे?

उत्तरः- अनुप्रास और यमक।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1. कविवर ने बसंत ऋतु की कल्पना किस रूप में की है?

उत्तरः- कविवर ने वसंत ऋतु की कल्पना छोटे शिशु के रूप में की है जो पेड़ के डाल के पलने पर पलना झूल रहा है। पत्तों का बिछोना लगा है। उस पेड़ पर खिले फूल झींगुले से प्रतीत हो रहे हैं। कोयल और मोर बोल कर मन बहला रहे हैं। परागकण नजर उतार रहे हैं और गुलाब की कली चुटकी दे रही है।

2. कवि पेड़ पत्ते और सुमन को किस रूप में देख रहे हैं?

उत्तरः-
- कवि पेड़ को और उसकी डालो को बसंत रूपी शिशु के सोने वाला पलने के रूप में देख रहे हैं।
- उसके नए नए पत्ते शिशु के लिए आरामदायक बिछड़ने सा लगता है।
- सुमन अर्थात् जो फूल है वह नक्काशी किए हुए झिंगुले सा लगते हैं।

3. कविता में पवन, मोर, तोते, कोयल कौन सी क्रिया कर रहे है?

उत्तरः- • कविता में पवन वसंत रूपी शिशु के पालने को झूला रही है।
• मोर और तोते मिलकर बसंत रूप शिशु के साथ बातें कर रहे हैं उसका मन बहला कर हर्ष मना रहे हैं
• कोयल वसंत रूपी शिशु के मन को प्रसन्न करने के लिए तालियां बजाती है।

4• पराग कणों को देखकर कवि के मन में क्या कल्पना आती है ?

उत्तरः- पराग कणों को देखकर कवि के मन में विचार आता है कि शायद वसंत रूपी शिशु की मां उसकी नजर उतारने के लिए फिर से राय और नोन (नमक) घुमा रही है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

1• कवि के द्वारा 'सुधा मंदिर' की जो कल्पना की गई है उसे अपने शब्दों में लिखें।

उत्तरः- कभी जब चांदनी रात को आकाश में चारों ओर फैले उजली चांदनी को देखते हैं तो उन्हें ऐसा लगता है मानो आकाश में कोई चांदी का महल बन गया हो। इसे ही मनोरम रूप में प्रस्तुत करने के लिए शायद कवि ने उसे 'सुधा -मंदिर' की उपमा दे दी है। सुधा अर्थात् अमृत कवि को मानो ऐसा लग रहा है कि आसमान से अमृत की वर्षा चारों ओर हो रही है और सभी प्राणी उसे प्राप्त कर आनंदित हो रहे हैं। इस तरह से चांदनी के प्रभाव की मधुरता को कवि ने प्रकट किया है।

2• कवि ने ब्रज दूल्हा के रूप में किसे प्रस्तुत किया है? उनके रूप का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तरः- कवि ने ब्रज दूल्हे के रूप में श्री कृष्ण का वर्णन किया है। कवि सामंती समाज से संबंध रखते थे इसलिए श्री कृष्ण का सामंती रूप जिसमें श्रृंगार के सारे संसाधन को प्रयोग में लाया है। सज धज कर कृष्ण का रूप सबसे सुंदर और सुसज्जित लग रहा है। वह ब्रज के दूल्हे के रूप में दिखाई पड़ रहे हैं। उनके पांव में पाजेब, कमर में घुंघरू दार करधनी। तन पर पीले वस्त्र गले में वनमाला और माथे पर मुकुट सुशोभित है। इस प्रकार से वह सजे धजे दूल्हे से प्रतीत हो रहे हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

1• प्रातः काल होने पर बालक रूपी बसंत को कौन जगाता है?

क• कौवा ख• मोर
ग• तोता घ• गुलाब

उत्तरः- घ •गुलाब

2• 'डार -द्रुम----- चटकरी दै' इस कविता की पंक्तियों में निहित रस का नाम लिखिए।

क• वात्सल्य रस ख• श्रृंगार रस
ग• भक्ति रस 'घ• शांत रस

उत्तरः-क• वात्सल्य रस

3• देव की कविता में फटिक का अर्थ है:-

क• फटना
ख• फैलना
ग• गले पड़ना
घ• स्फटिक(एक तरह का सफेद बहुमूल्य तथा पारदर्शी पत्थर)

उत्तरः- घ• स्फटिक (एक तरह का सफेद बहुमूल्य तथा पारदर्शी पत्थर)

4• कवि को कृष्ण के चेहरे पर फैली मुस्कान कैसी लग रही है?

क• फूल के समान न ख• चंचल मछली के समा समान
ग• चांदनी के समान घ• पवित्र जल के समान

उत्तरः- ग • चांदनी के समान।

5• 'पायनि नुपूर मंजू बजै' सवये में कृष्ण का कैसा वर्णन है?

क• सामंती वैभव का ख• अलौकिक रूप का
ग• साधारण बाल रूप का घ• चमत्कारी रूप का

उत्तरः- क• सामंती वैभव का।

6• राधा में कौन सी फूल की सुगंध मिली हुई है?

क• मल्लिका ख• चमेली
ग• चंपा घ• गुलाब

उत्तरः- क• मल्लिका

7• बालक रूपी बसंत की नजर कौन उतार रही है?

क• कोयल ख• कंजकली
ग• लता घ• गुलाब की पत्तियां

उत्तरः- ख• कंजकली

8• बालक रूपी बसंत के शरीर पर कैसा झबला है?

क• ऊनी ख• सूती
ग• फूलों का झबला घ• पत्तों का झबला

उत्तरः- ग• फूलों का झबला

9. कृष्ण किस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं?

क• चंद्रमा की तरह ख• सूर्य की तरह
ग• तारा गणों की तरह घ• वस्त्र आभूषणों युक्त होकर

उत्तरः- घ• वस्त्र आभूषणों से युक्त होकर।

10• कवि ने कृष्ण के किस रूप का वर्णन किया है ?

क• राजसी ख• वैरागी
ग• सामाजिक घ• पारिवारिक

उत्तरः- क• राजसी

अध्याय 4	1. उत्साह 2. अट नहीं रही है - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

प्र 1. कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तरः- कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म वसंत पंचमी के दिन सन 1899 ईस्वी में बंगाल राज्य के मेदिनीपुर जिला के महिषादल में हुआ । वह मूलतः उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला के निवासी थे। उनकी प्रारंभिक एवं स्कूली शिक्षा 9वीं तक ही हुई परंतु स्वाध्याय से हिंदी के अलावा बांग्ला, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अर्जित किया। उनके माता-पिता के असामयिक निधन होने के कारण उनका जीवन बहुत ही कष्टमय में रहा। उनकी बेटी सरोज की मृत्यु 16 वर्ष की उम्र में ही हो गई थी। इस प्रकार उनका जीवन बहुत ही संघर्षों से बीता। उनकी मृत्यु सन 1961 में हो गई।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएं हैं- अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते आदि हैं। इसके अलावा उपन्यास ,कहानी, आलोचना, निबंध आदि की रचनाओं में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। इनकी संपूर्ण रचनाएं" निराला रचनावली "के 8 खंडों में प्रकाशित है। इनकी रचनाओं में उच्च वर्ग के प्रति विद्रोह एवं निम्न वर्ग, गरीबों के प्रति सहानुभूति की भावना स्पष्ट रूप से नजर आती है।

प्र 2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविताएं उत्साह एवं अट नहीं रही है का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तरः- **उत्साहः**-कविता "उत्साह "बादल को संबोधित करते हुए एक आह्वान गीत है। कवि निराला प्रकृति एवं धरती में बड़े बदलाव के लिए बादल को बुलाते हैं। अत्यधिक गर्मी से तपती धरती में रहने वाले मनुष्य एवं सभी प्रकार के जीव जंतु, वनस्पति आदि सभी व्याकुल हैं जिससे उनका जीना मुश्किल हो गया है, धरती सूख रही है इसलिए आकाश में छाए बादल को गरजने के साथ-साथ जोर से बरसना ही होगा , तब गर्मी से बेहाल धरती एवं धरती में रहने वाले जीवों को राहत मिलेगी ।कवि बादल को गर्जन_ तर्जन के साथ बरसने को कह रहा है ताकि लोगों में,प्रकृति और धरती में जोश भर जाए और सभी जीवों में आशा और उम्मीद जगे। बादल आशा और उम्मीद के साथ-साथ नवजीवन का भी प्रतीक है इसलिए प्रकृति में बड़े बदलाव एवं क्रांति के लिए कवि बादल को बुला रहे हैं ।

अट नहीं रही हैः- "अट नहीं रही है" कविता फागुन मास की मादकता एवं सौंदर्य को अभिव्यक्त करने वाली कविता है ।कवि कहता है कि फागुन के सौंदर्य से प्रकृति इतनी सुंदर हो गई है कि लोगों के मन और तन में समा नहीं रही है। कवि प्रकृति को मानव के रूप में व्याख्या(मानवीकरण) करता हुआ कहता है कि तुम्हारी शोभा और नशा में डूबा देने वाला रस इतना अधिक है कि जब तुम (फागुन का महीना) सांस लेते हो, तो तुम्हारा प्रभाव अथवा सौंदर्य पूरी धरती पर इतना फैल जाता है कि व्यक्ति और पूरी धरती में समा नहीं पाती है ।धरती के सभी कोणों में पेड़ पौधों और वनस्पतियों में नई-नई कोंपले आने लगती है, इसके साथ साथ साल और पलाश की फूल फूलने लगते हैं। यही कारण है कि पूरी प्रकृति दुल्हन के जैसी सुंदर और सजी हुई लगती है और इसके सुगंध सभी कोनों में फैल जाती हैं । फलस्वरूप धरती पर समा नहीं पाती है। कवि कहता है कि जब तुम सांस लेते हो तो घर भर जाता है और व्यक्ति के अंदर बाहर समा नहीं पाता है। इस कविता में कवि ने फागुन मास की सौंदर्य की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति की है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

1 "उत्साह" कविता के कवि कौन हैं?

क. जयशंकर प्रसाद
ख. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
ग. नागार्जुन
घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तरः-ख . सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।

2. "उत्साह "कविता में कवि ने किसको संबोधित किया है?

क. बिजली को　　ख. धरती को
ग. आकाश को　　घ. बादल को

उत्तरः- घ. बादल को।

3. "उत्साह" कविता में कवि ने बादल की तुलना किससे की है?

क. धरती से　　ख. आकाश से
ग. कवि से　　घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तरः- ग. कवि से।

4. कवि बादल को कैसे बरसने के लिए कह रहा है?

क. गर्जन के साथ　　ख. पत्थर के साथ
ग. बिना गर्जन के साथ　　घ. धीरे-धीरे

उत्तरः- क. गर्जन के साथ

5. "उत्साह "कविता में सम्मिलित शब्द "गगन "का पर्यायवाची शब्द क्या होगा?

क. आकाश　　ख. धरती
ग. पाताल　　घ बादल

उत्तरः- क. आकाश।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1. कवि किस को गरजने के लिए कह रहा है

उत्तरः- बादल को।

2. कवि बादल को गरज कर बरस ने के लिए क्यों कह रहा है?

उत्तरः- बड़े बदलाव के लिए अथवा क्रांति के लिए।

3. कवि ने कविता में ललित_ ललित किसे कहा है?

उत्तरः- बादल को।

4. धरती के लोग विकल -विकल क्यों है?

उत्तरः- अत्यधिक गर्मी के कारण।

5. बादल के बरसने के बाद धरती पर क्या परिवर्तन आ जाता है?

उत्तरः- धरती पर शीतलता छा जाती है।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. कवि बादल को गरज कर बरसने के लिए क्यों कह रहा है?

उत्तरः- कवि धरती पर बड़ा बदलाव चाहता है। इसके अलावा व्यक्ति अथवा अन्य जीवों में उत्साह, उमंग और जोश भी भरना चाहता है इसलिए कवि बादल को गरज कर बरसने के लिए कह रहा है।

प्र 2. कवि बादल के बहाने किस में उत्साह भरना चाहता है?

उत्तरः- कवि बादल के बहाने सभी जन जीवन में उत्साह भरना चाहता है ,जो अत्यधिक तापमान से व्याकुल परेशान हैं, जिनमें जीवन के प्रति हताशा और निराशा छाई हुई है। अत्यधिक ताप से पेड़ पौधे, वनस्पतियां मुरझाने, सूखने लगे हैं उनमें उत्साह और जोश भरना चाहता है।

प्र 3. बादल और उत्साह शब्द एक दूसरे के पूरक कैसे हैं?

उत्तरः- आकाश में बादल छाना आशा और उम्मीद को जगाता है।उन जीवों में ,जो असहनीय गर्मी से परेशान हैं। अत्यधिक तापमान से व्याकुल जीवन की आखिरी उम्मीद की आस में हैं। जब तप्त धरती को बरसात का पानी मिल जाता है तो उनमें उम्मीद जगती है और जीवन में जीने के प्रति जोश और उत्साह बढ़ता है ।अतः बादल और उत्साह दोनों एक दूसरे के पूरक शब्द हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र 1. उत्साह कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें।

उत्तरः- कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविता "उत्साह"बादल को संबोधित है। अत्यधिक गर्मी में तपती धरा और प्रकृति, निराशा और हताशा के आगोश में है। कवि बादल को गर्जन के साथ बुला रहा है ताकि निराशा के वातावरण में जन और अन्य जीवो में, प्रकृति में उत्साह और जोश भर सके ।कवि बादल की तुलना कवि से भी करता है। जिस प्रकार कवि अपनी नूतन कविता से, नई कल्पना, नया जोश भरता है, वैसे ही बादल के बरसने के बाद पूरी धरा में जीवों में नया जीवन और उत्साह का संचार होता है। कवि को इस बात का एहसास है कि अत्यधिक गर्मी होने के कारण पेड़-पौधों ,वनस्पतियां और आमजन व्याकुल हैं ।किसानों के फसल सूख रहे हैं, वनस्पतियां, पेड़-पौधे मुरझा रहे हैं। आम लोगों को गर्मी से जीना मुश्किल हो गया है। ऐसी स्थिति में बादल गर्जन के साथ बरस कर पूरी धरती में आमूलचूल परिवर्तन कर दें।कवि को बादल का गर्जना पसंद है क्योंकि बादल का गरजना उत्साह और जोश भरना है। कवि का आशय है कि धरती के सब लोग गर्मी से त्रस्त हैं, उन सब में जीवन और जोश भरने के लिए जोरदार बारिश की आवश्यकता है ताकि धरती पर बड़े पैमाने पर बदलाव हो ,सके क्रांति हो सके।

प्र 2. कवि के अनुसार बादल को गर्जन के साथ बरसना क्यों जरूरी है?

उत्तरः- कवि के अनुसार बादल को केवल बरसना भर नहीं है बल्कि बरसने के साथ-साथ गर्जना भी जरूरी है क्योंकि अत्यधिक ताप के कारण व्यक्ति के साथ वन - जंगल, पेड़ - पौधे ,वनस्पतियां एवं अन्य जीव जीवन के प्रति उत्साह और उमंग खो चुके हैं, उनमें जीने की आशा और उम्मीद क्षीण होती जा रही है। ऐसे समय में बादल का आना और बरसना ही आखिरी उम्मीद है लेकिन कवि बादल को सामान्य रूप से,सहज तरीके से बरसने के लिए नहीं बुला रहा है बल्कि आखिरी उम्मीद की आस में आंखें गड़ाए जनजीवन पहले की तरह पूरी उम्मीद, उत्साह और जोश के साथ जीवन में नया रंग भर सके। इसलिए बरसने के साथ-साथ गरजना भी जरूरी है। कवि की मान्यता है कि बड़ी क्रांति के लिए बड़े बदलाव के लिए जोरदार बारिश होनी ही चाहिए।

पाठ्यपुस्तक के आधार पर उत्साह कविता का प्रश्न उत्तर-

प्र 1. कवि बादल से फुहार ,रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है ,क्यों?

उत्तरः- कवि बादल को संपूर्ण क्रांति का पर्याय मानता है उसे इस बात का एहसास है कि अत्यधिक गर्मी होने के कारण संपूर्ण जगत के लोग एवं अन्य जीव अपने जीवन के प्रति आशा और उम्मीद खो चुके हैं, इसके लिए सामान्य रूप से बादल का बरसना काफी नहीं है इसलिए कवि बादल से बरसने के साथ-साथ गरजने के लिए भी कहता है।

प्र 2. कविता का शीर्षक "उत्साह "क्यों रखा गया है?

उत्तरः- अत्यधिक तापमान के कारण धरती के सभी जीव जंतु त्रस्त हैं ,उनमें जीवन के प्रति आशा ,उत्साह और उमंग खत्म-सा हो गया है। उनके जीवन में फिर से पहले जैसे उमंग और उत्साह भरने के लिए बारिश का होना जरूरी है । चूंकि उत्साह कविता बादल को संबोधित है अतः कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

प्र 3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तरः- बादल संपूर्ण जीवों के जीवन का प्रतीक है। बादल से बारिश होती हैं और सभी जीवों को जीने का आधार मिलता है प्रस्तुत कविता में कवि ने बादल कविता के माध्यम से जीवन प्रदायिनी शक्ति के रूप में बादल का वर्णन किया है। इसके साथ-साथ बादल जीवों में उत्साह और उमंग भरने वाली शक्ति भी है। कवि इसमें गर्जन के साथ बरसने की बात कहता है। इसलिए बादल संघर्ष का भी प्रतीक बनकर उभरा है।

प्र 4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद सौंदर्य कहलाता है ।उत्साह कविता में ऐसे कौन से शब्द हैं, जिनमें नाद- सौंदर्य मौजूद है, छांट कर लिखें।

उत्तरः- कविता के निम्नलिखित शब्दों में नाद सौंदर्य मौजूद हैं-

घेर-घेर, घोर गगन ।

ललित-ललित, काले घुंघराले

बाल कल्पना के से पाले।

विकल-विकल, उन्मन थे उन्मन।

"अट नहीं रही है" कविता का प्रश्न उत्तर

प्र 1. "अट नहीं रही है "कविता का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तरः- अट नहीं रही है, कविता फागुन मास की मादकता एवं सौंदर्य को अभिव्यक्त करने वाली कविता है। कवि कहता है कि फागुन के सौंदर्य से प्रकृति इतनी सुंदर हो गयी है कि लोगों के मन और तन में समा नही रही है। कवि प्रकृति का मानव के रूप में व्याख्या (मानवीकरण) करता हुआ कहता है कि नशा में डुबो देने वाला रस अथवा प्रभाव इतना ज्यादा है कि जब तुम सांस लेते हो तो तुम्हारा प्रभाव अथवा सौंदर्य पूरी धरती पर इतना फैल जाता है कि व्यक्ति और पूरी धरती में समा नहीं पाती है। इस मौसम में धरती के कोने कोने में पेड़-पौधों और वनस्पति में नई-नई कपोलें आने लगती हैं, साथ-साथ धरती पर पलाश और साल के फूल खिलने लगते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

प्र 1. "अट नहीं रही है" कविता के कवि निम्न में से कौन है?

क. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
ख. नागार्जुन
ग. जयशंकर प्रसाद
घ. ऋतुराज

उत्तरः- क .सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।

प्र 2. "अट नहीं रही है" कविता के अनुसार क्या अट नहीं रही है?

क. फागुन का सौंदर्य   ख. बारिश का सौंदर्य
ग. गर्मी का सौंदर्य   घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तरः- क .फागुन का सौंदर्य।

प्र 3. कवि के अनुसार कौन सांस लेता है ,तो घर भर जाता है?

क. कवि   ख. लेखक
ग. फागुन   घ. धरती

उत्तरः- ग. फागुन ।

प्र 4. फागुन के आभा से कौन पट नहीं रही है?

क. धरती   ख. आकाश
ग. मैदान   घ. पताल।

उत्तरः- क. धरती ।

प्र 5. कविता के निम्नलिखित में से किस वाक्य में मानवीकरण अलंकार है?_

क. अट नहीं रही है।   ख. पट नहीं रही है।
ग. सट नहीं रही है ।   घ. कहीं सांस लेते हो।

उत्तरः- घ. कहीं सांस लेते हो।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. "अट नहीं रही है" कविता के कवि कौन है?

उत्तरः- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।

प्र2. कविता में कौन सांस लेता है?

उत्तरः- फागुन।

प्र 3. फागुन के प्रभाव से कौन आंख हटा रहा है?

उत्तरः- कवि ।

प्र4. फागुन के मौसम में किस फूल का रंग लाल होता है?

उत्तरः- पलाश फूल का रंग लाल होता है।

प्र 5. कवि को आकाश में उड़ने के लिए कौन पंख दे देता है?

उत्तरः- फागुन का महीना।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. फागुन मास में कवि और वातावरण में क्या प्रभाव हो रहा है?

उत्तरः- फागुन मास का सौंदर्य कवि और वातावरण में समा नहीं रहा है। यही कारण है कि पूरा वातावरण फागुन मास की आभा और खुशबू से भर जा रहा है। पूरी प्रकृति दुल्हन की तरह सज-संवर कर धरती पर सर्वत्र अपना सौंदर्य बिखेर रही है । पूरी धरती फागुन मास के प्रभाव से अत्यधिक सुगंधित हो गई है। यही प्रभाव कवि पर भी है।

प्र 2. फागुन मास में प्रकृति में क्या परिवर्तन दिखने लगते हैं?

उत्तरः- फागुन मास में प्रकृति अपने सर्वोत्तम रूप में होती है । पेड़-पौधों से पुराने पत्ते झड़ कर नए-नए और कोमल पत्ते निकलने लगते हैं। कहीं पलाश के फूल खिलने लगते हैं तो कहीं साल के पत्ते निकलने लगते हैं और फूलने लगते हैं, पूरा वातावरण सरई फूल और पलाश के फूलों से सफेद-लाल रंग से पट जाता है।

प्र 3. फागुन का मौसम अन्य मौसम से कैसे भिन्न होता है?

उत्तरः- फागुन का मौसम अन्य मौसम से भिन्न होता है ।जहां गर्मी के मौसम में पूरा वातावरण उदास और निराश दिखता है, वही शरद ऋतु में मौसम सिकुड़ा हुआ-सा प्रतीत होता है। गर्मी के मौसम में बादल और बारिश का इंतजार करता प्रतीत होता है। वही ठंड में प्रकृति अपने रूप-सौंदर्य को पूर्णता फैला नहीं पाती है। इन सबके विपरीत फागुन के मौसम में प्रकृति खिली-खिली रहती है , वह अपने सर्वोत्तम रूप में रहती हैं।

प्र 4. प्रस्तुत कविता के आधार पर फागुन मास के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तरः- फागुन मास में धरती पर सर्वत्र निखार आ गया है एवं फागुन की सुगंध धरती पर जगह जगह फैल गई है। फागुन के सौंदर्य का प्रभाव कवि और अन्य लोगों पर इतना ज्यादा हो रहा है कि तन और मन में समा नही रहा है। मन इतना खुश और उत्साहित है कि आकाश में उड़ने के लिए पंख लग गए। कहीं पेड़ पत्तों से लदी है तो कहीं हरे लाल, सफेद रंगों से सजी-संवरी लग रही है । फागुन का रूप सौंदर्य लोगों में नया उमंग और उत्साह भर रहा है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र 1. "अट नहीं रही है" कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें।

उत्तरः- कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविता "अट नहीं रही है",प्रकृति के सौंदर्य का सर्वोत्तम बयान है ।इसमें कवि ने फागुन मास अर्थात् वसंत ऋतु के सौंदर्य का वर्णन किया है। वसंत ऋतु का प्रभाव कवि पर अत्यधिक पड़ा है।

कवि कहता है कि फागुन की आभा मन और हृदय में अट नहीं रही है।पूरी धरती पर इसका सुगंध भर गया है ,जिसके कारण सभी लोगों का घर इसकी सुगंध से भर गया है।कवि फागुन का मानवीकरण करता हुआ कहता है कि जब तुम सांस लेते हो तो धरती पर सर्वत्र तुम्हारी आभा भर जाती है ,तुम्हारे सुगंध से मन इतना भर जाता है कि मन आकाश में उड़ने के लिए उतावला हो जाता है ।तुम्हारी शोभा इतनी आकर्षक और मनमोहक है कि कवि आंख उठाता है तो नजर हटती ही नहीं है । कवि कहता है कि फागुन मास में पेड़-पौधों में नई-नई कोपले ,नए नए पत्ते लगने लगते हैं। कहीं-कहीं पेड़-पौधों हरे पत्तों एवं फूलों से लदी दिखती है।यही कारण है कि व्यक्ति के हृदय में फागुन का सुगंध उतरने लगता है और पूरी धरती को भी अपनी सुगंध से पाट देती है। कवि ने इस कविता में फागुन मास के मनमोहक और आकर्षक सौंदर्य का वर्णन किया है।

प्र 2. फागुन के मौसम में प्रकृति दुल्हन सी सजी रहती है, स्पष्ट करें।

उत्तरः- फागुन का महीना प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है। यह वह मौसम है ,जब प्रकृति और पूरी धरा दुल्हन की तरह सजी-संवरी रहती है ।धरती के चारों तरफ पेड़-पौधे, वनस्पतियां हरी-भरी रहती है। पेड़-पौधों के नए-नए पत्ते ऐसे लगती है,जैसे पेड़-पौधे एवं जंगल ने नया वस्त्र धारण कर लिया हो,जंगलों में पलाश के नए-नए पत्ते और लाल-लाल पलाश फूल बहुत आकर्षक लगते हैं ।इसके अलावा सरई के सफेद फूल ऐसे लगते हैं, मानो सफेद रंग की साड़ी पहनी हो।इसी मौसम में किसानों के खेतों में लहलहाते मटर के खेत और सरसों के फूल ऐसे सजी रहते हैं ,जैसे धरा श्रृंगार करके लोगों को रिझा रही हो।ऐसे समय में प्रकृति के सभी रूप अपने सर्वोत्तम निखार में रहती है।

<u>पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर</u>

प्र 1. छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन के भाव का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।

उत्तरः- निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि ने अंतर्मन के भाव को बाहरी दुनिया से जोड़ने का प्रयास किया है_

क. आभा फागुन की तन सट नहीं रही है ।

ख. उड़ने को नभ में तुम पर पर कर देते हो।

प्र 2. कवि की आंख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तरः- फागुन का सौंदर्य अत्यधिक आकर्षक होता है। पेड़ और पौधों में नई-नई पत्तियां, नए-नए फूल लगे रहते हैं,चारों तरफ धरती में प्रकृति का सुंदर रूप नजर आता है । यही कारण है कि कवि इसके रूप सौंदर्य से मोहित हो गया है और उसकी सुंदरता से कवि की आंख हट नहीं रही है।

प्र 3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है?

उत्तरः- कवि निराला को फागुन का मास अत्यंत सुंदर लगता है। उन्होंने प्रकृति की सौंदर्य की व्यापकता का वर्णन कई रूपों में किया है । कवि कहता है कि ,जब तुम सांस लेते हो, तो घर भर जाता है अर्थात् मौसम के सौंदर्य का प्रभाव इतना ज्यादा है कि पूरा वातावरण सुगंध से भर जाता है ।उन्होंने एक जगह लिखा है कि उड़ने को पर-पर कर देते हो अर्थात् फागुन का प्रभाव कवि और अन्य लोगों में इतना हो गया है कि मन प्रफुल्लित होकर आकाश में उड़ने लगता है, उनका मन कहीं एक जगह स्थिर नहीं होता बल्कि प्रकृति के चारों दिशाओं के रूप सौंदर्य को निहारने के लिए प्रतिपल यहां वहां भटकते रहता है। यह कहा जा सकता है कि धरती पर सर्वत्र फागुन मास की शोभा स्पष्ट नजर आने लगती है।

प्र 4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तरः-फागुन का मौसम बहुत ही अच्छा और सुहावना होता है। यह ऐसा मौसम है, जब प्रकृति अपने सुंदरतम रूप में होती है। जगह_ जगह फूल खिले होते हैं, पेड़ पौधों में पुराने पत्ते झड़ कर नए पत्ते निकलने लगते हैं, धरती में सर्वत्र फूल खिले हुए रहते हैं। ऐसा सौंदर्य अन्य ऋतुओं में दिखाई नहीं देता है।

प्र 5. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य शिल्प की विशेषताएं लिखिए।

उत्तरः- कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद के चार आधार स्तंभ में से एक हैं, इन दोनों कविताओं में भी छायावाद के कुछ विशेषताएं स्पष्ट नजर आते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

क. प्रकृति चित्रण- चूंकि कविता" अट नहीं रही है" पूर्णता प्रकृति पर आधारित है ,इसमें कवि ने प्रकृति के सुंदरतम रूप का बखान किया है।घर भर देते हो, कह कर कवि ने प्रकृति के उत्कर्ष की व्याख्या की है।

ख. मानवीकरण- कवि ने "उत्साह" कविता में ललित-ललित काले घुंघराले एवं अट नहीं रही है" कविता में "जब तुम सांस लेते हो "कह कर प्रकृति का मानवीकरण किया है।

ग. गीति शैली-निराला के काव्य की एक और विशेषता है वह है, कविता की गीतात्मकता, जो इस कविता में स्पष्ट नजर आती है।

घ. प्रकृति से अपने अंतर्मन को मिलाना-छायावादी काव्य की एक अन्य विशेषताएं हैं अपने अंतर्मन को कविता के साथ जोड़ना । कवि ने "पर-पर कर देते हो" कह कर प्रकृति के साथ अपने अंतर्मन को जोड़ने का प्रयास किया है।

अध्याय 5 | 1. यह दंतुरित मुसकान 2. फसल

- नागार्जुन

प्र 1. कवि नागार्जुन का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तरः- कवि नागार्जुन का जन्म 1911 ईसवी में बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा गांव में हुआ । उनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था । आरंभिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में हुई। फिर आगे की पढ़ाई के लिए बनारस और कोलकाता भी गए । वे सन 1936 ईस्वी में श्रीलंका गए और बौद्ध धर्म की दीक्षा प्राप्त करने के बाद सन 1938 ईस्वी में पुनःस्वदेश लौट गए । घुमक्कड़ और अक्खड़ स्वभाव के कवि कई बार संपूर्ण भारत की यात्रा की। सन 1998 ईस्वी में उनका निधन हो गया।

प्रमुख काव्य कृतियां_युग धारा, सतरंगी पंखों वाली, हजार हजार बाहों वाली, तुमने कहा था, मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा, आदि इनकी प्रमुख काव्य कृतियां है । इन्होंने उपन्यास और अन्य गद्य विधाओं में भी रचनाएं की है इनकी संपूर्ण रचनाएं "नागार्जुन रचनावली" के सात खंडों में प्रकाशित है । कवि नागार्जुन मैथिली भाषा में भी "यात्री" नाम से लिखा करते थे। इन्हें हिंदी अकादमी पुरस्कार, दिल्ली का शिखर सम्मान, उत्तर प्रदेश का भारत भारती पुरस्कार एवं बिहार का राजेंद्र प्रसाद पुरस्कार आदि सम्मान से सम्मानित किया गया है।

प्र 2. यह दंतुरित मुसकान कविता का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तरः- कवि नागार्जुन द्वारा रचित कविता यह दंतुरित मुसकान एक छोटे बच्चे के मनोहारी और मोहक रूप को अभिव्यक्त करने वाली कविता है । कवि ने छोटे बच्चे के आकर्षक सौंदर्य का प्रकटन विभिन्न बिंबो के माध्यम से किया है ।कवि का मानना है कि छोटे बच्चे का होना ही जीवन को एक नया अर्थ देता है। जब बच्चा हंसता, खेलता और स्वाभाविक छवि दिखाता है तो जीवन की सभी हताशा,निराशा और कठिनाइयां दूर हो जाती है ,जीवन में जीने की उमंग और ललक बढ़ जाती है, लगता है जैसे जीवन में फूल खिल गए हैं ।कवि को इस बात का एहसास है कि उनके जीवन में बच्चे का होना उनकी मां के कारण संभव हो पाया है ।बच्चे भगवान की देन है, ऐसा माना जाता है इसलिए वह अपने साथ-साथ अपनी पत्नी अर्थात् बच्चे की मां का भी धन्यवाद करता है। कुल मिलाकर इस कविता में बच्चे के होने से जीवन पर पड़ने वाले सभी प्रकार के सकारात्मक प्रभाव का वर्णन किया गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

प्र 1. यह दंतुरित मुस्कान कविता के कवि कौन है?

क. नागार्जुन
ख. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
ग. महादेवी वर्मा
घ. गिरिजाकुमार माथुर

उत्तरः- क. नागार्जुन ।

प्र 2. इस कविता में व्याख्या का केंद्र बिंदु कौन है?

क. कवि
ख. मां
ग. बच्चा
घ. युवक

उत्तरः- ग. बच्चा

प्र 3. कवि मैथिली भाषा मे किस नाम से लिखा करते थे?

क. लेखक
ख. कवि
ग. यात्री
घ. पथिक

उत्तरः- ग. यात्री

प्र 4. किसकी मुस्कान देखकर हताश और निराश व्यक्ति में आशा का संचार हो जाता है?

क. युवक का मुस्कान देखकर
ख. युवती की मुस्कान देखकर
ग. मां की मुस्कान देखकर
घ. बच्चे की मुस्कान देखकर।

उत्तरः- घ. बच्चे की मुस्कान देखकर।

प्र 5. मृतक मे भी डाल देगी जान, का क्या अर्थ है?

क. मरे हुए को जिंदा कर देना।
ख. हारे हुए को जीता देना।
ग. हताश और निराश व्यक्ति में खुशी ला देना।
घ. मां-बाप का काम आसान कर देना।

उत्तरः- ग. हताश और निराश व्यक्ति में खुशी ला देना।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. कवि को ऐसा क्यों लगता है कि उसकी झोपड़ी में कमल खिल गया है?

उत्तरः- बच्चे की मोहक मुस्कान कवि को अत्यधिक खुशी देती है ।उनके जीवन में ऊर्जा एवं उत्साह का संचार होने लगता है ।यही कारण है कि बच्चे की मुस्कान कवि को कमल फूल के समान लगता है।

प्र 2. मधुपर्क क्या होता है ?

उत्तरः- मधुपर्क अर्थात् दही, घी, शहद, जल और दूध का योग जो देवता और अतिथि के सामने रखा जाता है। आम लोग इसे पंचामृत कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग बच्चे को जीवन देने वाला आत्मीयता की मिठास से युक्त माँ के प्यार के रूप में हुआ है।

प्र 3. बच्चा कवि से पहली ही बार में परिचित क्यों नहीं हो सका?

उत्तरः- कवि अक्सर घर परिवार से बाहर ही रहा करता था । वह कई दिनों के बाद अथवा कई महीनों के बाद घर आता था, इसलिए पहली बार मिलने के कारण कवि बच्चे के लिए अपरिचित - सा लगता है।

प्र 4. कवि ने बच्चे से क्यों आंखें फेर लेने की बात कही?

उत्तरः- कवि और बच्चा जब पहली बार मिलते हैं तो बच्चा कवि को टकटकी लगाकर देखने लगता है। यह क्रम कुछ समय तक चलते रहता है । बच्चे की आंख थक ना जाए इसलिए कवि बच्चे से आंखें फेर लेने की बात कहता है।

प्र 5. बच्चे की मुस्कान कैसे पाषाण हृदय **वाले व्यक्ति का** हृदय **पिघलाकर जल बना देता है?**

उत्तर:- बच्चे स्वभाव से अबोध होते हैं, उन्हें झूठ सच, अच्छे बुरे से कोई मतलब नहीं होता है। जब वह मां-बाप से मिलकर मासूम- सी हंसी हंस देता है, हंसी इतनी मनोहारी होती है कि किसी भी पाषाण हृदय वाले व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कर देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र 1. पाठ के आधार पर बच्चे का रूप सौंदर्य अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर:- बच्चे का दर्शन पाकर ही कवि के जीवन में सकारात्मकता का संचार होने लगता है । कवि को जीने का नया आधार मिल गया है । उन्हें बच्चे की मोहक मुस्कान देखकर ऐसा लगता है मानो उसकी झोपड़ी में कमल का फूल खिल गया हो ।उसका धूल से सना हुआ शरीर और सुंदर लगता है । कवि को लगता है कि बच्चे के संपर्क में आने से ही निराश और हताश व्यक्ति में ऊर्जा का संचार होने लगता है । उन्हें लगता है कि बच्चे के संपर्क में आने से उसके जीवन में काफी बदलाव आया है इसलिए उनके जीवन में शेफालिका के फूल झड़ने लगे हैं, ऐसा उन्हें महसूस हो रहा है।

प्र 2. यह दंतुरित मुसकान कविता का भाव सौंदर्य अपने शब्दों में प्रस्तुत करें।

उत्तर:- प्रस्तुत कविता "यह दंतुरित मुसकान "कवि नागार्जुन द्वारा लिखी गई है। इस कविता में कवि ने एक बच्चे की मनोहारी रूप से किसी व्यक्ति के जीवन में होने वाले सकारात्मक प्रभाव का वर्णन किया है।

कवि बच्चे को संबोधित करते हुए कहता है- तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान मृतक में भी जान डाल देती है अर्थात् हताश और निराश व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान ला देती है। जब तुम खेलते हो तो तुम्हारा यह शरीर मिट्टी एवं धूल से सना जाता है, जिसको देखकर ऐसा लगता है कि मेरी झोपड़ी में कमल का फूल खिल गया है। कोई भी व्यक्ति जब तुम्हारे संपर्क में आता है भले ही वह क्रूर और कठोर हृदय वाला हो, फिर भी तुमको देख कर उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। उसे लगता है जैसे उसके जीवन में शेफालिका के फूल खिलने लगे हैं, जो हमेशा खुशबू देती रहती है। जब कवि बच्चा से पहली बार मिलता है तो उससे अपरिचित सा लगता है। कवि को बच्चा टकटकी लगाकर देखता है, यह देख कर कवि अपनी आंखें बंद कर लेता है। उसे लगता है बारंबार टकटकी लगाकर देखने से वह थक जाएगा। कवि बच्चे की मासूमियत और सौंदर्य को देखकर उसकी मां को धन्यवाद देता है क्योंकि उसकी मां के कारण ही संभव हो पाया है कवि कहता है, तुम भी धन्य, तुम्हारी मां भी धन्य, भले ही मैं चिर प्रवासी हूं लेकिन फिर भी जब तुमसे मिलता हूं तो मुझे अपना जीवन सार्थक लगता है। मैं चिर प्रवासी एक अतिथि की तरह हूं , तुम्हें तुम्हारी मां ही लालन-पालन करती रही लेकिन फिर भी जब मैं तुमको देखता हूं तो मुझे मेरे होने का एहसास होता है। मुझे तुम्हारी छवि बहुत ही सुंदर लगती है।

कवि ने इस कविता में बच्चे के कारण मां-बाप पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव का वर्णन किया है ।कवि को बच्चे के कारण जीवन जीने की ललक और बढ़ जाती है लगता है जैसे उसे जीने की संजीवनी बूटी मिल गई।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

प्र 1. बच्चे की दंतुरित मुस्कान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर:- बच्चे की दंतुरित मुस्कान का कवि के मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसे जीवन के प्रति नई आस जगने लगती, उसे जीवन की संजीवनी बूटी मिल जाती है और जिजीविषा से भर जाते हैं।

प्र 2. बच्चे की मुस्कान और बड़े व्यक्ति की मुस्कान में क्या अंतर है?

उत्तर:- बच्चे की मुस्कान में किसी प्रकार की कोई छल कपट नजर नहीं आती है, किसी से बिना भेद किए हुए ही अपनी मोहक मुस्कान की छवि बिखेर देते हैं जबकि बड़े व्यक्ति के मुस्कान में एक शक रहता है, उसमें ईर्ष्या और द्वेष स्पष्ट नजर आता हैं।

प्र 3. कवि ने बच्चे की मुस्कान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर:- कवि ने बच्चे की मुस्कान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है_

क. झोपड़ी में कमल खिल गया है।

ख. चट्टान पिघल कर पानी बन जाता है।

ग. बबूल के पेड़ से शेफालिका के फूल झड़ने लग गए हैं।

प्र 4. भाव स्पष्ट कीजिए_

क. छोड़कर तलाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात।

भावार्थ:- बच्चे के धूल से सने हुए नन्हें तन को जब कवि देखता है तो ऐसा लगता है मानों कमल के फूल तालाब को छोड़कर उसकी झोपडी में खिल उठते हो।

ख. छू गया तुमसे ही झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बांस था कि बबूल?

भावार्थ:- जब कवि बच्चे के संपर्क में आता है तो उसे अत्यधिक खुशी मिलती है। वह कहता है, जब मैं तुम्हारे संपर्क में आया तो मेरे जीवन में भी खुशियों के फूल खिल गए हैं जबकि मेरा जीवन बांस और बबूल के पेड़ की तरह था अब बांस और बबूल के पेड़ जैसे मेरे जीवन में भी खुशियों की बहार आ गई।

फसल कविता

प्र 1. फसल कविता का सार अपने शब्दों में लिखें?

उत्तर:- फसल कविता कवि नागार्जुन द्वारा लिखा गया है। कवि नागार्जुन प्रकृति से गहरे जुड़े हुए थे ।उन्होंने प्रकृति पर कई कविताएं लिखी।

कवि नागार्जुन ने फसल कविता के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि फसल की उपज में कई तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है ।उन तत्वों में से किसी एक की अनुपस्थिति फसल को उपजने से रोक सकती है । वे कहते हैं कि फसल के उपज में एक मिट्टी का नहीं बल्कि कई मिट्टियों का गुणधर्म रहता है। फसल की उपज में एक

नदी का पानी नहीं बल्कि कई नदियों के पानी का योगदान रहता है। फसल हवा, पानी, मिट्टी सबके योगदान से संभव हो पाता है। इसके साथ साथ फसल में कई लोगों का श्रम रहता है। फसल पानी का जादू है, कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की महिमा है ,सूर्य की किरणों का रूपांतर है, और हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच है।

इस प्रकार लेखक ने फसल कविता के माध्यम से विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक तत्वों के महत्व पर प्रकाश डाला है, इनकी अनुपस्थिति फसल के उपजने के लिए संभव नहीं है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

प्र 1. फसल कविता के कवि कौन हैं?

क. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ख. जयशंकर प्रसाद
ग. नागार्जुन घ. महादेवी वर्मा

उत्तरः- ग. नागार्जुन

प्र 2. कविता के अनुसार फसल किसका रूपांतर है?

क. पानी का ख. मिट्टी का
ग. बादल का घ. सूरज की किरणों का

उत्तरः- घ. सूरज की किरणों का

प्र 3. फसल किसका गुणधर्म है?

क. मिट्टी का ख. पानी का
ग. किसान का घ. हाथ का

उत्तरः- क. मिट्टी का

प्र 4. फसल से सीधा संबंध किसका रहता है?

क. व्यापारी का ख. खरीदार का
ग. किसान का घ. सरकार का

उत्तरः- ग. किसान का

प्र 5. फसल किसका सिमटा हुआ संकोच है?

क. किसान के हाथों का ख. व्यापारी के हाथों का
ग. जमींदारों के हाथों का घ. हवा की थिरकन का

उत्तरः- घ. हवा की थिरकन का।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. फसल कविता के कवि कौन है?

उत्तरः- कवि नागार्जुन ।

प्र 2. फसल कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरः- फसल दो प्रकार के होते हैं- खरीफ और रबी।

प्र 3. फसल किसके हाथों के स्पर्श की महिमा है?

उत्तरः- किसान के।

प्र 4. फसल किसका गुणधर्म है?

उत्तरः- खेतों की मिट्टी का।

प्र 5. कवि ने किसे सिमटा हुआ संकोच कहा है?

उत्तरः- फसल को ।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. फसल को कवि ने ढेर सारी नदियों के पानी का जादू क्यों कहा है?

उत्तरः- फसल के लिए पानी सबसे आवश्यक तत्व होती है ।फसल को पानी मिलते ही जादू की तरह अंकुरित होने लगती हैं और बाद में फल फूल देने लगती है इसलिए कवि ने फसल को पानी का जादू कहा है।

प्र 2. कवि ने फसल को क्यों कोटि-कोटि हाथों का स्पर्श कहा है?

उत्तरः- फसल को उपजाने में कई लोगों का श्रम रहता है । इसकी ऊपज को कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। यह एक ऐसा काम है जिसमें कई लोग लगे रहते हैं ।यही कारण है कि कवि ने फसल को कोटि-कोटि हाथों का स्पर्श कहा है।

प्र 3. फसल की उपज में कई तत्वों का सहयोग रहता है,कैसे?

उत्तरः- फसल में किसान के अलावा कई प्राकृतिक तत्वों का समावेश रहता है । फसल की उपज का आधार मिट्टी होता है। इसके अलावा हवा, पानी, सूर्य की किरणें आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। पानी के बिना फसल का जीवन ही नहीं है और सूर्य की किरणों के बगैर फल-फूल लगना असंभव है । अतः किसान के अलावे फसल के उपज में कई तत्वों का सहयोग रहता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र 1. फसल कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें।

उत्तरः- कवि नागार्जुन ने फसल कविता में फसल की सुंदर व्याख्या की हैं। कवि कहता है कि फसल एक के नहीं , कई नदियों के पानी का जादू है। यह लाखों लोगों के हाथों के स्पर्श का प्रतिफल है। इसके उपज में कई प्रकार की मिट्टियों का योगदान रहता है। इसमें विभिन्न प्रकार की मिट्टियों का गुणधर्म रहता है। इसके फलने-फूलने में कई लोगों का योगदान रहता है, साथ ही साथ विभिन्न प्राकृतिक तत्वों का योगदान रहता है । इस प्रकार फसल कोटि-कोटि लोगों के योगदान एवं विभिन्न प्राकृतिक तत्वों के सहयोग का प्रतिफल है। यह मिट्टी, पानी, सूर्य की किरणों का प्रतिफल है, हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच है।

प्र 2. फसल एकात्म श्रम का प्रतिफल नहीं है, कैसे?

उत्तरः- फसल एकात्मक श्रम का प्रतिफल नहीं है। इसे उपजाने के लिए कई लोगों का साथ रहता है । फसल जिस रूप में हमारे पास पहुंचता है ,उसके पीछे कई लोग लगे रहते हैं । एक प्रकार की फसल कई प्रकार की मिट्टियों में पैदा की जाती है । इसे सिंचने के लिए कई नदियों के जल का योगदान रहता है । हवा और सूर्य के किरणों के बगैर फसल ना तो फूल सकता है और ना ही फल दे सकता है। फसल को उगाने में कई प्रक्रियाओं से भी गुजरना पड़ता है । इन विभिन्न प्रक्रियाओं में विभिन्न लोगों के श्रम का योगदान रहता है । अतः यह कहा जा सकता है कि फसल एकात्म श्रम का प्रतिफल नहीं है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

प्र 1. कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर:- कवि के अनुसार फसल हवा, पानी, मिट्टी, सूर्य की किरणों का परिणाम है। इसमें मिट्टी के गुणधर्म का जादू समाया हुआ है, यह सूर्य की किरणों का रूपांतर है, हवा का थिरकन है, इसके साथ साथ किसानों और मजदूरों के कोटि-कोटि हाथों का स्पर्श है।

प्र 2. कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?

उत्तर:- फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्व निम्नलिखित हैं- हवा, पानी, मिट्टी, सूर्य की किरणें एवं श्रम आदि।

प्र 3. फसल को "हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा" कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर:- फसल को "हाथों के स्पर्श के गरिमा और महिमा "कह कर कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि फसल को उपजाने में मजदूरों और किसानों के हाथों का प्यार भरा स्पर्श होता है जिसके कारण फसल बढ़ती है और फलती-फूलती है।

प्र 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

क. रूपांतर है सूर्य की किरणों का

सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति "फसल" कविता से लिया गया है जिसके कवि नागार्जुन है। इस पंक्ति में कवि ने फसल पर सूर्य और हवा के योगदान पर प्रकाश डाला है।

कवि कहता हैं कि फसल सूर्य की किरणों का रूपांतर है, सूर्य की किरण की उपस्थिति में ही फसल बढ़ता है और फलता-फूलता है। इसमें हवा ऐसी समाई हुई रहती है जैसे फसल में सिमट गई हो।

अध्याय 6 छाया मत छूना

- गिरिजाकुमार माथुर

कवि परिचय

जन्म :- सन् 1918(मध्य प्रदेश)

मृत्युः- सन् 1994

काव्य संग्रहः- नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, भीतरी नदी की यात्रा

नाटक :- जन्म कैद

आलोचनाः- नयी कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ

सार -

इस कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहते हैं कि जीवन में सुख और दुख दोनों की उपस्थिति है। बीते सुख को याद करके वर्तमान के दुख को और गहरा करना तर्कसंगत नहीं है । कवि मनुष्य को सुख - वैभव के पीछे न भागकर यथार्थ का सामना करने का संदेश देते हैं, उन्होंने इस ओर संकेत किया है कि दुविधाग्रस्त मनुष्य को जीवन में कोई रास्ता दिखाई नहीं देता है, उसे समय पर न मिलने वाली वस्तुओं का दुःख है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

1· कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कहीं है?

उत्तरः- कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात कही है, क्योंकि अतीत की यादें या भविष्य के सपने मनुष्य को दुःखी ही करते हैं। हम यदि जीवन की कठिनाइयों व दुःखों का सामना न कर उनको अनदेखा करने का प्रयास करेंगे तो किसी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकते। मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सकारात्मक भाव से उसका सामना करना चाहिए।

2· भाव स्पष्ट करें

"प्रभुता का शरण- बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।"

उत्तरः- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि गिरिजाकुमार माथुर कहते हैं कि मनुष्य सदैव प्रभुता व बड़प्पन के कारण अनेक प्रकार के भ्रम में उलझ जाता है इससे उसका मन विचलित हो जाता है एवं अनेक शंकाओं का जन्म होता है। इसलिए मनुष्य को प्रभुता के फेरे में न पड़कर स्वयं के लिए सही मार्ग का चयन करना चाहिए। हर चाँदनी रात के बाद अँधेरी रात आती है अर्थात् सुख के बाद दुख का आना तय है।

3· छाया शब्द, यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तरः- छाया शब्द से तात्पर्य जीवन की बीती मधुर यादें हैं । हमारे जीवन में सुख व दुःख कभी एक समान नहीं रहता परन्तु उनकी मधुर व कड़वी यादें हमारे दिमाग में स्मृति के रूप में हमेशा विद्यमान रहती हैं। कवि के अनुसार अपने वर्तमान के कठिन पलों को बीते हुए पलों की स्मृति के साथ जोड़ना हमारे लिए बहुत कष्ट- दायक हो सकता है। मधुर यादें हमें कमजोर बनाकर हमारे दुःख को और बढ़ा देती है। इसलिए हमें उन स्मृतियों को भूलकर अपने वर्तमान को स्वीकार करना चाहिए।

4· कविता में विशेषण के प्रयोग से शब्दों के अर्थ में विशेष प्रभाव पड़ता है , जैसे कठिन यथार्थ । कविता में आए ऐसे अन्य उदाहरण छाँटकर लिखिए और यह भी लिखिए कि इससे शब्दों के अर्थ में क्या विशिष्टता पैदा हुई ?

उत्तर :-
1. दुख दूना - यहाँ दुख दूना (विशेषण) शब्द के द्वारा दुख की अधिकता व्यक्त की गई है।
2. सुरंग - सुधियाँ - यहाँ सुरंग (विशेषण) के द्वारा यादों का रंग-बिरंगा होना दर्शाया गया है।
3. जीवित क्षण- यहाँ जीवित (विशेषण) शब्द के द्वारा क्षण के चलयमान होने को दिखाया गया है।
4. एक रात कृष्णा - यहाँ कृष्णा (विशेषण) शब्द द्वारा रात की कालिमा अर्थात् अंधकार को दर्शाया गया है।
5. शरद रात - यहाँ शरद (विशेषण) शब्द रात की सुन्दरता और मोहकता को उजागर करता है।
6. रस वसंत - यहाँ रस (विशेषण) शब्द वसंत को और अधिक रसीला, मनमोहक और मधुर बना रहा है।

5· 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ हुआ है ?

उत्तर :- रेगिस्तान में गर्मी की चिलचिलाती धूप में रेत के मैदान में दूर पानी की चमक दिखाई देती है पर पास पहुँचने पर वहाँ कुछ नहीं मिलता, प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। कविता में इसका प्रयोग प्रभुता अर्थात् धन-दौलत, वैभव और मान-सम्मान की खोज में भटकने के संदर्भ में हुआ है। इस मृगतृष्णा में फँसकर मनुष्य की तरह भ्रम में पड़कर इधर-उधर भटकता रहता है।

6· 'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले' यह भाव कविता की किस पंक्ति में झलकता है ?

उत्तर- 'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले' यह भाव कविता की निम्नलिखित पंक्ति से व्यक्त होता है - 'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण'

7· कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तरः- इस कविता में दुख के कई कारण बताए गए हैं जैसे -

क) हम अतीत की स्मृतियों सुखद स्मृतियों को याद करके अपने वर्तमान जीवन को दुखमय बना देते हैं।

ख) हम प्रभुता अर्थात् धन दौलत, मान-सम्मान और वैभव की खोज में मृगतृष्णा की तरह भटकते रहते हैं।

ग) समय पर किसी वस्तु के न मिलने पर भी मन में दुख उपजता है।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1· **गिरिजाकुमार माथुर का जन्म कब हुआ था?**

उत्तरः- 1918 में

2· **गिरिजाकुमार माथुर के दो काव्य संग्रह का नाम बताएं।**

उत्तरः- धूप के धान, नाश और निर्माण

3· **गिरिजाकुमार माथुर के एक नाटक का नाम लिखें।**

उत्तरः- जन्म कैद

4· **इस कविता में कवि किसे छूने के लिए मना करता है?**

उत्तरः- इस कविता में कवि छाया अर्थात् बीते यादों को छूने के लिए मना करता है।

5· **मृगतृष्णा किसे कहा गया है?**

उत्तरः- प्रभुता को

6· **यामिनी का क्या अर्थ है?**

उत्तरः- तारों भरी चांदनी रात

लघुउत्तरीय प्रश्न

1· **'जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।**

उत्तरः- इस पंक्ति का भावार्थ है- मनुष्य यश, वैभव और मान - सम्मान के पीछे जितना दौड़ता है, उतना भटकता है। ये भौतिक वस्तु छलावा मात्र हैं। इनको पाने के लिए व्यक्ति जितना ही भागता है उतना ही भ्रमित होता है।

2· **छाया मत छूना कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?**

उत्तरः- छाया मत छूना कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि जीवन में सुख और दुख दोनों आते-जाते रहते हैं। अतीत के सुख को याद करके वर्तमान के दुख को बढ़ा लेना अनुचित है। इसलिए सपनों में जीने की बजाय यथार्थ में जीने का प्रयत्न करना चाहिए।

3· **चांदनी को देखकर कवि को किसकी याद आती है?**

उत्तरः- चाँदनी को देखकर कवि को अपनी प्रेमिका के बालों में गूँथे हुए फूलों की याद आती है, उसे अपनी प्रेमिका के साथ बिताये हुए सुहाने दिनों की याद आती है।

4· **शरद रात आने पर चांद के न खिलने का क्या भावार्थ है?**

उत्तरः- यहाँ शरद रात खुशियों का प्रतीक है। 'चाँद खिलना' हमारी इच्छा के अनुकूल काम होने का प्रतीक है। कवि के कहने का तात्पर्य है कि हमें अपने भूतकाल को पकड़ कर नहीं रखना चाहिए, चाहे उसकी यादें कितनी भी सुहानी क्यों न हो।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

1· **यश है या न वैभव, मान है न सरमाया**

जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।

प्रभुता की शरण बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

इन पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करें।

उत्तरः- इस संसार में यश, धन-वैभव, मान-सम्मान का कोई मूल्य नहीं है। मनुष्य इन सबके पीछे, जितना दौड़ता है,उतना ही भटकता है। बड़प्पन का एहसास एक छल है, भ्रम है । हर चाँदनी रात के बाद अमावस्या की काली रात भी आती है अर्थात् हर सुख के बाद दुख छिपा रहता है अतः कल्पनाओं और छायाओं में सुख खोजने की बजाय जीवन की कठोर सच्चाइयों का सामना करना चाहिए। मनुष्य भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे जितना भागेगा उतना ही अधिक उसका दुःख बढ़ता जाएगा। हमें जीवन के दोनों पक्षों सुख एवं दुख दोनों को समान भाव से स्वीकार करना चाहिए।

2· **तन - सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी पंक्ति का आशय समझाइए ।**

उत्तर- 'तन सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी' इस पंक्ति के आधार पर कवि कहना चाहता है कि प्रेयसी के साथ बितायी गई सुखद रात बीत गई है अब केवल उसके शरीर की सुगंध शेष है जो आज भी महक रही है अर्थात् प्रेमिका के साथ बिताये हुए सुखमय समय तो बीत चुका है किंतु वे यादें अब भी आनंदित कर रही है। सुख के दिन बीत जाने के बाद उसकी स्मृति रह जाती है, जो वर्तमान को दुखद बना देती है। अतः हमें स्मृतियों को भुलाकर अपने वर्तमान में ध्यान देना चाहिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

1· **गिरिजाकुमार माथुर का जन्म हुआ?**

क· सन् 1929 में   ख· सन् 1918 में

ग· सन् 1916में   घ· सन् 1914 में

उत्तरः- ख· सन्1918में

2· **कवि छाया छूने से क्यों मना करता है**

क· छाया भ्रम होती है

ख· छाया काली होती है

ग· छाया खतरनाक होती है

घ· इससे मन को दूना दुःख होता है।

उत्तर- घ· इससे मन को दूना दुःख होता है

3· **चाँदनी किसका प्रतीक है?**

क· प्रकाश का   ख· ज्ञान का

ग· शांति का   घ· सुख की घड़ियों की

उत्तरः- घ· सुख की घड़ियों का

4• छाया से कवि का क्या आशय है ?

क• भ्रम   ख• परछाई

ग• डरावना चित्र   घ• अतीत की स्मृतियाँ,

उत्तरः- घ• अतीत की स्मृतियाँ

5• सुरंग- सुधियाँ से कवि का क्या सत्पर्य है?

क• बुरी यादें

ख• खुशनुमा यादें

ग• भूली बिसरी यादें

घ• झकझोर कर देने वाले क्षण

उत्तरः- ख• खुशनुमा यादें।

6• 'यामिनी' का अर्थ-----है।

क• वासर   ख• निशा

ग• काल   घ• वात्याचक्र

उत्तरः- ख• निशा

7• कविता में मृगतृष्णा किसे कहा गया है?

क• जल   ख• प्रभुता

ग• समृद्धि   घ• इनमें से कोई नहीं

उत्तरः- ख• प्रभुता

8• शरद रात किसका प्रतीक है?

क• ठंड का   ख• खुशियों का

ग• धन का   घ• प्रेम का

उत्तरः- ख• खुशियों का

9• रस- वसंत जीवन के किन दिनों का प्रतीक है?

क• बुरे   ख• निराश

ग• सुहाने   घ• इनमें से कोई नहीं

उत्तरः- ग • सुहाने

10• रेगिस्तान की रेत पर सूर्य की किरणों के पड़ने से पानी होने के आभास को क्या कहते है?

क• मृगतृष्णा   ख• चंद्रिका

ग• कृष्णा   घ• इनमें से कोई नहीं

उत्तरः- क• मृगतृष्णा

अध्याय 7 कन्यादान

- ऋतुराज

कवि परिचय

जन्म -सन् 1940 में (भरतपुर)

काव्य संग्रह-

एक मरणधर्मा और अन्य, पुल पर पानी, सुरत निरत, लीला मुखारविंद

सम्मान :-

सोमदत्त, परिमल सम्मान, मीरा पुरस्कार पहल सम्मान तथा बिहारी पुरस्कार

सार-

कन्यादान कविता में माँ बेटी को स्त्री के परंपरागत 'आदर्श ' रूप से हटकर सीख दे रही है माँ कहती है कि लड़की जैसा दिखाई न देना। बेटी माँ के सबसे निकट और उसके सुख-दुःख की साथी होती है । इसी कारण उसे अंतिम पूँजी कहा गया है। कविता में केवल भावुकता नहीं बल्कि माँ के अनुभवों की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति है। इस कविता में स्त्री जीवन के प्रति ऋतुराज जी की गहरी संवेदनशीलता अभिव्यक्त हुई है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

1· **आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना ?**

उत्तर- लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना माँ ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि वह लड़कियों पर हो रहे अत्याचार एवं शोषण से उसे बचाना चाहती है । लड़की अपने नारी सुलभ गुणों सरलता, निश्छलता विनम्रता आदि गुणों को बनाए रखे परंतु वह इतनी कमजोर भी न हो कि लड़की समझकर ससुराल के लोग उसका शोषण करने लगे। लड़की भावी जीवन की कठिनाइयों का साहसपूर्वक मुकाबला कर सके ।

2· **आग रोटियाँ सेकने के लिए है जलने के लिए नहीं**

क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की और संकेत किया गया है?

उत्तर- इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की दुर्दशा के बारे में बताया गया है। स्त्रियाँ ससुराल में घर-गृहस्थी का काम सँभालती है। घर के सभी लोगों के लिए खाना पकाती है सारे काम करने के बावजूद उस पर अनेक तरह के अत्याचार किए जाते हैं। कई बार तो उसे जला कर मार डाला जाता है।

ख) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा ?

उत्तर- माँ ने बेटी को सचेत करना उचित समझा क्योंकि उसकी बेटी भोली और नासमझ थी जिसे दुनियादारी की समझ नहीं थी । बेटी अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को भली-भाँति जान सके, अच्छे और बुरे में अन्तर कर सके तथा अन्याय का सामना हिम्मत से कर सके।

3· **'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की**
कुछ तुकों और कुछ पंक्तियों की '

इन पंक्तियों को पढ़कर लड़की की जो छवि आपके सामने उभरकर आ रही है उसे शब्दबद्ध कीजिए।

उत्तर- इन पंक्तियों को पढ़कर हमारे मन में लड़की की जो छवि उभरती है वह इस प्रकार है - लड़की अभी बहुत भोली है और नासमझ है वह दुनिया के एक पक्ष को तो जानती है परंतु दूसरे पक्ष जिसके अंतर्गत छल , कपट, शोषण इत्यादि है उसकी जानकारी उसे बिल्कुल भी नहीं है। लड़की विवाह के काल्पनिक सुखों में मग्न है। वह सोच रही है कि वह सज-धजकर ससुराल में जाएगी। उसके पति उस पर रीझेंगे, उसे प्यार करेंगे। उसके सास-ससुर और अन्य मित्र बंधु उसे पलकों पर बिठा लेंगे, सब उसकी प्रशंसा करेंगे। परंतु उसे घर-गृहस्थी के सारे काम निपटाने पडेंगे, चूल्हा चूल्हा चौका करना पडेगा इसकी वह कल्पना भी नहीं करती।

4· **माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?**

उत्तर- माँ और बेटी का सम्बन्ध मित्रतापूर्ण होता है। बेटी माँ के सबसे अधिक निकट और आत्मीय होती है। माँ अपने सुख-दुख को विशेषकर नारी जीवन के दुखों को अपनी बेटी के साथ बाँट सकती है। बेटी के चले जाने के बाद माँ के जीवन में खालीपन आ जाएगा। वह बचपन से अपनी पुत्री को सँभालकर उसका पालन-पोषण एक मूल्यवान सम्पत्ति की तरह करती है, फिर उसी बेटी को दूसरों के हाथ में सौंप देती है इसलिए माँ को उसकी बेटी अंतिम पूँजी लगती है।

5· **'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीखें दी?**

उत्तर- कन्यादान कविता में माँ ने अपनी बेटी को अनेक सीखें प्रदान की है। वह अपनी पुत्री को अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों एवं जिम्मेदारियों का सामना करने के अनुकूल बनाना चाहती है -

क· माँ-बेटी को अपने सौंदर्य पर रीझने के लिए मना करती है ।

ख· वह अपनी बेटी को परंपरागत सीख से हटकर जीवन के वास्तविक संघर्ष से परिचित कराती है।

ग· वह आग का उचित प्रयोग करने की सलाह देती है, कि आग खाना पकाने लिए है, जलने के लिए नहीं। यह कहकर माँ बेटी को उस पर हो रहे अत्याचार का विरोध करने की सीख देती है।

घ· वह उसे वस्तु और आभूषणों के मोह जाल से बचने की सीख देती है।

ङ· माँ बेटी को कहती है तुम लड़की हो पर लड़की जैसी कमजोर मत बनना । अपने जीवन की कठिनाइयों एवं संघर्षों का डटकर सामना करना।

अति संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

1· **ऋतुराज ने किस साहित्य का अध्यापन किया?**

उत्तर- अंग्रेजी साहित्य

2• ऋतुराज की दो कविता संग्रहों का नाम लिखें।

उत्तर- पुल पर पानी, सुरत निरत

3• ऋतुराज को मिलने वाले दो पुरस्कारों का नाम बताएं।

उत्तर- परिमल सम्मान , पहल सम्मान

4• कन्यादान कविता में किसे दुख बाँचना नहीं आता था?

उत्तर- बेटी को

5• कन्यादान कविता में किस के दुख की बात की गई है?

उत्तर- मां के दुख की

6• कन्यादान कविता में किस ओर संकेत किया गया है?

उत्तर- स्त्रियों के ऊपर होने वाले अत्याचार की ओर।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

1• लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को क्या अनुभूति हो रही थी?

उत्तर- लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को ऐसा लग रहा है मानो उसके जीवन की सारी पूँजी समाप्त हो गई है। उसके जीवन का सब कुछ पराया हो गया है। उसे गहन दुख की अनुभूति हो रही है।

2• किसके दुख को प्रामाणिक कहा गया है और क्यों?

उत्तर- लड़की की माँ के दुःख को प्रामाणिक कहा गया है, क्योंकि लड़की की माँ अपना हर सुख-दुःख अपनी कन्या के साथ बाँटती हैं, उसके चले जाने के बाद वह बिलकुल अकेली रह जाएगी जैसे उसकी अंतिम पूँजी भी हाथ से निकल जाएगी।

3• माँ ने चेहरे पर रीझने के लिए क्यों मना किया ?

उत्तर :- माँ ने चेहरे पर रीझने के लिए मना किया क्योंकि प्रायःबहुएँ अपनी सुंदरता की प्रशंसा पाकर ससुराल के हर कष्ट झेल लेती है जिससे आये दिन उनका शोषण किया जाता है।

4• कन्यादान कविता में किसे दुख बाँचना नहीं आता था और क्यों?

उत्तर- कन्यादान कविता में दुल्हन के रूप में ससुराल जा रही बेटी को दुःख बाँचना नहीं आता था क्योंकि वह सरल एवं भोली थी उसे जीवन का इतना अनुभव नहीं था। उसके मन में विवाह को लेकर सुखद कल्पनाएँ थीं, घर-गृहस्थी के काम को लेकर कोई कल्पना नहीं थी। आगे जीवन में आने वाले दुःखों की उसे समझ नहीं थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1• लड़की अभी सयानी नहीं थी

अभी इतनी भोली सरल थी

कि उसे सुख का आभास तो होता था

लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था

इन पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

उत्तर- इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जिस लड़की की शादी हो रही है वह अभी भोली और सरल थी । उसे दुनिया के स्वार्थी व्यवहार की समझ नहीं थी। उसे ससुराल पक्ष की कठोर सच्चाइयों और समाज के बंधनों का ज्ञान नहीं था। उसे सुख में छिपे दुखों की समझ नहीं थी। माँ बेटी को अपने जीवन में आने वाले संघर्षों के प्रति सजग करती है। लड़की अपने वैवाहिक जीवन के सुहावने सपने देखती है। परंतु वह इस पक्ष से अनजान है कि आगे के जीवन में उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

2• कन्यादान कविता में माँ ने लड़की को अपने चेहरे पर रीझने और वस्तु तथा आभूषणों के प्रति लगाव को मना क्यों किया है?

उत्तर- कन्यादान कविता में माँ अपनी पुत्री को अपने चेहरे पर रीझने व वस्त्र तथा आभूषणों के प्रति लगाव रखने से मना करती है क्योंकि वस्त्र व आभूषण स्त्री को या घर की बहू को घर-गृहस्थी के बंधन में बाँधने के मोहक अस्त्र होते हैं। सुन्दर -सुन्दर वस्त्र और गहने देखकर बहू को यह एहसास होता है कि सब उसे बहुत प्रेम करते हैं और उसके लोभ में आकर वह अपना अस्तित्व भूल जाती है। माँ बेटी को अपने चेहरे पर रीझने के लिए मना करती है क्योंकि ससुराल में लोग बहु की सुंदरता की प्रशंसा करते हैं उस प्रशंसा को सुनकर लड़की मोहित हो जाती है और यही मुग्धता उसके बंधन का कारण बनती है।

3• कन्यादान कविता की माँ परंपरागत माँ से कैसे भिन्न है?

उत्तर- कन्यादान कविता की माँ, परंपरागत माँ से पूर्णतया भिन्न है। जहाँ परम्परागत माँ अपनी बेटी को सब कुछ सहकर कर्तव्य पालन करने की सीख देती है वहीं कविता में वर्णित माँ सामाजिक कठिनाइयों एवं संघर्षो के प्रति जागरूक है। वह नारी शोषण के प्रति बेटी को सचेत करती है। वह उसेअपने ऊपर होने वाले अत्याचार का विरोध करने के लिए उसे प्रेरित करती है। कविता में माँ बेटी को ससुराल में अपने व्यक्तित्व को न खोने की सीख देती है। लुभावने शब्दों से सचेत रहने, पोशाकों- आभूषणों में ही मुग्ध न रहने तथा कभी जीवन से निराश न होने का भी संदेश देती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1• लड़की की माँ दुखी थी क्योंकि उसकी कन्या ही उसकी एकमात्र क्या थी?

क• पुत्री। ख• पूंजी
ग• सहारा घ• कोई नहीं

उत्तर- ख• पूंजी

2• आग रोटियां सेंकने के लिए है-------के लिए नहीं रिक्त स्थान की पूर्ति करिए।

क• जलाने ख• जलने
ग• खाने घ• खिलाने

उत्तर- ख• जलने

3• कवि ने अंतिम पूंजी किसे कहा है?

क• पेड़ को ख• आकाश को
ग• कन्या को घ• पक्षी को

उत्तर- ग• कन्या को

4· **कन्यादान कविता के कवि कौन हैं ?**

क· स्वयं प्रकाश　　ख· ऋतुराज

ग· सूरदास　　घ· रहीमदास

उत्तर- ख· ऋतुराज

5 · **कविता में लड़की के सयानी न होने का क्या आशय है?**

क· जवान न होना

ख· अनपढ़ होना

ग· दुनियादारी को ना समझना

घ· उपर्युक्त कोई नहीं।

उत्तर- ग· दुनियादारी को न समझना

6· **आग का प्रयोग किस कार्य के लिए बताया गया है?**

क· रोटियाँ सेंकने के लिए

ख· स्वयं जलने के लिए

ग· दूसरों को जलाने के लिए।

घ· इनमें से कोई नहीं

उत्तर- क· रोटियाँ सेंकने के लिए

7· **नारियों का बंधन किसे बताया गया है?**

क· धन को

ख· वस्त्रों एवं आभूषणों को

ग· शिक्षा को।

घ· गृहस्थ जीवन को

उत्तर- ख· वस्त्रों एवं आभूषणों को

8 · **'दुख बाँचना' से क्या अभिप्राय है ?**

क· दुख को देखना

ख· दुख का वर्णन करना

ग· दुख को पढ़ना।

घ· दुख को गहराई से अनुभव करना।

उत्तर- घ· दुःख को गहराई से अनुभव करना

9· **'लड़की जैसी दिखाई न देना' का तात्पर्य है -**

क· लड़की मत बनना

ख · लड़की की भाँति श्रृंगार न करना

ग · कमजोर मत बनना

घ · आभूषण मत पहनना

उत्तर - ग· कमजोर मत बनना

10· **ऋतुराज का जन्म कब हुआ था?**

क· 1930　　ख· 1940

ग· 1935　　घ· 1942

उत्तर- ख· 1940

अध्याय 8 संगतकार

- मंगलेश

प्र 1. कवि मंगलेश डबराल का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- कवि मंगलेश डबराल का जन्म सन 1948 में टिहरी गढ़वाल (उत्तरांचल) के काफलपानी में हुआ था और पढ़ाई-लिखाई देहरादून में हुई। उन्होंने सन 1983 में जनसत्ता अखबार में साहित्य संपादक का पद संभाला मंगलेश डबराल के चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं- पहाड़ पर लालटेन ,घर का रास्ता ,हम जो देखते हैं,और आवाज भी एक जगह है। इनकी कविताओं का अनुवाद भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी ,रूसी, जर्मन, स्पेनी, पोल्स्की और बल्गारी भाषाओं में भी हुआ है। कवि भी एक ख्याति प्राप्त अनुवादक हैं।इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार ,पहल सम्मान आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

प्र 2 संगतकार कविता का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- प्रस्तुत कविता हिंदी के प्रसिद्ध कवि मंगलेश डबराल द्वारा रचित है । इस कविता में कवि ने मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार का महत्व अंकन किया है ।कवि ने संगतकार कविता के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि किसी गीत के सफल होने में केवल मुख्य गायक की भूमिका नहीं होती है बल्कि उनके पीछे-पीछे गाने वाले अर्थात् साथ देने वाले छोटे और कम महत्व वाले गायकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब ऊंची आवाज में गीत गाते-गाते मुख्य गायक थक जाता है अथवा भूल जाता है ,तब उस मुख्य गायक को संगतकार ही संभालता है। गाने में कई अंतरा होते हैं, स्वरों का कई प्रकार से उतार-चढ़ाव होता है।इस दौरान मुख्य गायक थककर अंतरों के कठिन जाल में फंस जाता है अथवा भटकता है ,तब साथ गाने वाले संगतकार ही मुख्य गायक को संभालता है अथवा सही दिशा देता है।

कवि मंगलेश डबराल संगतकार कविता के माध्यम से केवल गायक अथवा संगतकार की बात नहीं कह रहा है बल्कि समाज में कई ऐसे लोग हैं ,जो चुपचाप अगुवाई करने वाले नायक के पीछे चलकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं ।उन्हें अपने योगदान का डंका भी नहीं पिटना है और न ही पहचान की जरूरत है ,उन्हें तो बस काम होने से मतलब है। ऐसे समय में कोई काम सफल होता है तो उसका श्रेय केवल नायक को ही मिलता है लेकिन सच तो यह है कि इसके पीछे कई गुमनाम सहयोगियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी प्रकार मुख्य गायक का नाम भले हो लेकिन उनके साथ-साथ गाने वाले संगतकार के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है।

बहु वैकल्पिक प्रश्न उत्तर-

प्र 1. संगतकार कविता के कवि कौन है?

क. मंगलेश डबराल ख. नागार्जुन।
ग. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
घ. जय शंकर प्रसाद

उत्तर- क. मंगलेश डबराल।

प्र 2. संगतकार का क्या अर्थ होता है?

क. मुख्य गायक
ख. मुख्य गायक का साथ देने वाले गायक
ग. गीतकार
घ संगीतकार

उत्तर- ख. मुख्य गायक का साथ देने वाले गायक।

प्र 3. जब मुख्य गायक का उत्साह अस्त होने लगता है ,तब हौसला कौन बढ़ाता है?

क. गीतकार ख. कलाकार
ग. संगीतकार घ. संगतकार

उत्तर- घ. संगतकार

प्र 4. मुख्य गायक का स्वर कब बैठने लगता है?

क. ऊंची आवाज में गाने के कारण ।
ख. मध्यम आवाज में गाने के कारण ।
ग. नीचे आवाज में गाने के कारण ।
घ. कर्कश आवाज में गाने के कारण।

उत्तर- क. ऊंची आवाज में गाने के कारण।

प्र 5. कवि ने किसके स्वर को चट्टान जैसे भारी स्वर कहा है?

क. संगतकार के स्वर को
ख. साहित्यकार के स्वर को।
ग. मुख्य गायक के स्वर को
घ. सहायक गायकों के स्वर को।

उत्तर- ग. मुख्य गायक के स्वर को।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर-

प्र 1. कवि ने किसकी आवाज को कमजोर कांपती हुई कहा है?

उत्तर- संगतकार की आवाज को।

प्र 2. कौन अंतरों के जटिल तानो के जंगल में कौन खो जाता है?

उत्तर- गायक।

प्र 3. संगतकार कब से गायक से गूंज मिलाता आया है?

उत्तर- प्राचीन काल से ।

प्र 4. तार सप्तक का क्या अर्थ होता है?

उत्तर- गाने के क्रम में स्वर् का ऊंचा होना।

प्र 5. नौसिखिया का क्या अर्थ होता है?

उत्तर- जिसने अभी-अभी सीखना प्रारंभ किया हो।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर-

प्र 1. गीत के अंतरे से भटकने वाले गायक को कौन संभालता है?

उत्तर- गायन में मुख्य आवाज गायक की होती है ,संगतकार उसका साथ देता है लेकिन गायक कभी-कभी गाते गाते अंतरों में भटक जाता है, तब संगतकार ही उसे संभालता है।

प्र 2. तारसप्तक से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- ध्वनि की ऊंचाई और निचाई के आधार पर तीन प्रकार के सप्तक होते हैं - तार सप्तक ,मध्य सप्तक और मंद्र सप्तक। साधारण ध्वनि को मध्य सप्तक एवं मध्य सप्तक के नीचे की ध्वनि को मंद्र सप्तक कहते हैं।मध्य सप्तक से ऊंची ध्वनि को तार सप्तक कहते हैं।

प्र 3. कवि के अनुसार संगतकार गायक का साथ क्यों देता है?

उत्तर- कवि के अनुसार संगतकार उसका ना तो शिष्य है और ना ही उसका कोई रिश्तेदार वह केवल इसलिए साथ देता है ताकि वह बढ़िया से गा सके ।वह मुख्य गायक का साथ मनुष्यता समझ कर देता है।

प्र 4. कविता में किसे नौसिखिया कहा गया है?

उत्तर- कविता में कवि ने मुख्य गायक को नौसिखिया कहा है। कवि यहाँ पर यह बताने का प्रयास किया है कि जब वह सीख रहा था तब उसके गुरु उसको सिखाते-संभालते थे उसी प्रकार संगतकार उसको संभालता है जैसे वह नौसिखिया हो।

प्र 5. किसके स्वर में हिचक साफ सुनाई देती है?

उत्तर- संगतकार के स्वर में हिचक साफ सुनाई देती है ।उसकी आवाज मधुर है, भारी भी है लेकिन फिर भी उसे गायक के पीछे पीछे ही गाने को कहा जाता है, जिसके कारण उसके स्वर में हिचक साफ सुनाई देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर-

प्र 1. संगतकार कविता के आधार पर संगतकार की भूमिका स्पष्ट करें।

उत्तर- गायन में संगतकार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।संगतकार की भूमिका एवं सहायता के बिना गायक अपना गीत अच्छी तरह नहीं गा सकता है ।गायन में कभी स्वर को ऊंचा खींचना होता है तो कभी नीचे उतारना पड़ता है। इस दौरान गायक को गीत गाने में काफी परेशानी होती है ,उसका स्वर बैठने लगता है। ऐसे समय में संगतकार गायक को संभालता है, सहयोग करता है। कोई भी गीत संगतकार के बिना नहीं गा सकता है। गायक कभी-कभी गाते-गाते थक जाता है, वैसे समय में संगतकार ही गायक का उत्साह बढ़ाता है ,उसे थकने से रोकता है ,वह कभी अंतरों की जटिल तान में फंस जाता है ,तब उसको उस जटिल तान से बाहर निकालता है और उसे दिशा देता है, उसे ट्रैक पर लाता है ।पर्दे और कमरे के पीछे रहने वाले संगतकार भले ही आगे बढ़कर ,कैमरे के ठीक सम्मुख नहीं गा सकता है, यह उसकी विवशता है, लेकिन संगतकार कैमरे के पीछे रहकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्र 2 गायन के अलावा अन्य क्षेत्रों में मिलने वाले संगतकार का महत्व अंकन कीजिए।

उत्तर- गायन के अलावा अनेक अन्य क्षेत्र हैं जिसमें संगतकार जैसे ही सहायक लोग होते हैं जिनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ऐसे लोग सामाजिक क्षेत्र राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में अक्सर दिखाई देते हैं ।सामाजिक क्षेत्र में जो लोग आगे आकर काम करते हैं ,उन्हें कई तरीके से सहयोग करने वाले लोग होते हैं। वह भी बिना किसी आशा और उम्मीद के साथ उनसे जुड़े रहते हैं केवल इसलिए कि सामाजिक रूप से अच्छा काम हो। इसके लिए उन्हें ना तो पहचान की उम्मीद रहती है और ना ही पहचान की दरकार होती है ।राजनीति में भी नेतृत्व करने वाले के साथ-साथ कई लोग सहायक बन कर चलते हैं ,उन्हें भी वह पहचान एवं प्रसिद्धि नहीं मिलती है जो पहचान नायक को मिलती है लेकिन फिर भी वे लोग नायक के साथ कदम से कदम मिलाकर साथ चलते हैं । इसी प्रकार धार्मिक और सामाजिक अगुवाओं के साथ भी लोग जुड़े रहते हैं ,ठीक उसी तरह जिस तरह संगतकार मुख्य गायक के साथ जुड़ा रहता है ।इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में संगतकार जैसे सहायक बिना किसी कामना के साथ जुड़े रहते हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर-

प्र 1. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर- संगतकार के माध्यम से कवि कला अथवा किसी भी क्षेत्र में सहायक की भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है। कवि का मानना है कि संगतकार जैसे सहायक लोग किसी भी क्षेत्र में प्रमुख व्यक्तियों के महत्व को बढ़ाने के लिए अपना जीवन समर्पित करते हैं लेकिन उन्हें उतना महत्व नहीं मिलता जितना मुख्य भूमिका में रहने वाले लोगों को मिलता है।

प्र 2. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर- संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावे राजनीति, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं। राजनीति में नेता के पीछे चलने वाले कई लोग होते हैं ,ऐसे ही लोग उस नेता की ताकत एवं पहचान होते हैं ।सामाजिक क्षेत्रों में भी सामाजिक अगुवा के पीछे चलने वाले कई लोग होते हैं लेकिन मुख्य पहचान आगे रहने वाले लोगों को ही मिलता है।ऐसे लोग भले ही उनका महत्व बढ़ा रहे हैं लेकिन इन्हें पहचान दिलाने वाला कोई नहीं है।

प्र 3. संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक - गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तर- संगतकार निम्नलिखित रूपों में मुख्य गायक - गायिका की मदद करते हैं_

क. अपनी आवाज और गूंज मुख्य गायक की आवाज से मिलाकर उनकी आवाज का बल बढ़ाते हैं।

ख. जब गायक गाते - गाते कहीं गहरे चला जाता है और लौटने में दिक्कत होती है, तब संगतकार उसे मूल स्वर पर ले आता है।

ग. जब गायक गाते - गाते थक जाता है तब संगतकार उसे सहारा देता है, उसकी सहायता करता है।

प्र 4. भाव स्पष्ट कीजिए,- और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है या अपने स्वर को ऊंचा ना उठाने की जो कोशिश है उसे विफलता नहीं उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां संगतकार कविता से लिया गया है जिसके कवि मंगलेश डबराल है। उन्होंने इस कविता के माध्यम से उपेक्षित और वंचित लोगों के महत्व को बताने का प्रयास किया है।

कवि कहता है कि संगतकार गायक का साथ निभाते निभाते कभी उसका स्वर गायक के स्वर से ऊंचा उठने लगता है लेकिन फिर भी वह अपने स्वर को दबाकर रखता है। इस दौरान उसके स्वर में एक हिचक उत्पन्न हो जाती है। संगतकार को अपनी भूमिका और अपने कर्तव्य के बारे में मालूम है, वह जानता है कि उसका धर्म और कर्तव्य केवल मुख्य गायक का साथ निभाना है इसलिए वह चाह कर भी मुख्य गायक से अपना स्वर ऊंचा नहीं बढ़ाता है।यह उसकी विफलता नहीं है बल्कि उसकी मनुष्यता है, वह मुख्य गायक के महत्व को बढ़ाने के लिए अपने महत्व को सीमित करता है।

प्र 5. किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाले लोगों को अनेक लोग तरह-तरह से अपना योगदान देते हैं।कोई एक उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर- राजनीति के क्षेत्र में आज केजरीवाल किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।जब इन्होंने अन्ना आंदोलन का साथ दिया, तब इन्हें बहुत कम लोग जानते थे लेकिन इनके साथियों के सलाह से इन्होंने अन्ना जी से अलग होकर एक स्वतंत्र राजनीतिक पार्टी बनाई।आज इनके साथ साथ चलने वाले लाखों लोग हैं लेकिन जो प्रसिद्धि एवं नाम केजरीवाल ने कमाया है ,वह प्रसिद्धि उनके किसी साथियों को नहीं मिला है जबकि केजरीवाल के प्रसिद्धि का आधार उनके दोस्त ही हैं ,उनके कार्यकर्ता ही हैं।

प्र 6 कभी-कभी तार सप्तक की ऊंचाई पर पहुंच कर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नजर आता है ,उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है।इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कभी-कभी तार सप्तक की ऊंचाई पर पहुंचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नजर आता है।उसमें संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है। वह जब जटिल तानों के साथ स्वर को ऊंचा ले जाता है और उसका स्वर बिखरता है ,तब संगतकार ही उसे मूल स्वर में लेकर आता है, उसके मुख्य धुन को दोहराता है जिससे गायक को अपने लय में आने में सुविधा होती है।

प्र 7 सफलता के चरम शिखर पर पहुंचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खलाता है तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

उत्तर- कभी-कभी व्यक्ति सफलता के चरम शिखर पर पहुंचने से पहले ही लड़खड़ाने लगता है। उसे लगता है कि जीत पाना कठिन है लेकिन ऐसे ही समय में उसके सहयोगी शाबासी देकर, उसका हौसला आफजाई करके उसे प्रेरित करने का प्रयास करते हैं।अंततः अपने सहयोगियों की प्रेरणा से वह जीत भी जाता है।

अध्याय 9 नेताजी का चश्मा

- स्वयं प्रकाश

कवि परिचय

जन्म-

सन 1947 इंदौर मध्यप्रदेश में हुआ।

रचनाएं-

कहानी संग्रह- सूरज कब निकलेगा, आएंगे अच्छे दिन भी, संधान, आदमी जात का आदमी।

उपन्यास-

बीच में विनय, इंधन

वसुधा पत्रिका का संपादन भी किया

साहित्यिक पुरस्कार-

पहल सम्मान ,वनमाली पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार।

विशेष-

रोचक किस्सागोई शैली में लिखी गई उनकी सभी कहानियां हिंदी की वाचिक परंपरा को समृद्ध करती हैं।

पाठ परिचय-

लेखक स्वयं प्रकाश द्वारा रचित "नेताजी का चश्मा" एक कहानी है। इस कहानी में देशभक्ति की भावना साफ-साफ दिखाई देती है जिसमें लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि राष्ट्र निर्माण में सभी लोगों की भागीदारी होती है चाहे उसका रंग, रूप ,वेश, भूषा, उम्र ,अवस्था, चाहे जैसी भी हो। एक साधारण सा गरीब अपंग व्यक्ति भी देश भक्ति और राष्ट्र निर्माण में किस प्रकार भागीदार है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

1. **सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?**

उत्तर- चश्मे वाला एक साधारण बहुत बूढ़ा मरियल सा लंगड़ा व्यक्ति था। जिसमें देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी ।वह गांधी टोपी पहनता था और काले रंग का चश्मा लगाता था। उसे नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति अच्छी नहीं लगती थी इसलिए नेता जी की मूर्ति को प्रतिदिन चश्मा लगाता था। शायद उसे नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति अच्छी नहीं लगती थी उसकी इसी श्रद्धा को देखकर लोग उसे कैप्टन कहते थे।

2. **हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा-**
   - **क. हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?**
   - **ख. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?**
   - **ग. हालदार साहब इतनी सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?**

उत्तर- क. हालदार साहब कैप्टन की मृत्यु हो गई है यह जानकर मायूस हो गए थे।

ख. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा उम्मीद जगाता है कि यह धरती देशभक्ति से शून्य नहीं हुई है ।अगर कैप्टन की मृत्यु हो गई तो क्या अन्य दूसरे लोग उस दायित्व का वहन करने को तैयार हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि उस सरकंडे का चश्मा किसी छोटे बच्चे के हाथों से बनाया गया था जो इशारा करती है कि भावी पीढ़ी भी देश भक्ति की भावना से भरी हुई है।

ग. हालदार साहब के लिए 'इतनी- सी बात' बस इतनी सी -बात नहीं थी। बल्कि बहुत बड़ी बात थी कि आने वाली पीढ़ी में भी अपने क्रांतिकारियों के प्रति प्रेम एवं सम्मान के भाव अंकुर हैं जो आगे वट वृक्ष के समान हो सकते हैं यह बात उनके मन में आशा जगाती है कि कस्बे में अभी देशभक्ति जिंदा है।

3. **आशय स्पष्ट कीजिए:-**

"बार-बार सोचते क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर गृहस्थी जवानी जिंदगी सब कुछ छोड़ देने वालों पर भी हंसती हैऔर अपने लिए बिकने के मौके ढूंढती है।"

उत्तर- हालदार साहब ने जब चश्मे वाले कैप्टन की मृत्यु का समाचार सुना तो काफी दुखी हो गए कैप्टन जैसे लोग देश एवं देश भक्ति के लिए एक उम्मीद है इन्हीं के आचरण को देख सुनकर नई पीढ़ी देशभक्ति की प्रेरणा ले सकती है। जबकि लोग देश भक्ति करने वाले और देश पर मरने मिटने वालों पर हंसती है यहां तक कि नगरपालिका ने भी सुभाष की अधूरी मूर्ति बनवाई उसे कोई खेद न हुआ लोगों ने देखा उन्हें हंसी तो आई पर देशभक्तों की उपेक्षा पर भी उनका हृदय द्रवित न हुआ, उल्टे कैप्टन चश्मे वाला जो सुभाष की प्रतिमा पर प्रतिदिन चश्मा लगाता था। उसका भी लोग मजाक उड़ाते थे। इस स्थिति को देखकर हालदार साहब दुखी हैं फिर सोच रहे हैं कि जिस सुभाष की मूर्ति को वह चश्मा तक नहीं दे रहे उन्होंने अपनी सारी जिंदगी देश की सेवा में समर्पित कर दिया। वह लंगड़ा गरीब चश्मे वाला सुभाष जी से एवं देश - भक्ति से ऐसा जुड़ाव है कि वह जीवन भर सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाता रहा, लोग उस पर हंसते रहे। उसे पागल बेवकूफ कहते रहे। जहां इस प्रकार के स्वार्थी लोग रहते हो उस देश का भविष्य क्या होगा। जिस जाति में, देश में, समाज में, लोग स्वयं के प्रचार-प्रसार आदि में अधिक रूचि लेते हैं ।उस देश का भविष्य बहुत बुरा हो जाएगा।

4. **पान वाले का रेखा - चित्र प्रस्तुत करें।**

उत्तर- पानवाला बहुत मोटा काला खुशमिजाज आदमी था। उसकी बत्तीसी लाल- काली थी। उसकी तोंद निकली हुई थी। दुकान में पान भरा ही था, उसका मुख भी कभी पान से खाली नहीं रहता था। पान चबा -चबाकर थूकता रहता था। स्वभाव से वह दूसरों की मजाक उड़ाने वाला था। इसलिए तो चश्मे वाले का वह मजाक उड़ाता रहता था।

5. **" वो लंगड़ा क्या जाएगा फौज में! पागल है! पागल! कैप्टन के प्रति पान वाले की इस टिप्पणी पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?**

उत्तर- कैप्टन चशमे वाले के प्रति पानवाले की इस प्रकार व्यंग्य युक्त भाषा का प्रयोग उसकी अदूरदर्शिता एवं फूहड़पन को दर्शाता है। उसके अंदर कटाक्ष करने की प्रवृत्ति है। इसी के कारण वह कैप्टन की देशभक्ति की भावना को देख नहीं पा रहा है। कैप्टन अपाहिज था किंतु उसकी वेशभूषा में गांधी टोपी पहनना, काला चशमा लगाना, यह व्यवहार नेता जी की ही तरह थी। वह फेरीवाला था, रेहडी पर दुकान लगाता था, फिर भी एक चश्मा नेताजी को पहनाना नहीं भूलता था, यदि उसे उस चश्मे की आवश्यकता होती तो क्षमा मांगता हुआ चश्मा निकालता उसके स्थान पर दूसरा चश्मा लगा देता। उसकी यह भावना देशभक्ति की सच्चे हृदय की भावना है। पानवाले का यह उपेक्षा पूर्ण व्यवहार बिल्कुल अनुचित है।

अति संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

1. **लेखक स्वयं प्रकाश का जन्म कब हुआ था?**

उत्तर- सन 1947।

2. **वह किस पत्रिका से जुड़े रहे?**

उत्तर- वसुधा।

3. **सूरज कब निकलेगा, आएंगे अच्छे दिन भी, संधान नामक कहानी संग्रह किस लेखक के हैं?**

उत्तर- लेखक स्वयं प्रकाश।

4. **नेताजी की मूर्ति का निर्माण किसने कराया था?**

उत्तर- नगर पालिका ने।

5. **पाठ 'नेताजी का चशमा' में मूर्ति के निर्माता का क्या नाम था?**

उत्तर - मास्टर मोतीलाल।

6. **मूर्ति को प्रतिदिन चशमा कौन पहनाता था?**

उत्तर- कैप्टन चशमेवाला।

7. **आजकल देशभक्ति को लोग क्या समझते हैं?**

उत्तर- मजाक।

8. **सुभाष की मूर्ति पर वास्तविक चश्मे का ना होना हालदार साहब के लिए कैसी बात थी?**

उत्तर- चकित और द्रवित करने वाली।

9. **चश्मे वाला कैसा आदमी था?**

उत्तर- बूढ़ा मरियल एवं लंगड़ा।

10. **मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसने लगाया?**

उत्तर- कस्बे के किसी गरीब बच्चे ने।

संक्षिप्त प्रश्न

1. **हालदार साहब कैप्टन से जब तक साक्षात नहीं मिले थे तब तक उनके मानसिक पटल पर उसका कैसा चित्र रहा होगा?**

उत्तर- जब तक हालदार साहब चश्मे वाले से नहीं मिले थे तब तक उनके मन में एक ख़ास छवि होगी कि कैप्टन हटा- कट्ठा भद्र पुरुष होगा, जो स्वतंत्रता सेनानी हो सकता है या नेताजी के साथ उनकी सेना में काम किया होगा। इसलिए वह एक गर्वीला एवं रौबदार व्यक्ति होने की कल्पना कर लेते हैं।

2. **हालदार साहब को कौन- सी बात विचित्र और दुख भरी लगी थी?**

उत्तर- हालदार साहब कस्बे से जब गुजरते तो नेता जी की मूर्ति देखा करते थे उन पर प्रतिदिन बदलता हुआ भिन्न-भिन्न फ्रेम वाला रियल चश्मा उनको कौतुकभरी लगती थी। मूर्ति के विषय में प्रतिदिन नई-नई सूचनाएं इकट्ठा करना और लोगों से बातें करना भी उन्हें आनंददायी लग रहा था। कैप्टन से मिलकर तो वह देशभक्ति की सच्ची अनुभूति से अभिभूत हो गए थे। मूर्ति पर वास्तविक चश्मे के ना होने से वे दुखी हो गये थे।

3. **पानवाले और हालदार साहब की सोच में क्या अंतर था? स्पष्ट करें।**

उत्तर- पानवाले और हालदार साहब की सोच में काफी अंतर था। पानवाले की सोच संकीर्ण है, वह दूसरों का उपहास करने वाला व्यक्ति था। इसलिए तो वह चश्मे वाले को गरीब फटेहाल बूढ़ा और लंगड़े के रूप में देखता था। जबकि हालदार साहब कैप्टन को महान और सच्चे देशभक्त के रूप में देखते थे जो देश और देश के लिए जान देने वालों का सम्मान करता था। पानवाले के लिए वह सनकी है जबकि हालदार साहब के लिए वह सच्चा देशभक्त है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **कैप्टन चशमेवाला को पागल और लंगड़ा कहने वाला पान वाला उसकी मृत्यु पर दुखी क्यों हो गया था?**

उत्तर- कैप्टन चशमेवाला जब तक जीवित था, तब तक उसके महत्व को पानवाला समझ नहीं पाया था। उसके द्वारा नेता जी की मूर्ति को चश्मा पहनाना मजाक और सनकी होना जैसी बात लगती थी। इसलिए वह हालदार साहब से भी कहता है कि पागल है! पागल! किंतु जैसे ही उसकी मृत्यु हुई तो पानवाला समझ चुका था कि कैप्टन चश्मे वाला असाधारण व्यक्तित्व का मालिक था। उसके हृदय में देश और देश के लिए मर मिटने वालों के लिए अगाध प्रेम था इसलिए तो वह नेता जी की मूर्ति का इतना खयाल रखता था। आज वह नहीं है, उस मूर्ति की चिंता करने वाला कोई नहीं है कस्बे में और किसी के पास इतना समय और भाव नहीं है कि मूर्ति का ध्यान रखें तभी उसने कैप्टन की मृत्यु पर दुख प्रकट किया।

2. **हालदार साहब का चरित्र कैसा था? पाठ के आधार पर उनका चरित्र- चित्रण करें।**

उत्तर- हालदार साहब एक देशभक्त होने के साथ-साथ देशभक्ति की भावना से भरे हुए व्यक्ति हैं। उन्हें देश के ऊपर मर मिटने वाले सेनानियों के प्रति अगाध प्रेम है। इसलिए तो

वह सुभाष की मूर्ति की ओर आकर्षित हुए। जब भी वे उस कस्बे से गुजरते तो नेता जी की मूर्ति को अवश्य निहारते उसमें होने वाले बदलाव को देख कर आनंदित होते। उनकी सोच सकारात्मक है। वह कैप्टन चश्मे वाले की देशभक्ति की ओर आकर्षित होते हैं तभी तो कैप्टन का मजाक उड़ाया जाना उन्हें बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। कैप्टन की मृत्यु ने हालदार साहब को काफी द्रवित कर दिया था। वे इतने भाव विभोर हो गए थे कि वे चौराहे पर रुकना नहीं चाहते थे। किंतु सरकंडे का चश्मा देख कर वहां रुकते हैं। श्रद्धा से भर जाते हैं। उनकी आंखें नम हो जाती हैं। उन्हें यह तसल्ली होती है कि चलो देशभक्ति अभी भी बची हुई है।

3. पाठ नेताजी का चश्मा के आधार पर कैप्टन चश्मे वाले के चरित्र के बारे में लिखें।

उत्तर- पाठ 'नेताजी का चश्मा' में कैप्टन कहानी का मुख्य नायक है। जो बूढ़ा मरियल और लंगड़ा पुरुष है। उसके रूप रंग और काम धंधे में कहीं कोई विशेषता दिखाई नहीं देती है। वह एक साधारण सा फेरी वाला है जो घूम- घूम कर चश्मा बेचा करता था। परंतु जो बात उसे अन्य से भिन्न और महान बनाती है वह है उसकी देशभक्ति।

अपने प्रिय नेता सुभाष को बिना चश्मे का रहने नहीं देता। प्रतिदिन उनकी मूर्ति में अलग-अलग चश्मा लगा दिया करता था। उसकी इसी भावना ने उसे महान बना दिया था इसलिए वह कैप्टन के नाम से विख्यात भी हो गया था। देशभक्ति की प्रबल भावना उसमें कूट-कूट कर भरी थी। उसमें त्याग की भी भावना थी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. नेताजी का चश्मा पाठ के लेखक का नाम है:-

क. रामवृक्ष बेनीपुरी   ख. स्वयं प्रकाश
ग. यशपाल
घ. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

उत्तर- ख. स्वयं प्रकाश

2. नेता जी की मूर्ति कहां लगाई गई थी?

क. मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे के बाएं
ख. मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे के दाएं
ग. मुख्य बाजार के चौराहों पर
घ. बाजार के बाहर

उत्तर- ग. मुख्य बाजार के चौराहों पर

3. नेता जी मूर्ति में कैसे लग रहे थे?

क. क्रोधी एवं उग्र
ख. शांत एवं क्रोधी
ग. संघर्षशील और क्रांतिकारी
घ. मासूम और कमसिन

उत्तर- घ. मासूम और कमसिन

गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर सही विकल्प पर टिक लगाएं।

हालदार साहब को पानवाले द्वारा इस एक देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा अवाक रह गए एक बेहद बूढ़ा मरियल - सा लंगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आंखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी- सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बांस पर टंगे बहुत से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है! हालदारसाहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यह इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठ कर चले गए।

5. हालदार साहब को कौन सी बात बुरी लगी?

क. मरियल सा बूढ़ा आदमी को सिर पर गांधी टोपी पहनना
ख. पानवाले द्वारा देशभक्त का मजाक उड़ाया जाना
ग. कैप्टन का गली गली में घूम के चश्मा बेचना
घ. पानवाले द्वारा साफ इनकार करना।

उत्तर- ख. पानवाले द्वारा देशभक्त का मजाक उड़ाया जाना

6. चश्मेवाले को देखकर हालदार साहब चक्कर में क्यों पड़ गए?

क. पानवाले के द्वारा मजाक करने पर
ख. पानवाले द्वारा चश्मे वाले को कैप्टन कहने पर
ग. एक बूढ़ा मरियल लंगड़ा आदमी की देशभक्ति को देखकर
घ. इनमें से कोई नहीं।

उत्तर- ग. एक बूढ़ा मरियल लंगड़ा आदमी की देशभक्ति को देखकर

7. हालदार साहब और चश्मेवाले में क्या समानता है?

क. दोनों चश्मा बेचते थे
ख. दोनों देशभक्त थे
ग. पानवाला दोनों का मजाक बनाता था
घ. इनमें से कोई नहीं।

उत्तर- ख. दोनों देशभक्त थे।

8. हालदार साहब नेता जी की मूर्ति पर रियल चश्मा देखकर सर्वप्रथम क्या सोचते हैं?

क. सोचते हैं कि प्रशासनिक अधिकारियों का कार्य सराहनीय है
ख. सोचते हैं कि नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय है
ग. सोचते हैं कि कैप्टन का कार्य सराहनीय है
घ. सोचते हैं कि पान वाले का कार्य सराहनीय है

उत्तर- क. सोचते हैं कि प्रशासनिक अधिकारियों का कार्य सराहनीय है।

9. नेता जी की मूर्ति पर सरकंडे के चश्मे को देखकर क्या उम्मीद जगती है?

क. ज्ञान प्राप्ति की उम्मीद
ख. नए लोगों में देशभक्ति की उम्मीद
ग. अपनी तरक्की की उम्मीद
घ. देश की तरक्की की उम्मीद।

उत्तर- ख. नए लोगों में देशभक्ति की उम्मीद।

10. ड्राइंग मास्टर का क्या नाम था?

क. मोतीलाल   ख. किशन लाल
ग. प्रेमपाल   घ. सोहनलाल

उत्तर- क. मोतीलाल

अध्याय 10 बाल गोविंद भगत

- रामवृक्ष बेनीपुरी

कवि परिचय

जन्म-

सन 18 99, बिहार, जिला मुजफ्फरपुर, बेनीपुर गांव।

मृत्यु -

सन 1968।

रचनाएं:-

पत्र-पत्रिकाओं का संपादन:- तरुण भारत, किसान मित्र, बालक युवक, योगी, जनता, जनवाणी और नई धारा।

उपन्यास:-

पतितों के देश में, नाटक:- अंबापाली

कहानी संग्रह :-

चिता के फूल;

रेखा चित्र:-

माटी के मूरते; यात्रा वृतांत:- पैरों में पंख बांधकर;

संस्मरण :-

जंजीरें और दीवारें

विशेष:

इन्हें कलम का जादूगर भी कहा जाता है।

पाठ- परिचय

पाठ बालगोबिन भगत एक रेखाचित्र है, जिसके माध्यम से लेखक ने एक विलक्षण चरित्र के बारे में बताया है, जो लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है । इस पाठ में यह बताया गया है कि कोई व्यक्ति सिर्फ वेशभूषा या अन्य अनुष्ठानों से संन्यासी नहीं होता बल्कि यहां संन्यास का आधार जीवन के मानवीय सरोकार है। इस पाठ में बाल गोविंद भगत कबीर के पक्के भक्त हैं, जो कभी झूठ नहीं बोलते, सभी से खरा व्यहार रखते। बिना अनुमति के किसी की चीज को प्रयोग में नहीं लाते थे। इसी प्रवृत्ति के कारण वे साधु कहलाते थे। यह पाठ सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार करता है साथ ही ग्रामीण जीवन की सुंदर झांकी प्रस्तुत करते हैं । बाल गोविंद भगत द्वारा कबीर के पदों का सुंदर गायन एवं उनकी प्रभात फेरियां और ब्रह्म के प्रति प्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति करता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों के उत्तर

1. **खेती - बारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपने किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?**

उत्तर- खेती - बारी से जुड़े बाल गोविंद भगत अपने आचार -व्यवहार के कारण गृहस्थ होने के बावजूद संन्यासी कहलाते थे। हम रामवृक्ष बेनीपुरी के इस रेखा चित्र में बाल गोविंद भगत के चरित्र में उस भाव को महसूस करते हैं। गृहस्थ संन्यासी होने के साथ-साथ कबीर पंथ को मानने वाले थे। वे कबीर को साहब मानते थे। उन्हीं के गीतों को गाते और उनके आदेश का अनुसरण करते। हमेशा सत्य बोलते थे, सभी के साथ सहृदय व्यवहार रखते थे। व्यवहार में खरापन था। अपनी बात को खरी-खरी अभिव्यक्त करने में जरा भी संकोच नहीं करते थे। किसी से झगड़ा नहीं करते वे अपने आदर्शों के इतने पक्के थे कि किसी की चीज बिना पूछे छूते भी नहीं थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि गृहस्थ जीवन में हम जहां सारी वस्तुओं को अपने भोग में लाना उद्देश्य मानते हैं वही वे अपनी सारी संपत्ति यहां तक कि परिवार को भी साहब का ही मानते थे। अपने खेत में उपजने वाले अनाज को अपने सिर पर लादकर सबसे पहले साहब के दरबार ले जाते फिर वहां से भेंट स्वरूप जो प्राप्त होता उसे प्रसाद स्वरूप अपने घर ले आते थे इसी से अपनी गुजर-बसर चलाते। इसी व्यवहार में उन्होंने अपना पूरा जीवन जिया। उन्होंने अपने इकलौते बोदे बेटे का जीवन भर खयाल रखा। उसकी मृत्यु पर भी वह विचलित नहीं हुए। ब्रह्मलीन उनकी आत्मा ने इकलौते बेटे की मृत्यु पर भी शोक नहीं मनाया। बल्कि आत्मा अपने सच्चे प्रेमी परमात्मा से जा मिली है यह कहकर उत्सव मनाया और अपनी बहू को भी उत्सव मनाने को कहा। सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए बहु से ही बेटे को मुखाग्नि दिलाई। बेटे की मृत्यु के बाद बहू को अपने पास नहीं रखा बल्कि उसके भाई को बुलाकर साथ भेज दिया और कहा इसकी दूसरी ब्याह करा देना। स्वयं अकेले रहें ,अपने आदर्शो पर चले, और अपनी इच्छा अनुसार ही मरे। इस तरह की विशेषताओं ने उन्हें विशेष और भिन्न बना दिया था। इसलिए लोग उन्हें साधु कहा करते थे।

2. **भगत की पुत्र वधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?**

उत्तर- भगत की पुत्रवधू यह जानती थी कि अपने इकलौते बेटे की मृत्यु के बाद उसके ससुर अकेले रह जाएंगे। संसार की वस्तुओं से उनका कोई सरोकार रहा भी नहीं। अब इस उम्र में वे अपना खाने पीने तक का भी ख्याल नहीं रख पाते थे। बीमार पड़ने पर उनकी सेवा कौन करेगा। यह सब सोचकर वह बालगोबिन भगत के साथ ही रहना चाहती थी। उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी।

3. **भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएं किस तरह व्यक्त की?**

उत्तर- भगत अपने बेटे की मृत्यु पर साधारण मनुष्य की तरह बिलख- बिलखकर रोए नहीं बल्कि मृत्यु को ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार किया। कहा कि आज परमात्मा ने बरसों के बिछड़े हुए आत्मा रूपी प्रेमी को अपने पास बुला लिया है इसलिए तो बेटे के मृत शरीर को आंगन में एक चटाई पर लिटा कर एक सफेद चादर से ढक दिया था। उस पर फूल और तुलसीदल बिखेर दिए थे। सिरहाने एक दिया जला कर रख दिया। खुद एक आसन जमा कर बैठ गए और तल्लीनता पूर्वक कबीर के पदों को गाने लगे। गाते-गाते कभी अपनी रोती हुई पुत्रवधू के पास जाते और रोने से मना करते हैं और कहते उत्सव मनाने का अवसर है।वे बार-बार समझाते आत्मा परमात्मा के पास चली गई है। यह आनंद की बात है। उनके इसी विश्वास ने मृत्यु के भय को जीत लिया था।

4. **भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत करें।**

उत्तर- बाल गोविंद भगत मंझोले कद के गोरे- चिट्टे आदमी थे। उम्र 60 से ऊपर की थी। बाल पके हुए थे। लंबी दाढ़ी या जटा जूट नहीं थी। किंतु चेहरे पर सफेद दाढ़ी जगमगाती

रहती थी। कपड़े काफी कम पहना करते थे, कमर में एक लंगोटी मात्रा। सिर पर कबीर-पंथियों सी टोपी पहनते थे। जाड़े के दिनों में काली कमली ओढा करते थे और मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन लगा रहता था। गले में तुलसी की माला बंधी रहती थी। हरेकअवसर पर कबीर के पदों को हाथों में खंजड़ी लिए गाया करते थे। इस तरह से हम देखते हैं कि बाल गोविंद भगत का व्यक्तित्व भक्ति भाव में डूबे गायक भक्त की तरह था। उनके लिए भगवत भजन जीवन का आधार था । उनके गीतों को सुनने वाले भी मंत्रमुग्ध हो जाते थे; संग -संग गीतों को गुनगुनाने और ताल पर नृत्य करने लगते थे।

इस प्रकार वह एक सशक्त व्यक्तित्व एवं स्पष्ट चरित्र के मालिक थे।

5. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

उत्तर- बाल गोविंद भगत की दिनचर्या अन्य लोगों की दिनचर्या से भिन्न होने के कारण अचरज की बात बन चुकी थी। सामान्य लोगों की तरह वह भी गृहस्थ थे, गृहस्थ होने के बावजूद ईश्वर भक्ति में तल्लीनता कबीरपंथी गायन में साफ - साफ दिखाई देती है। गीतों के माध्यम से वह प्रभु से जुड़े हुए थे। आम जीवन की सारी कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए, परमात्मा का बोध अचरज की बात क्यों न हो? अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर शोक मनाने के बजाएं उत्सव मनाने का आग्रह अचरज की ही तो बात है।

हम उनके दिनचर्या की बात करें तो पता चलता है कि सुबह और शाम कबीर के पदों के गायन में बिताता है। उनके जीवन के आदर्श इतने ऊंचे थे कि कभी किसी से झूठ नहीं बोलते थे। किसी से झगड़ा भी नहीं करते थे। सब के साथ खुश रहा करते थे। किसी के साथ खामखाह झगड़ा भी नहीं करते थे यहां तक कि किसी की चीज बिना पूछे छुते नहीं थे। अपने खेत में पैदा होने वाले अनाज को वह कबीर के दरबार ले जाते और वहां प्रसाद स्वरूप जो प्राप्त होता उसे भेंट स्वरूप ग्रहण करते उसी से गुजर चलाते ।

इस प्रकार उनकी दिनचर्या में पदों को गाना, गृहस्थी के कार्य करना, प्रभातिया संत समागम आदि में जीवन बीतना सभी अचरज के कारण थे।

6. पाठ के आधार पर बाल गोविंद भगत के मधुर गायन की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर- इस पाठ की प्रमुख विशेषता है बालगोबिन भगत का मधुर गायन। उनके गीतों में ईश्वर प्राप्ति की सच्ची तान सुनाई देती है। स्वर इतना मोहक और आरोही होता है कि सुनने वाले लोग मोहित हो जाते हैं । लोग साथ - साथ झुमने और नाचने लगते थे। लोगों के काम और अधिक लय के साथ चलने लगते थे। बच्चे, महिलाएं, पुरुष सभी मदहोश हो जाते थे। उनके गायन के बोल कुछ संगीत की सीढ़ी से चढ़कर स्वर्ग में ईश्वर के चरणों में जा रहे थे और कुछ स्वर इस पृथ्वी के लोगों को अपने कर्म निष्काम होकर करने की प्रेरणा दे रहे थे। यहीउनके गायन की प्रमुख विशेषता है।

7. कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख करें।

उत्तर- वैसे तो बाल गोविंद भगत सरल एवं सौम्य चरित्र के व्यक्ति थे किंतु उनके स्वभाव में खरापन था। यही खरापन शायद उन्हें यह आदेश देता था कि वे सामाजिक मान्यताएं जिनसे किसी का अहित होता है उसे तोड़ दे। समाज में यह मान्यता हमेशा रही है कि महिलाएं श्मशान नहीं जातीं, तथा अपने पति को मुखाग्नि तो कभी नहीं देती। बाल गोविंद भगत ने इस रुढ़ी को तोड़ा और अपनी बहु से ही अपने इकलौते बेटे को मुखाग्नि दिलाई। उस समय की प्रचलित मान्यता यह भी थी कि विधवा होकर महिलाएं अपने ससुराल में ही अपना जीवन बिताती थी। बालगोविंद भगत ने इसे भी स्वीकार नहीं किया बल्कि अपनी विधवा बहू को उसके भाई को बुलाकर मायके भेज दिया और कहा कि इसका दूसरा विवाह करा देना। भगत के जीवन की सबसे बड़ी घटना थी उनके इकलौते बेटे की मृत्यु आमतौर पर बेटे या संतान की मृत्यु पर माता-पिता टूट जाते हैं । खूब रोते हैं । बहुत लोग तो दुख से बाहर निकल ही नहीं पाते । लेकिन बालगोबिन भगत अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर रो नहीं रहे हैं। उत्सव मना रहे हैं कह रहे हैं कि आत्मा अपने प्रेमी परमात्मा के पास जा चुकी है तो कैसा शोक मनाना। अपनी इकलौती बहु को भी रोने से मना करते हैं। इन घटनाओं के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि भगत प्रचलित सामाजिक बेकार मान्यताओं को नहीं मानते थे। हम यह भी देखते हैं कि एक सामान्य सा दिखने वाला गृहस्थ साधु चुपचाप समाज की रूढियों को तोड़ने में लगा है जिसे देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित थे ।

8. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियां किस तरह चमत्कृत कर देती थी? उस माहौल का शब्द चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- धान रोपने का समय वैसे तो अपने आप में एक त्योहार का समय होता है। इस समय भारत के समुचे गांव में धान की रोपाई होती रहतीहै। प्रत्येक जन मानस आनंद का अनुभव करता रहता है। ऐसी ही परिस्थिति में जब बालगोबिन भगत कबीर के निर्गुण भक्ति से पगे पदों को गाते हैं तो एक अलग तरह का आनंद बिखर जाता है। खेतों में बैठे नर- नारी और बच्चे झुमने लगते हैं। मेढ़ पर बैठी औरतों का मन गीत गाने के लिए बेचैन हो उठता है। किसानों की उंगलियों में एक अलग तरह का जादू आता है जिससे वे धान के पौधों को क्रमिक लय से बिछाने लगते हैं। किसानों के पैर संगीत की थापों पर चलने लगते हैं। इस प्रकार उनके संगीत का जादू सारे वातावरण में छा जाता है।

अति संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में दें:-

1. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म कब हुआ?

उत्तर- सन 18 99 में ।

2. उनके माता-पिता की मृत्यु कब हुई?

उत्तर- बचपन में।

3. उनके आरंभिक वर्ष किस प्रकार बीते?

उत्तर- कठिनाइयों में।

4. वे स्वाधीनता आंदोलन सक्रिय प्रतिभागी के रूप में कब जुड़े?

उत्तर- सन 1920 में।

5. **उनकी मृत्यु कब हुई?**

उत्तर- सन 1968 में।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कम से कम 30 से 50 शब्दों में दें:-

1. **रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म कब और कहां हुआ ?उनके जीवन के आरंभिक वर्ष कैसे बीते थे?**

उत्तर- रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन 18 99 में ग्राम बेनीपुरी जिला बिहार में हुआ था। माता पिता की मृत्यु बचपन में ही हो जाने के कारण जीवन के आरंभिक वर्ष कठिनाइयों से भर गए थे।

2. **उनकी संपूर्ण रचनाओं का संकलन कहां प्रकाशित है? कुछ रचनाओं के नाम लिखें।**

उत्तर- उनकी संपूर्ण रचनाओं का संकलन बेनीपुरी रचनावली के आठ खंडों में संकलित है। प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं:- कहानी:- चिता के फूल

संस्मरण:- जंजीरें और दीवारें

रेखा चित्र:- माटी की मूरतें

उपन्यास:- पतितो के देश में

यात्रा वृतांत:- पैरों में पंख बांधकर

3. **रामवृक्ष बेनीपुरी की रचनाएं किस उम्र से छपने लगी ? उन्होंने किस तरह के पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया ? पत्रिकाओं के नाम लिखें।**

उत्तर- 15 साल की छोटी उम्र से उनकी रचनाएं पत्र पत्रिकाओं में छपने लगी। वे अत्यंत प्रतिभाशाली पत्रकार थे। उन्होंने दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक, पत्र-पत्रिकाओं का सफल संपादन किया। जिसमें किसान, मित्र, तरुण भारत, युवक ,बालक जनता, योगी, जनवाणी और नई धारा आदि उल्लेखनीय हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **बाल गोविंद भगत को कबीर पर अपार श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?**

उत्तर- भगत जी के कबीर के प्रति अगाध श्रद्धा का कारण कबीर पंथ के श्रेष्ठ सिद्धांत रहे होंगे। कबीर पंथ भक्ति काल का सर्वश्रेष्ठ पंथ था, जिसमें व्यक्ति गृहस्थ धर्म का निर्वाह करते हुए साधु स्वभाव धारण करके जीवन जी सकता था। कबीर अपने आप में एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थे। इस पंथ को प्रत्येक व्यक्ति अपना सकता था। बाल गोविंद भगत जी भी शायद इसलिए कबीर पंथ को पसंद करते थे चूँकि कबीर गृहस्थ जीवन पालन करते हुए भगवत साधना करते थे। भगत जी का भी अपना परिवार था जिसका पालन पोषण करते हुए वह सरल सहज आडंबर रहित भक्ति मार्ग का अनुसरण करने में स्वयं को समर्थ पाते थे तभी उन्होंने इस पंथ को अपने जीवन में अपनाया होगा।

2. **भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर यह सिद्ध होता है कि मोह और प्रेम में अंतर होता है?**

उत्तर- भगत जी के जीवन की सबसे बड़ी घटना उसके इकलौते पुत्र की मृत्यु थी, इस घटना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मोह और प्रेम में अंतर होता है।मोह संसार की वस्तु है लेकिन प्रेम अलौकिक होता है। पुत्र के प्रति मोह की भावना ही बालगोबिन भगत को उसके मंदबुद्धि होने पर उस पर तरस कर उसके परिवार के भरण- पोषण का दायित्व निभाने के लिए विवश करती है। संतान के इसी मोह ने भगत जी को उसके परिवार के कर्तव्यों का निर्वाह करते दिखाई देते हैं। साथ ही हम देखते हैं कि भगत जी के मन में परमात्मा के प्रति प्रेम की भावना भरी हुई थी। वे मानते थे कि परमात्मा -प्रेम पुत्र- मोह से उत्तम है इसलिए अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु के बाद भगत जी रोने के बजाय गीत गाकर उत्सव मनाते हैं। उन्होंने माना कि विरहनी आत्मा अपने प्रेमी परमात्मा से मिल चुकी है। अतः आत्मा की इसी चरम अवस्था को ही आनंद मानना चाहिए। मोह बंधन का कारण है, जबकि प्रेम इसके विपरीत बंधन से मुक्ति है।

बहु वैकल्पिक प्रश्न

1. **पाठ बालगोबिन भगत में बाल गोविंद भगत कबीर के पदों को बड़ी आत्मीयता से गाते थे, उन गीतों में कौन सा भाव निहित था?**

क. प्रभु- मिलन का ख. देशभक्ति का
ग. वियोग का घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तर- क. प्रभु- मिलन का

2. **बालगोबिन भगत जी कौन सा व्यवसाय करते थे?**

क. खेती ख. दुकानदारी
ग. पुस्तक- विक्रेता घ. कुछ नहीं

उत्तर- क. खेती

3. **भगत जी अपने बेटे का खास ख्याल क्यों रखा करते थे?**

क. बेटा ईमानदार था
ख. बेटा समझदारथा
ग. बेटा सुस्त और बोदा था
घ. बेटा सुंदर था

उत्तर- ग. बेटा सुस्त और बोदा था।

4. **बाल गोविंद भगत की टोपी कैसी थी?**

क. सूरदास जैसी ख. जैन मुनियों जैसी
ग. कबीर-पंथियोंजैसी घ. गांधी टोपी जैसी

उत्तर :- ग कबीर-पंथियों जैसी ।

5. **बाल गोविंद भगत ने अपने बेटे का दाह संस्कार अपनी पुत्रवधू से करवाया इस कार्य से भगत जी के किस विचारधारा का परिचय मिलता है?**

क. रूढ़िवादिता का विरोध एव प्रगतिशील विचारधारा का
ख. रूढ़िवादी विचारधारा का
ग. उनकी संकुचित मानसिकता का
घ. क और ख दोनों

उत्तर- क. रूढ़िवादिता का विरोध एवं प्रगति स्थाई विचारधारा का

गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर सही उत्तर का चयन करें:-

बालगोबिन भगत मंझौले कद के गोरे चिट्टे आदमी थे। साठ से ऊपर के ही होंगे। बाल पक गए थे। लंबी दाढ़ी या जटा जूट तो नहीं रखते थे, किंतु हमेशा उनका चेहरा सफेद बालों से ही जगमग रहता। कपड़े बिल्कुल कम पहनते। कमर में एक लंगोटी मात्र और सिर में कबीर-पंथियों-सी कनफटी टोपी। जब जाड़ा आता एक काली कमली ऊपर से ओढ़े रहते। मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन जो नाक के एक छोर से ही ,औरतों के टीके की तरह शुरू होता। गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बांधे रहते।

6. बालगोबिन भगत का कद कैसा था?

क. नाटा ख. लंबा
ग. मंझौला घ. छोटा

उत्तर- ग . मंझौला

7. बालगोबिन भगत की उम्र कितनी थी?

क. 50 के पार ख. 60 के पार
ग. 70 के ऊपर घ. 40 के ऊपर

उत्तर- ख. 60 के पार

8. बालगोबिन भगत पाठ के लेखक का क्या नाम है?

क. शिवपूजन सहाय ख. स्वयं प्रकाश
ग. रामवृक्ष बेनीपुरी घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तर- ग. रामवृक्ष बेनीपुरी

9. बालगोबिन भगत किसकी जड़ों की बेडौल माला बांधे रहते थे?

क. आंवले की ख. नीम की
ग. धतूरे की घ. तुलसी की

उत्तर- **घ.** तुलसी की

10. पाठ बालगोबिन भगत गद्य लेखन की कौन सी विधा है?

क. कहानी ख. उपन्यास
ग. अंक घ. रेखा- चित्र

उत्तर- **घ.** रेखा- चित्र

अध्याय 11 लखनवी अंदाज

- यशपाल

प्र 1 लेखक यशपाल का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- लेखक यशपाल का जन्म 1930 ईस्वी में पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ।उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा कांगड़ा से प्राप्त किया एवं बीए लाहौर के नेशनल कॉलेज से प्राप्त किया।

वे लाहौर में भगत सिंह और सुखदेव से मिले ,वहीं से उनमें क्रांतिकारी की भावना जगी सन 1976 में उनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ - ज्ञानदान, तर्क का तूफान , पिंजड़े की उड़ान, फूलों का कुर्ता आदि कहानी संग्रह है। झूठा - सच, अमिता, दिव्या ,पार्टी कामरेड ,दादा कामरेड, तेरी मेरी उसकी बात आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं।

प्र 2 लखनवी अंदाज पाठ का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- लेखक यशपाल द्वारा रचित लखनवी अंदाज एक व्यंग्य लेख है। ऐतिहासिक रूप से लखनऊ का अपना इतिहास रहा है ,इसे नवाबों का शहर कहा गया है ।लेखक ने इस पाठ में पतनशील सामंती वर्ग पर प्रहार किया है उन्होंने इस पाठ के माध्यम से बनावटी जीवन जीने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष किया है।

लेखक खाली समय में कहानी का विषय ढूंढ रहे थे, उन्हें कुछ काम नहीं था। वे केवल कहानी और पात्रों की खोज के उद्देश्य से ट्रेन के सेकंड क्लास की बोगी में चढ़ जाते हैं, उन्हें वहाँ एक नवाबी किस्म का व्यक्ति मिलता है जिसने अपने साथ तौलिए में लपेटा हुआ खीरा रखा है। लेखक को वह शक की निगाह से देखता है,उसे थोड़ी असुविधा होती है क्योंकि वह लेखक के पहुंचने से नाखुश लगता है ।थोड़ी देर बाद वह उस खीरे को चार भागों में काटता है और नमक मिर्च डालकर लेखक को देने का प्रस्ताव देता है लेकिन लेखक इसे मना करता है । इसके बाद व्यक्ति उस खीरे को ना खाकर उसे ट्रेन की खिड़की से फेंक देता है।

बहु वैकल्पिक प्रश्न उत्तर-

प्र 1. लखनवी अंदाज के लेखक कौन हैं?

क. प्रेमचंद ख. यशपाल
ग. निराला घ. नागार्जुन

उत्तर- ख. यशपाल

प्र 2. लखनऊ किस प्रदेश की राजधानी है?

क. उत्तर प्रदेश ख. मध्य प्रदेश
ग. हिमाचल प्रदेश घ. आंध्र प्रदेश

उत्तर- क. उत्तर प्रदेश

प्र 3. ट्रेन के किस क्लास में लेखक सफर कर रहा था?

क. फर्स्ट क्लास ख. सेकंड क्लास
ग. थर्ड क्लास घ. सामान्य बोगी

उत्तर- ख. सेकंड क्लास

प्र 4. लेखक यशपाल का जन्म कब हुआ था?

क. 1803 ईसवी में ख. 1903 ईस्वी में
ग. 1973 ईस्वी में घ. 1963 ईस्वी में

उत्तर- ख. 1903ईस्वी में

प्र 5. लखनवी अंदाज किस प्रकार की रचना है?

क. व्यंग्य ख. उपन्यास
ग. कहानी। घ. निबंध

उत्तर- क. व्यंग्य

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर-

प्र 1. लेखक यशपाल की मृत्यु कब हुई?

उत्तर- 1976में।

प्र2. लेखक यशपाल के किसी एक उपन्यास का नाम बताएं।

उत्तर- झूठा सच

प्र 3. ट्रेन में यात्रा करते समय लेखक किससे मिलता है?

उत्तर- नवाबी नस्ल के एक व्यक्ति से।

प्र 4. लेखक ट्रेन में किस उद्देश्य से यात्रा कर रहा था?

उत्तर- कहानी की तलाश में।

प्र 5. नवाबी नस्ल के व्यक्ति ने लेखक को क्या देने की पेशकश की थी?

उत्तर- खीरा

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर-

प्र 1. लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों खरीदा था?

उत्तर- लेखक को नई कहानी और नए पात्रों की तलाश थी उन्हें लगता था कि ट्रेन में सफर करने के क्रम में खिड़कियों से प्राकृतिक नजारा देखने के क्रम में नई कहानी एवं नए पात्र मिल जाएंगे इसलिए उन्होंने सेकंड क्लास का टिकट खरीदा था।

प्र 2. नवाब ने खीरे के फांकों को खिड़की से बाहर क्यों फेंक दिया?

उत्तर- नवाबी नस्ल के उस सफेदपोश व्यक्ति के ठीक सम्मुख लेखक बैठा हुआ था। उसने देखा कि उस व्यक्ति ने खीरे को बड़े तरीके से काटा और लेखक को भी देने का प्रयास किया लेकिन लेखक ने मना कर दिया। नवाबी नस्ल के उस व्यक्ति ने लेखक को अपनी रईसी दिखाने के लिए खीरे के फांकों को खिड़की से बाहर फेंक दिया।

प्र 3. लेखक ने खीरा खाने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर- लेखक सेकंड क्लास की बोगी में प्रवेश करते हैं ।उसने नवाबी नस्ल के उस व्यक्ति को देखा और समझ गया

कि उसे लेखक के पहुंचने से अच्छा नहीं लगा ।जब उसने पहली बार खीरा देने की पेशकश की तो लेखक ने मना कर दिया। जब दूसरी बार फिर यही बात दोहराई तो उन्होंने अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए पुनः मना कर दिया।

प्र 4. लखनवी अंदाज पाठ में लेखक ने मुख्यतः किस पर व्यंग्य किया है?

उत्तर- लखनवी अंदाज पाठ में लेखक ने पतनशील सामंती वर्ग पर व्यंग्य किया है। उन्होंने इस पाठ के माध्यम से दिखावटी और बनावटी जीवन जीने वाले लोगों पर कटाक्ष किया है। उन्होंने देखा कि नवाबी नस्ल के उस व्यक्ति ने कैसे खीरे के फांको को सूँघकर फेंक दिया है यह केवल लेखक को दिखाने के लिए था।

प्र 5. लेखक को ट्रेन में सफर करने के क्रम में नई कहानी और पात्र कैसे मिल जाते हैं?

उत्तर- लेखक नई कहानी और पात्र की तलाश के उद्देश्य से ही ट्रेन में सफर कर रहा था। उसे यह उम्मीद नहीं थी कि नवाबी नस्ल का वह व्यक्ति ही उसकी नई कहानी का पात्र होगा लेकिन उनकी दिखावटी और बनावटी व्यवहार के कारण लेखक के लिए नवाबी नस्ल का वही व्यक्ति उनकी अगली कहानी का पात्र बन गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर-

प्र 1. लेखक को नवाबी नस्ल के सफेदपोश व्यक्ति का व्यवहार कैसे दिखावटी और बनावटी लगा?

उत्तर- लेखक नई कहानी और नए पात्रों की तलाश में ट्रेन में सफर कर रहा था। एकांत की तलाश में उसने ट्रेन के सेकंड क्लास का टिकट खरीदा ,जब वह बोगी में घुसा तो लेखक की उम्मीद के विपरीत वहां नवाबी नस्ल का एक व्यक्ति बैठा हुआ था ।उनके पहुंचने से उस व्यक्ति को अच्छा नहीं लगा उसने सोचा कि सेकंड क्लास में सफर अन्य लोग नहीं कर सकते अथवा अन्य लोगों का ट्रेन के सेकंड क्लास में सफर करना उन्हें अच्छा नहीं लगा ।जब वह बैठता है तो देखता है , वह व्यक्ति बालम खीरा निकालता है और तरीके से काटता है ,उस खीरे के कटे हुए भागों में वह नमक_मिर्च छिड़कता है और उसे केवल सूंघ करके खिड़की के बाहर फेंक देता है। उस व्यक्ति ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसके सम्मुख लेखक बैठा हुआ था और वह लेखक को यह दिखाने का प्रयास कर रहा था कि वह कितना रईस है। इस प्रकार उस व्यक्ति का व्यवहार लेखक को बहुत बनावटी और दिखावटी लगा।

प्र 2. लेखक ने लखनवी अंदाज पाठ के माध्यम से सामंती विचार और व्यवहार पर प्रहार किया है। पाठ के आधार पर इसकी पुष्टि कीजिए।

उत्तर- नवाबी नस्ल के सफेदपोश व्यक्ति के चरित्र के माध्यम से लेखक ने सामंती विचार और व्यवहार पर प्रहार किया लेखक जब सेकंड क्लास के बोगी में चढ़ता है तो उस व्यक्ति को यह अच्छा नहीं लगता है उसे लगा होगा कि सेकंड क्लास की बोगी में कौन आ गया है उसने लेखक को उपेक्षा की दृष्टि से देखा और कुछ समय के बाद उन्होंने खुद लेखक से संपर्क करने का प्रयास किया लेखक संकोच भाव से उनसे मिला लेकिन कुछ समय के बाद उस व्यक्ति ने लेखक के सामने खीरे की फांकों को फेंक कर बनावटी और दिखावटी व्यवहार का नजारा पेश किया। लेखक को उस व्यक्ति से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा नहीं थी लेकिन कुछ समय के बाद वह समझ गया कि वह सामंती विचारों का शिकार है। ऐसे चरित्र वाले व्यक्ति अक्सर औरों के सामने दिखावा करते हैं। उनको देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि वह जितना दिखा रहा है, वही उसकी असली स्थिति है।वह लेखक को प्रभावित करने के लिए खीरे जैसी अपदार्थ वस्तु को फेंककर साबित कर दिया कि वह अपनी वास्तविक स्थिति से ज्यादा बन रहा है लेखक समझ गया कि वह सामंती विचारों से ग्रसित है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर-

प्र 1. लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भाव से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर- सेकंड क्लास के डिब्बे में जब लेखक चढ़ता है और देखता है कि वहां सफेदपोश व्यक्ति बैठा हुआ है ।वह व्यक्ति लेखक को देखकर असंतोष जाहिर करता है। ऐसा लगा मानो लेखक के आने से उसके एकांत में बाधा पड़ गई वह खिड़की से बाहर देखने का नाटक कर रहा था, इसके साथ ही साथ वह डिब्बे के चारों तरफ की स्थिति को टटोल रहा था लेकिन लेखक से नजर नहीं मिलाया लेखक को मालूम हो गया कि वह लेखक से बात करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं है।

प्र2. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा ,नमक - मिर्च बुर्का, अंततःसूंघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा ?उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर- नवाबों के व्यवहार में हमेशा दूसरों के सामने अपनी नवाबी जमाने की बात रहती है । इस प्रकार के व्यक्ति हमेशा अन्य समाज अथवा सामान्य समाज के व्यवहार से इतर अपना व्यवहार एवं चरित्र दिखाते हैं ।उन्हें सामान्य लोगों के जैसा व्यवहार करना अच्छा नहीं लगता है ।वे हमेशा दिखावटी व्यवहार करने के पक्ष में रहते हैं।जब वह लेखक से मिलता है,तो उसे अपनी नवाबी व्यवहार दिखाने का अवसर मिल जाता है ।उसका विचार था कि वह लेखक के सामने ऐसा व्यवहार कर लेखक को प्रभावित कर ले लेकिन लेखक इस बात को समझ जाता है। उनका ऐसा व्यवहार अंततः सामंती व्यवहार की ओर इशारा करता है।

प्र3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहां तक सहमत हैं?

उत्तर- बिना घटना अथवा पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती है। कहानी के लिए घटना एवं पात्रों का होना बहुत जरूरी है ।कहानी का अर्थ ही है - "क्या हुआ।" यदि कुछ घटना घटी ही नहीं तो "क्या हुआ" का पता कैसे चलेगा। अतः यशपाल के इस विचार से हम पूर्णतः सहमत हैं कि घटना और पात्रों के बिना कहानी नहीं लिखी जा सकती है।

प्र 4 आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?

उत्तर- ख्याली पुलाव।

पाठ – 12	मानवीय करूणा की दिव्य चमक –सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

कवि परिचय

जन्म-

सन् 1927 में, उत्तर प्रदेश, जिला- बस्ती

मृत्यु-

सन् 1983 में

काव्य संग्रह:-

काठ की घंटियाँ ,कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूँटियों पर टंगे लोग।

उपन्यास -

पागल कुत्तों का मसीहा , सोया हुआ जल

कहानी संग्रह-

लड़ाई

नाटक -

बकरी

बाल साहित्य -

भौं-भौं खौं खौं, बतूता का जूता, लाख की नाक

लेखों का संग्रह -

चरचे और चरखे

पुरस्कार -

साहित्य अकादमी पुरस्कार (खूँटियों पर टंगे लोग)

सार-

इस पाठ का संबंध फादर कामिल बुल्के से है। यह संस्मरण शैली में लिखा गया है। अपने को भारतीय कहने वाले फादर बुल्के का जन्म बेल्जियम (यूरोप) के रैम्सचैपल शहर में हुआ था। वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। फादर बुल्के ने प्रसिद्ध अंग्रेजी हिंदी कोश तैयार किया। वे पारंपरिक अर्थ में संन्यासी नहीं थे । लेखक के साथ फादर बुल्के का धनिष्ठ संबंध था। लेखक का मानना है कि जब तक रामकथा है, इस विदेशी भारतीय साधु को याद किया जाएगा तथा उन्हें हिंदी भाषा और बोलियों के अगाध प्रेम का उदाहरण माना जाएगा ।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

1. **फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी ?**

उत्तर- देवदार का वृक्ष आकार में लंबा - चौड़ा होता है एवं छायादार भी होता है। बड़े आकार का होने के कारण वह लोगों को छाया देकर शीतलता प्रदान करता है। उसी तरह फादर बुल्के परिमल की गोष्ठी में सबसे बड़े माने जाते थे। वे सबके साथ पारिवारिक रिश्ता बनाकर रखते थे ,सबके घरों के उत्सवों और संस्कारों में पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। हर व्यक्ति उनसे स्नेह और सहारा प्राप्त करता था। उनकी नीली आँखों में हमेशा वात्सल्य चमकता रहता था। इस कारण सबको उनकी उपस्थिति देवदार की छाया के समान प्रतीत होती थी।

2. **फादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है?**

उत्तर- फादर बुल्के बेल्जियम से भारत आए थे। भारत में रहकर वे यहाँ की संस्कृति में पूरी तरह रच बस गए थे।जब उनसे पूछा गया कि आपको अपने देश की याद आती है तो उन्होंने उत्तर दिया- मेरा देश तो अब भारत है।

यहाँ रहकर उन्होंने रामकथा के उद्भव और विकास पर शोध कार्य किया। फादर बुल्के ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए बहुत प्रयास किया ,'ब्लूबर्ड 'तथा 'बाइबिल' का हिंदी रूपांतरण किया एवं अंग्रेजी हिंदी का सबसे अधिक प्रामाणिक कोश तैयार किया। वे भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना से ओतप्रोत थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि फादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं।

3. **पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे फादर बुल्के का हिंदी प्रेम प्रकट होता है?**

उत्तर- इस पाठ में अनेक ऐसे प्रसंग आए हैं जिनसे फादर बुल्के का हिंदी प्रेम प्रकट होता है जैसे- फादर बुल्के ने इलाहाबाद से हिंदी में एम. ए. किया। 'रामकथा: उत्पत्ति और विकास'शोध प्रबंध प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रहकर 1950 में पूरा किया। इलाहाबाद में फादर बुल्के 'परिमल' नाम की साहित्यिक संस्था से जुड़े थे। वे वहां हिंदी भाषा व साहित्य से संबंधित गोष्ठियों में गंभीर बहस करते थे। उन्होंने एक नाटक 'ब्लू बर्ड' का हिंदी में 'नीलपंछी' के नाम से अनुवाद भी किया। फादर बुल्के रांची के सेंट जेवियर्स कॉलेज में हिंदी तथा संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए। उन्होंने अंग्रेजी - हिंदी कोश लिखा तथा बाइबिल का अनुवाद भी किया। फादर बुल्के हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे , हर मंच पर इस चिंता को प्रकट करते तथा इसके लिए अकाट्य तर्क देते थे। वे हिंदी वालों द्वारा हिंदी की उपेक्षा पर दुखी हो जाते।

4. **इस पाठ के आधार पर फादर कामिल बुल्के की जो छवि उभरती है उसे अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर- फादर कामिल बुल्के एक आत्मीय संन्यासी थे। वे इसाई थे इसलिए सफेद चोगा पहनते थे। अपने हर प्रिय जन के लिए उनके हृदय में ममता व अपनत्व की अमृतमयी भावना उमड़ती रहती थी । वे अपने प्रिय जनों को आशीषों से भर देते थे। भारत को अपना देश मानते हुए यहां की संस्कृति में रच बस गए थे। हिंदी के उत्थान के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। फादर बुल्के अपने स्नेहीजनों के व्यक्तिगत सुख-दुख का सदा ध्यान रखते थे। वे रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। उनके शब्द सबको स्नेह ,सांत्वना ,सहारा और करुणा से भर देते थे।

5. **लेखक ने फादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक ' क्यों कहा है?**

उत्तर- लेखक ने फादर कामिल बुल्के को मानवीय करुणा की दिव्य चमक कहा है क्योंकि फादर बुल्के उनके घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े होकर अपने आशीषों से भर देते थे। लेखक ने उनको

क्रोध में कभी नहीं देखा आवेश में देखा है और ममता तथा प्यार में लबालब छलकता महसूस किया है। वे लोगों के सुख - दुख में शामिल होकर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करते थे तथा उन्हें सांत्वना भी देते थे।

6. फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर- परंपरागत रूप से संन्यासी अलग जीवन जीते हैं, वह वैराग्य की जिंदगी जीते हैं धर्माचार में ही अपना समय व्यतीत करते हैं।

फादर बुल्के संन्यासी होते हुए भी अपने परिचितों के साथ गहरा लगाव रखते थे उनसे मिलने के लिए सदैव आतुर रहते थे तथा सबसे गले लग कर मिलते थे। वे सब के सुख दुख में शामिल होते । एक बार जिससे रिश्ता बना लेते, उसे कभी नहीं तोड़ते। सब के प्रति अपनत्व ,प्रेम और गहरा लगाव रखते थे।अन्य धर्म वालों के उत्सव -संस्कारों में भी घर के बड़े बुजुर्ग की भाँति शामिल होकर सबको अपने आशीषों से भर देते थे।इस आधार पर कहा जा सकता है कि फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग छवि प्रस्तुत की है।

7. आशय स्पष्ट कीजिए

क. नम आँखों को मिलना स्याही फैलाना है।

उत्तर- फादर बुल्के की मृत्यु पर उनके प्रियजन,परिचित और साहित्यिक मित्र इतनी अधिक संख्या में रोए कि उनको गिनना या उनके बारे में लिखना व्यर्थ स्याही खर्च करना है आशय यह है कि उनकी मृत्यु पर रोने वालों की संख्या बहुत अधिक थी।

ख. फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि जिस प्रकार एक उदास शांत संगीत को सुनते समय हमारा मन गहरे दुख में डूब जाता है उसी प्रकार फादर कामिल बुल्के को याद करने पर उनका करुणापूर्ण शांत व्यक्तित्व सामने आ जाता है उनके न रहने से मन में उदासी छा जाती है।

अति संक्षिप्त प्रश्न

1. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म कब हुआ था?

उत्तर- 1927 में

2. उन्होंने किस पत्रिका का संपादन किया?

उत्तर- पराग

3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को कौन - सा पुरस्कार मिला?

उत्तर- साहित्य अकादमी पुरस्कार

4. उन्हें साहित्य अकादमी किस रचना पर मिला?

उत्तर- खूँटियों पर टंगे लोग

5. सर्वेश्वर जी किस नाम से दिनमान में स्तंभ लिखते थे।

उत्तर- चरचे और चरखे

6. इस पाठ में चर्चित जहरबाद का क्या अर्थ है?

उत्तर - एक प्रकार का जहरीला तथा कष्ट साध्य फोड़ा

7. फादर बुल्के संन्यासी बनने से पहले किसकी पढ़ाई कर रहे थे?

उत्तर- इंजीनियरिंग

8. फादर बुल्के की स्मृति को किस भाँति बताया गया है?

उत्तर- किसी यज्ञ की पवित्र आग की आँच की भाँति।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. परिमल क्या है?

उत्तर- 10 दिसंबर 1944 को प्रयाग विश्वविद्यालय के साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले कुछ उत्साही युवक मित्रों द्वारा परिमल की स्थापना की गई। परिमल द्वारा अखिल भारतीय स्तर की गोष्ठियाँआयोजित की जाती थी ,जिनमें कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक आदि पर खुली आलोचना एवं उन्मुक्त बहस की जाती।

2. फादर बुल्के किस बात के लिए दुख एवं चिंता प्रकट करते थे?

उत्तर- फादर बुल्के की चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी । हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते । हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर उनको दुख होता था।

3. मानवीय करुणा की दिव्य चमक में लहलहाने वाला किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर- फादर कामिल बुल्के को मानवीय करुणा की दिव्य चमक में लहलहाने वाला कहा गया है क्योंकि बड़े से बड़े दुख में भी उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है अर्थात् उनके मुख से निकले हुए सांत्वना के शब्द बड़े से बड़े दुख में जादू की तरह काम करते थे।

4. फादर बुल्के के व्यक्तित्व का कौन - सा गुण आपको प्रभावित करता है?

उत्तर- फादर बुल्के के व्यक्तित्व की असीम ममता एवं अपनत्व मुझे प्रभावित करती है। वह हमेशा सभी को गले लगाने के लिए आतुर रहते थे। वे किसी से रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। जब भी दिल्ली आते, समय निकालकर गर्मी, सर्दी,बरसात झेलकर लेखक से जरूर मिलते चाहे दो मिनट के लिए ही सही । इससे उनका अपनत्व दिखाई देता है ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

1. मानवीय करुणा की दिव्य चमक नामक संस्मरण का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक ने इस पाठ के माध्यम से फादर बुल्के के स्नेहमय और करुणा पूर्ण व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है।

एक विदेशी होने के बाद भी फादर ने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्होंने भारत की संस्कृति को पूरी तरह से अपनाया। अंतिम समय तक हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने के लिए प्रयास किया। उन्होंने बाइबिल का हिंदी अनुवाद किया ताकि भारत के लोग बाइबिल को समझ

सकें। "रामकथा उत्पत्ति और विकास" पर उन्होंने शोध ग्रंथ लिखा। इस पाठ के द्वारा यह शिक्षा देने का प्रयास किया है कि एक विदेशी होने के बाद भी फादर भारत से इतना प्रेम करते थे उसी प्रकार भारतवासियों को अभी अपने देश की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

2. फादर बुल्के ने हिंदी के विकास में किस प्रकार योगदान दिया?

उत्तर- फादर बुल्के ने प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रहकर 1950 में रामकथा उत्पत्ति और विकास नामक शोध प्रबंध लिखा। उसके अध्याय परिमल में भी पढ़े गए थे। फादर ने मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का रूपांतर 'नील पंछी' नाम से किया। सैंट जेवियर्स कॉलेज, रांची में हिंदी तथा संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए। फादर ने अंग्रेजी- हिंदी कोश तैयार किया और बाइबिल का अनुवाद भी किया। वे जीवन भर हिंदी पढ़ते और पढ़ाते रहे।हिंदी को वे राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे इसके लिए हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते और इसके लिए अकाट्य तर्क देते। हिंदी की उपेक्षा करने पर उनको तकलीफ होती। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फादर बुल्के ने हिंदी के विकास में अनेक प्रकार से योगदान दिया।

3. मानवीय करुणा की दिव्य चमक पाठ में किस महापुरुष का वर्णन है? यह विशेषण उनकी किन विशेषताओं को दर्शाता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मानवीय करुणा की दिव्य चमक पाठ में हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान एवं महापुरुष फादर कामिल बुल्के का वर्णन है। फादर कामिल बुल्के के लिए यह विशेषण उनकी करुणा भरे ह्रदय को दर्शाता है। लेखक ने लिखा है कि उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था। उनमें अत्यधिक ममता, अपनत्व अपने हर प्रिय जन के लिए उमड़ता रहता था। दुख में वे अपने से जुड़े लोगों को सांत्वना देते थे । लेखक की पत्नी और पुत्र की मृत्यु पर भी उन्होंने लेखक को सांत्वना दी। जब भी वे किसी से मिलते उनके सुख-दुख के बारे में जरूर पूछते।उनके अंदर मानवीय करुणा की अपार भावना के कारण ही उनको मानवीय करुणा की दिव्य चमक कहा गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किनसे बात करना लेखक के लिए कर्म के संकल्प से भरना था?

क. मां से ख. बच्चों से
ग. लोगों से घ. फादर से

उत्तर- घ. फादर से

2. फादर ने 'जिसेट संघ' में दो वर्ष किसकी पढ़ाई की थी?

क. मेडिकल की ख. इंजीनियरिंग की
ग. धर्माचार की घ. इनमें से कोई

उत्तर- ग. धर्माचार की

3. फादर को याद करना लेखक के लिए कैसा संगीत सुनने जैसा अनुभव है?

क. मधुर ख. कर्कश
ग. उदास शांत घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तर- ग. उदास शांत

4. राष्ट्रभाषा के रूप में फादर किसे देखना चाहते थे?

क. उर्दू को ख. फारसी को
ग. हिंदी को घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तर - ग. हिंदी को

5. किसी के दुख में फादर का व्यवहार कैसा होता था?

क. उपेक्षित ख. आनंदपूर्ण
ग. कटु घ. सांत्वनापूर्ण

उत्तर- घ. सांत्वनापूर्ण

6. फादर बुल्के किस देश में जन्मे थे?

क. फ्रांस ख. बेल्जियम
ग. रूस घ. जर्मनी

उत्तर- ख. बेल्जियम

7. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' किस शैली में लिखा गया है?

क. कहानी ख. कविता
ग. निबंध। घ. संस्मरण

उत्तर- घ. संस्मरण

8. परिमल किसका नाम था?

क. एक साहित्यकार का
ख. एक पेड़ का
ग. एक साहित्यिक संस्था का
घ. एक फल का नाम

उत्तर- ग. एक साहित्यिक संस्था का

9. फादर बुल्के ने----------कोश तैयार किया।

क. समांतर कोश
ख. अंग्रेजी संस्कृत कोश
ग. अंग्रेजी हिंदी कोश
घ. अंग्रेजी फ्रेंच कोश

उत्तर- ग. अंग्रेजी हिंदी कोश

10. लेखक ने फादर की उपस्थिति की तुलना किस वृक्ष से की है?

क. देवदारू ख. नीम
ग. वटवृक्ष घ. शाल

उत्तर- क. देवदारू

अध्याय 13 एक कहानी यह भी

- मन्नू भंडारी

कवि परिचय

जन्म- सन 1931 में (मध्य प्रदेश के जिला - मंदसौर, गाँव - भानपुरा)

कहानी संग्रह- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु

उपन्यास- आपका बंटी , महाभोज

आत्मकथ्य- एक कहानी यह भी

सम्मान- हिंदी अकादमी शिखर सम्मान, भारतीय भाषा परिषद कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार

पाठ- परिचय

एक कहानी यह भी मन्नू भंडारी द्वारा आत्मपरक शैली में लिखी हुई आत्मकथ्य है। उन्होंने कोई सिलसिलेवार आत्मकथा नहीं लिखी है,अपने आत्मकथ्य में उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए हैं।

इस पाठ में यह बात बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दर्शाई गई है कि पहले लड़कियों को किस तरह की पाबंदियों का सामना करना पड़ता है।संकलित अंश में मन्नू जी के जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिताजी और उनकी कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष रूप से उभर कर आया है जिन्होंने आगे चलकर उनके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेखिका ने बड़े रोचक ढंग से एक साधारण लड़की के असाधारण बनने की प्रारंभिक पड़ावों का वर्णन किया है। सन '46-47' की आंधी से मन्नू जी भी अछूती नहीं रही । छोटे शहर से होते हुए भी उन्होंने आजादी की लड़ाई में भागीदारी की, उसमें उसका उत्साह, ओज, संगठन - क्षमता और विरोध करने का तरीका देखते ही बनता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

1• **लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से किन लोगों का प्रभाव पड़ा?**

उत्तर - लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से 2 लोगों का प्रभाव पड़ा-

पिता का प्रभाव- लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों रूपों में प्रभाव पड़ा। लेखिका की तुलना उनसे दो साल बड़ी बहन सुशीला से करने के कारण उनके मन में हीन भावना घर कर गई । इसके अतिरिक्त उन्होंने लेखिका को राजनैतिक परिस्थितियों से अवगत कराया।

प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव- प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका की साहित्यिक समझ का दायरा बढ़ाया और अच्छी पुस्तकों को चुनकर पढ़ने में मदद की। इसके अलावा उन्होंने लेखिका में साहस एवं आत्मविश्वास भर दिया जिसके फलस्वरूप भी वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी।

2• **इस आत्मकथा में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?**

उत्तर- लेखिका के पिता का मानना था कि रसोई में काम करने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने - खाने तक ही सीमित होकर रह जाती हैं और अपनी प्रतिभा को निखार नहीं पाती हैं। प्रतिभा को भट्टी में झोंकने वाली जगह होने के कारण ही उन्होंने रसोई को 'भटियारखाना' कह कर संबोधित किया है।

3• **वह कौन सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को ना अपनी आंखों पर विश्वास हो पाया और ना अपने कानों पर?**

उत्तर- एक बार लेखिका के कॉलेज से पत्र आया कि आकर मिले और बताएं कि लेखिका की गतिविधियों के कारण उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए? लेखिका के पिताजी क्रोध से भन्नाते हुए कॉलेज गए। वहां जाने पर पता चला कि सारे कॉलेज की लड़कियों पर लेखिका का बहुत रौब है। सारा कॉलेज उन तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है। इस बात का पता चलते ही उनका मन लेखिका के प्रति गर्व से भर गया। आते वक्त उनके चेहरे पर खुशी थी पिता के इसी परिवर्तित व्यवहार को देखकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर।

4• **लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर- लेखिका की प्रायः अपने पिता से वैचारिक टकराहट होती रहती थी । पिता लेखिका को देश - समाज के प्रति जागरूक बनाना चाहते थे किंतु उसे घर तक ही सीमित रखना चाहते थे। वे उसके मन में विद्रोह और जागरण के स्वर भरना चाहते थे किंतु उसे सक्रिय नहीं होने देना चाहते थे लेकिन लेखिका के मन में युवा उन्माद था इसलिए घर की सीमा में रहना लेखिका के लिए मुश्किल हो गया था। वे देश की स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग ले रही थी। यहीं दोनों में टक्कर होती थी। विवाह के मामले में भी दोनों के विचार टकराए ।पिता नहीं चाहते थे कि लेखिका अपनी पसंद से राजेंद्र यादव से शादी करें परंतु लेखिका ने उनकी परवाह नहीं की ।

5• **इस आत्मकथा के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।**

उत्तर- सन् 1946- 47 का समय स्वतंत्रता आंदोलन का समय था। हर तरफ हड़तालें प्रभात फेरियाँ जुलूस और नारेबाजी हो रही थी।घर में पिता और उनके साथियों के साथ होने वाली गोष्ठियों और गतिविधियों ने लेखिका को भी जागरूक कर दिया था। प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से जोड़ दिया।जब देश में नियम कानून और मर्यादाएँ टूटने लगी तब पिता की नाराजगी के बाद भी उन्होंने पूरे उत्साह के साथ आंदोलन में भाग लिया। उनका उत्साह ,संगठन क्षमता और विरोध करने का तरीका देखते ही बनता था। वे चौराहों पर

बेझिझक भाषण नारेबाजी और हड़तालें करने लगीं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका रही।

अति संक्षिप्त प्रश्न

1• **मन्नू भंडारी का जन्म कब हुआ?**

उत्तर- सन् 1931

2• **मन्नू भंडारी के दो उपन्यासों के नाम लिखें।**

उत्तर- आपका बंटी ,महाभोज

3• **मन्नू भंडारी के एक कहानी संग्रह का नाम लिखें।**

उत्तर- त्रिशंकु

4• **मन्नू भंडारी को कौन-कौन से पुरस्कार मिले हैं?**

उत्तर- हिंदी अकादमी के शिखर सम्मान, भारतीय भाषा परिषद् कोलकाता, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार आदि।

5• **एक कहानी यह भी पाठ के माध्यम से बताइए कि लेखिका की दो साल बड़ी बहन का क्या नाम था?**

उत्तर- सुशीला

6• **जैनेंद्र का कौन सा उपन्यास लेखिका को पसंद आया था?**

उत्तर- सुनीता

7• **लेखिका और उनके पिता के बीच टकराव का क्या कारण था?**

उत्तर- विचारों की भिन्नता

8• **डॉक्टर साहब का क्या नाम था?**

उत्तर- डॉक्टर अंबालाल

9• **डॉक्टर साहब कौन थे?**

उत्तर - लेखिका के पिता के मित्र

10• **लेखिका के मन में कौन सी हीन भावना ग्रंथि बन गई थी?**

उत्तर- काले रंग की होना

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **सन् 1946-47 में भारत के वातावरण का वर्णन करें।**

उत्तर- सन् 1946-47 में भारत का वातावरण पूरे दमखम एवं जोश खरोश से भरपूर था। प्रभात फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस ,भाषण हर शहर का चरित्र था और इन सब से जुड़ना हर युवा का उन्माद। युवकों का खून लावा बन चुका था। आंदोलन में भाग लेने के लिए युवकों के साथ-साथ युवतियाँ भी निर्भीक थीं।

2• **आसन्न अतीत से क्या तात्पर्य है? वहां किस प्रकार जड़ जमाए रहता है?**

उत्तर- आसन्न अतीत का तात्पर्य है - अभी-अभी बीता हुआ हमारा समय। हमारा यही बीता हुआ समय हमारे संस्कारों में बस जाता है। वह हमारी आदतों में शामिल हो जाता है और हम वैसे ही बन जाते हैं जैसा हमारे साथ घटित होता है। जैसे लेखक के पिताजी के शक्की स्वभाव की झलक उनमें भी दिखाई देती है।

3• **लेखिका मन्नू भंडारी की कहानियों के अधिकांश पात्र कहां के थे? इससे किस तथ्य का बोध होता है?**

उत्तर- लेखिका मन्नू भंडारी की कहानियों के अधिकांश पात्र उनके मोहल्ले के थे। इससे पड़ोस के लोगों के साथ उनका संबंध दिखाई देता है। उस जमाने में पूरा मोहल्ला अपने घर के समान ही था, मोहल्ले के अधिकांश घर तो परिवार का हिस्सा ही थे।

4• **मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के इंदौर के दिनों के बारे क्या जानकारी दी है?**

उत्तर - मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की जानकारी देते हुए कहा कि वहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वो समाज -सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ - आठ ,दस -दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे- ऊँचे ओहदों पर पहुंचे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1• **भंडारी ने अपनी माँ के किन गुणों की चर्चा अपनी आत्मकथा में की है ?**

उत्तर- मन्नू भंडारी की माँ के अन्दर धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी। वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित - अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ नहीं माँगा और न कुछ चाहा। मन्नू भंडारी ने अपनी माँ की इन्हीं त्याग,सहिष्णुता एवं सहनशील आदि गुणों की चर्चा अपने आत्मकथा में की है।

2• **लेखिका के व्यक्तित्व निर्माण में उसकी परिस्थितियों का क्या योगदान है?**

उत्तर- लेखिका के व्यक्तित्व निर्माण में उसकी परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान है। लेखिका के घर में आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं।क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण उनकी कुर्बानियों से लेखिका का मन आक्रांत रहने लगा।लेखिका के पिताजी ने उन्हें रसोई से दूर रखकर जागरूक नारी बनने के लिए प्रेरित किया। लेखिका के पिताजी विद्वान लेखक थे वे सदा पुस्तकों से घिरे रहते थे। पुस्तकों , पत्रिकाओं और अखबारों के बीच पढ़ते रहते थे। इससे लेखिका में साहित्य के प्रति रुचि बढ़ी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनमें घरेलू परिस्थितियों के कारण ही उनके मन में साहित्य के प्रति अभिरुचि बढ़ी एवं राष्ट्रीय आंदोलन में उन्होंने बढ़- चढ़कर भाग लिया।

3• **मनुष्य के जीवन में आस - पड़ोस का बहुत महत्व होता है। परन्तु महानमरों में रहने वाले लोग प्रायः पड़ोस कल्चर से वंचित रह जाते है। इस बारे में अपने विचार लिखें।**

उत्तर - पड़ोस कल्चर हमें अधिक सुरक्षा और अपनत्व प्रदान करती है। हमारा जीवन सामाजिक बना रहता है। बचपन में लेखिका सम्पूर्ण मुहल्ले को अपना घर मानती थी। लेकिन आज हमारे बीच फ्लैट कल्चर का इतना विस्तार हो रहा

है कि हमारा जीवन फ्लैट में सिमट कर रह गया है। आज नगरों और महानगरों में पड़ोस - संस्कृति खत्म होती जा रही है। हमारा जीवन पिंजड़े में सिमट कर रह गया है। हमें बगल में रहने वालों से कोई संबंध नहीं रह गया है । सुख दुख में कोई साथी नहीं पूरा जीवन एकाकी व्यतीत करना पड़ रहा है इससे मानवीय एवं सामाजिक संवेदना लुप्त होती जा रही है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1· मन्नू भंडारी का बचपन कहां बीता था?

क· कोलकाता   ख· जयपुर
ग· कानपुर   घ· अजमेर

उत्तर- घ· अजमेर

2· मन्नू भंडारी की हिंदी प्राध्यापिका का क्या नाम था?

क· शीला अग्रवाल   ख· मनीषा यादव
ग· शालिनी गुप्ता   घ· ज्योति गोयल

उत्तर- क· शीला अग्रवाल

3· लेखिका की मां का स्वभाव कैसा था?

क· त्यागशील   ख· लालची
ग· क्रोधी।   घ· लड़ाई करने वाला

उत्तर- क· त्यागशील

4· लेखिका के पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने को क्यों कहते थे?

क· वे उसे बहस करना सिखाना चाहते थे
ख· वे उसे देश की स्थिति से परिचित कराना चाहते थे
ग· औपचारिकता वश बैठने को कहते थे
घ· लेखिका की इच्छा के कारण

उत्तर- ख· वे उसे देश की स्थिति से परिचित कराना चाहते थे।

5· सन् 46-47 के दिनों में देश का माहौल कैसा था?

क· देश में युद्ध की स्थिति बनी हुई थी।
ख· स्वतंत्रता की तैयारी चल रही थी।
ग· देश को स्वतंत्र कराने का जोश उफान पर था।
घ· संविधान तैयार किया जा रहा था।

उत्तर- ग· देश को स्वतंत्र कराने का जोश उफान पर था।

6· लेखिका के पिता शक्की स्वभाव के क्यों थे?

क· चिंता के कारण
ख· गरीबी कारण
ग· अपनों के विश्वासघात के कारण
घ· इनमें से कोई नहीं

उत्तर- ग· अपनों के विश्वासघात के कारण

7· किसकी जोशीली बातों ने लेखिका के रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया?

क· महात्मा गाँधी की   ख· पिता की
ग· शीला अग्रवाल की   घ· क्रांतिकारियोंकी

उत्तर- ग· शीला अग्रवाल की

8· लेखिका के पिता ने उसका रौब देखकर क्या अनुभव किया ?

क· प्रसन्नता।   ख· गर्व
ग· क्रोध   घ· चिंता

उत्तर - ख·गर्व

9 · इस लेख में लेखिका का कौन सा व्यक्तित्व सामने आया है ?

क· गुस्सैल   ख· उदंड
ग· शर्मीला   घ· स्वतंत्रता सेनानी

उत्तर - घ· स्वतंत्रता सेनानी

10· लेखिका के किस व्यवहार से तंग आकर प्रिंसिपल ने लेखिका के पिता को बुलवाया ?

क· आंदोलनकारी   ख· बिगडैल
ग· झगड़ालू।   घ· अशिष्ट

उत्तर- क· आंदोलनकारी

अध्याय 14 नौबतखाने में इबादत

- यतीन्द्र मिश्र

प्र 1 लेखक यतींद्र मिश्र का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- लेखक यतींद्र मिश्र का जन्म सन 1977 ईसवी में अयोध्या उत्तर प्रदेश में हुआ उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से हिंदी में एम ए . किया ।वह आजकल स्वतंत्र लेखन के साथ-साथ अर्धवार्षिक "सहित" पत्रिका का संपादन कर रहे हैं ।सन 1999 ईस्वी से वे "विमला देवी फाउंडेशन" का संचालन कर रहे हैं , इस फाउंडेशन का उद्देश्य है-हिंदी साहित्य एवं अन्य कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन।

यतींद्र मिश्र के तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं - यदा-कदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएँ, इयोढ़ी पर अलाप। इसके अलावा लेखक ने मशहूर शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी के जीवन और संगीत साधना पर आधारित पुस्तक "गिरिजा" लिखी है ।साथ ही साथ "थाती" नामक कला पर केंद्रित पत्रिका का संपादन भी किया।

युवा रचनाकार यतींद्र मिश्र को भारत भूषण अग्रवाल सम्मान, कविता सम्मान ,हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार, ऋतुराज सम्मान आदि कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

प्र 2 यतींद्र मिश्र द्वारा रचित "नौबतखाने में इबादत" पाठ का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर_ युवा रचनाकार यतींद्र मिश्र द्वारा रचित "नौबतखाने में इबादत" बिस्मिल्लाह खान के जीवन एवं संगीत साधना पर आधारित व्यक्ति - चित्र है। इस पाठ में लेखक ने महान शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खान का परिचय तो दिया ही है, साथ ही साथ अपनी कला के प्रति उनके लगन, और उनकी साधना का भी वर्णन किया है। उन्होंने इस पाठ के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि संगीत एक साधना है, इसका अपना एक शास्त्र है, इसको जाने बिना संगीत को नहीं जिया जा सकता है ।

संगीत कला व्यक्ति के जीवन का श्रृंगार है ।यह श्रृंगार कठिन तपस्या एवं साधना से प्राप्त होती है बिस्मिल्लाह खान ने इस कला के संवर्धन एवं विकास के लिए कठिन साधना की है ।यही कारण है कि उन्होंने 80 वर्ष के समय तक शहनाई के माध्यम से संगीत की सेवा की और शहनाई की धुन देश के चारों दिशाओं के साथ-साथ विश्व के कोने-कोने तक फैलाई।

इस पाठ में लेखक ने संक्षिप्त ही सही बिस्मिल्लाह खान के व्यक्तित्व एवं उनकी संगीत के प्रति सम्मान और समर्पण भाव का बखान करने का प्रयास किया है । यूँ कहे तो लेखक ने इस पाठ के माध्यम से महान शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खान के जीवन एवं संगीत साधना को गागर में सागर भरने जैसा प्रयास किया है ।रोचक शैली में लिखी गई यह व्यक्ति-चित्र आम एवं सुधी पाठकों को बार-बार पढ़ने के लिए आकर्षित और आमंत्रित करती है।

बहु वैकल्पिक प्रश्न उत्तर

प्र 1. नौबतखाने में इबादत पाठ किसके जीवन पर केंद्रित है?

क. बिस्मिल्ला खान के जीवन पर
ख. अब्दुल्ला खान के जीवन पर
ग. मोहम्मद दुल्ला खा के जीवन पर
घ. इनमें से कोई नहीं।

उत्तर_ क. बिस्मिल्लाह खान के जीवन पर

प्र 2. नौबतखाने में इबादत पाठ के लेखक कौन है?

क. सत्येंद्र मिश्र ख. देवेंद्र मिश्र
ग. यतींद्र मिश्र घ. रविंद्र मिश्रा

उत्तर,_ ग . यतींद्र मिश्र

प्र 3. बिस्मिल्लाह खान का जन्म किस राज्य में हुआ था?

क. उत्तर प्रदेश ख. मध्य प्रदेश
ग. बिहार घ . झारखंड

उत्तर_ ग. बिहार

प्र 4. बिस्मिल्लाह खान किस वाद्य यंत्र के वादक थे?

क. बांसुरी वादक ख. ढोल वादक
ग. नगाड़ा वादक घ. शहनाई वादक

उत्तर- घ शहनाई वादक

प्र 5. इबादत का क्या अर्थ होता है?

क. पूजा ख. श्रम
ग. सफलता घ उपलब्धि

उत्तर_ क. पूजा

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. बिस्मिल्लाह खान के बचपन का क्या नाम था?

उत्तर_ अमीरुद्दीन ।

प्र 2. बिस्मिल्लाह खान का जन्म किस स्थान पर हुआ था?

उत्तर_ डुमराँव में।

प्र 3. बचपन के दिनों में बिस्मिल्लाह खान शहनाई का रियाज करने कहां जाते थे?

उत्तर_ बालाजी मंदिर के नौबतखाने में।

प्र 4. "सुषिर वाद्यों में शाह" की उपाधि किस वाद्य यंत्र को प्राप्त है?

उत्तर_ शहनाई को।

प्र 5. मुस्लिम समाज के लोग किस पर्व को शोक पर्व के रूप में मनाते हैं?

उत्तर_ मुहर्रम को।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. बिस्मिल्लाह खान को काशी का नायाब हीरा क्यों कहा जाता है?

उत्तर_ काशी विभिन्न संस्कृति एवं धर्मावलंबियों का स्थान है। यहां पर विभिन्न धर्म एवं समाज के लोग रहते हैं ।बिस्मिल्लाह खान ने अपनी शहनाई के मधुर धुन के माध्यम से विभिन्न संस्कृति एवं धर्म के लोगों को जोड़ने का काम किया है इसलिए उन्हें काशी का नायाब हीरा कहा जाता है।

प्र 2. बिस्मिल्लाह खान और शहनाई एक दूसरे के प्रतीक हैं कैसे?

उत्तर_ बिस्मिल्लाह खान ने शहनाई की मधुर तान देश के साथ-साथ विदेशों में भी फैलाई। उनकी शहनाई वादन में जादू था। बिस्मिल्लाह खान से पहले शहनाई को उतनी प्रसिद्धि नहीं मिली थी जितनी की बिस्मिल्लाह खान के कारण हुई।अतः यह कहा जा सकता है कि बिस्मिल्लाह खान और शहनाई एक दूसरे के प्रतीक हैं।

प्र 3. बिस्मिल्लाह खान ने शहनाई के माध्यम से विभिन्न धर्मों को जोड़ने का कैसे प्रयास किया?

उत्तर_ बिस्मिल्लाह खान मुसलमान थे । उनकी शहनाई की मंगल ध्वनि की गूंज बालाजी मंदिर में गुंजा करती थी। इसके अलावा हनुमान मंदिर में भी वह बजाया करते थे , ये दोनों हिंदुओं का पूजा स्थल है जो हिंदू मुस्लिम समुदाय को जोड़ने में सहायक सिद्ध हुआ। इस प्रकार उन्होंने विभिन्न धर्मों के लोगों को जोड़ने का प्रयास किया।

प्र 4. शहनाई से डुमराव का क्या संबंध है?

उत्तर_ शहनाई को बजाने के लिए रीड का प्रयोग किया जाता है।रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई को फूंका जाता है ।यह रीड नरकट से बनती है ,जो डुमराव में सोन नदी के किनारे पाई जाती हैं ।इस प्रकार शहनाई से डुमराव का अटूट संबंध है।

प्र 5. बिस्मिल्लाह खान को बचपन में शहनाई सीखने में किसने प्रेरित किया?

उत्तर_ बचपन के दिनों में बिस्मिल्लाह खान बालाजी मंदिर में शहनाई सीखने जाते थे। वे जिस रास्ते से होकर बालाजी मंदिर जाते थे, उसी रास्ते के किनारे (घर में)रसूलन बाई और बतूलन बाई दोनों बहनें विभिन्न प्रकार के शास्त्रीय संगीत का रियाज करते थे। उनकी आवाज को सुनकर बिस्मिल्लाह खान को बहुत खुशी मिलती थी और वे संगीत के प्रति और ज्यादा आकर्षित हुए और प्रेरित भी हुए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर_

प्र 1. बिस्मिल्लाह खान की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन पाठ के आधार पर अपने शब्दों में करें।

उत्तर_ बिस्मिल्लाह खान का जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था, वे पक्के मुसलमान थे। इसके बावजूद वे सभी धर्मों के प्रति समान रूप से आस्था रखते थे ।उन्होंने शहनाई का जो हुनर सीखा, उसका रियाज करने के लिए बालाजी के मंदिर में जाया करते थे । बिस्मिल्लाह खान काशी के संकट मोचन मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर पर होने वाले कार्यक्रम में अवश्य उपस्थित रहते थे। शहनाई की जादुई कला सीखने के बाद उन्होंने जीवन भर बालाजी मंदिर में गाया। उनके लिए काशी पवित्र धरती है,जहां विभिन्न धर्मों एवम संस्कृतियों के लोग रहते हैं।उन्हें सभी धर्मों के साथ मिलकर रहना अच्छा लगता था ।यही कारण है कि उन्होंने शहनाई की धुन को सभी धर्मों के बीच बजाया और सुनाया। शहनाई की धुन को विभिन्न जाति एवं धर्मों के परे असीमित कर दिया। उनके लिए सभी धर्मों के सब लोग एक समान थे, उनके लिए सबके प्रति श्रद्धा और सम्मान था।उनके लिए हिंदू धर्म भी मुस्लिम धर्म के समान ही था। एक बार एक बच्ची ने उनसे बड़े प्यार से पूछा कि जब भी कोई आपसे मिलने आता है, आप वही फटी लूंगी पहने रहते हैं, अब तो आपको भारत रत्न भी मिल चुका है, आप सामान्य आदमी नहीं है। तब उन्होंने जवाब दिया - "धत् पगली मुझे शहनाई के लिए भारत रत्न मिला है, ई लूंगी के लिए नहीं ना" । सामान्य व्यक्तित्व वाले बिस्मिल्लाह खान में असामान्य वैचारिक समन्वय था, जो सभी धर्मों को जोड़ने के लिए एक कड़ी का काम करता था। इस प्रकार उनका चरित्र बहुआयामी और बहुधर्मी था।

प्र 2. बिस्मिल्लाह खान गंगा - जमुनी संस्कृति के संवाहक थे। पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर_ बिस्मिल्ला खान की शहनाई की जादुई धुन ने जाति एवं धर्मों की सीमा को तोड़ा है। इसके साथ देश की भौगोलिक सीमा को भी लांघकर विदेशों में भी अपनी सुरमयी धुन कोने - कोने में पहुंचाई है। उन्होंने संगीत की जिस कला से प्रसिद्धि पाई है, उसका रियाज करने के लिए काशी के बालाजी मंदिर के नौबत खाने में रियाज करने के लिए जाते थे। इसी मंदिर पर उनके कई पुश्तों ने अपनी कला की मंगल ध्वनि बजाई और काशी के लोगों को आलोकित किया। इसके साथ - साथ हनुमान मंदिर के प्रत्येक कार्यक्रम में शामिल होते थे। उनके लिए काशी का पवित्र स्थल किसी इबादत से कम नहीं था उन्होंने सभी धर्मों के धार्मिक स्थलों में शहनाई की जादुई धुन बिखेरी है। उन्हें शहनाई की धुन के माध्यम से सभी धर्मों को एक करने का प्रयास किया । वे अक्सर कहते हैं - "क्या करें मियां, ई काशी छोड़कर कहां जाएं, यहां गंगा मैया, यहां बाबा विश्वनाथ, यहां बालाजी का मंदिर , यहां हमारे खानदान की कई पुस्तों ने शहनाई बजाई है, हमारे नाना तो वही बालाजी मंदिर में बड़े प्रतिष्ठित शहनाईवाज रह चुके हैं। अब क्या करें, मरते दम तक न शहनाई छूटेगी न काशी। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्लाह खान एक दूसरे के पूरक हैं उसी तरह मुहर्रम ताजिया और होली अबीर। प्रसिद्धि पाने के बावजूद बिस्मिल्ला ख़ां को काशी का संस्कार रीति रिवाज और यहां के संगीत प्रेमियों के प्रति अत्यधिक प्रेम था। वे इस बहु सांस्कृतिक जगह को छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहते थे, वे यहां के सभी धर्मों के चाहने वालों के बीच ही रहना चाहते थे। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि बिस्मिल्लाह खान गंगा जमुनी संस्कृति के संवाहक थे।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

प्र 1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर_ शहनाई को फूंककर बजाया जाता है ।इसमें रीड का प्रयोग होता है जो नरकट (एक विशेष प्रकार का घास)से बनती है। यह नरकट डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है, इसलिए शहनाई की दुनिया में डुमराँव को भी याद किया जाता है। साथ ही प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खान का जन्म स्थान डुमराँव ही है।

प्र 2. बिस्मिल्लाह खान को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर_ शहनाई बहुत ही सुरीला वाद्य यंत्र है। यह विभिन्न प्रकार के मंगल कार्य के शुभ अवसर पर बजाया जाता है। देश में जितने भी शहनाई वादक हुए ,उन सबसे ज्यादा सुरीला शहनाई बजाने वाला बिस्मिल्लाह खान ही थे। उनके जैसा अभी तक कोई शहनाई वादक नहीं हुआ। उन्होंने देश के साथ साथ विदेशों में भी शहनाई की सुरीली तान बिखेरी, इसलिए बिस्मिल्लाह खान को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक कहा गया हैं।

प्र 3. सुषिर वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को "सुषिर वाद्यों में शाह "की उपाधि क्यों दी जाती है?

उत्तर_ सुषिर वाद्यों का अभिप्राय है - सुराख वाले वाद्य, जिन्हें फूंक कर बजाया जाता है। जितने भी सुषिर वाद्य हैं ,उन सब से शहनाई सबसे ज्यादा सुरीली होती है। इसलिए शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई है।

प्र 4. आशय स्पष्ट कीजिए-

क. "फटा सूर ना बक्शे। लूंगी या का क्या, आज फटी है, तो कल सी जाएगी"।

आशय- प्रस्तुत पंक्ति नौबतखाने में इबादत से ली गई है जिसके लेखक यतींद्र मिश्र है ।इस पंक्ति में बिस्मिल्लाह खान ने शहनाई के प्रति अप्रतिम प्रेम को दिखाया है।

बिस्मिल्लाह खान को अपनी शहनाई के प्रति बेहद लगाव था, वे हमेशा खुदा से दुआ मांगते हैं कि उनकी शहनाई की सुरीली आवाज हमेशा बनी रहे, वे भले ही गरीबी में जीवन बसर करें लेकिन उनकी शहनाई की आवाज में कभी भी किसी प्रकार की कर्कशपन न आए।

ख. "मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आंखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आंसू निकल आएं।"

आशय- यह पंक्ति नौबतखाने में इबादत से ली गई है जिसके लेखक यतींद्र मिश्र हैं। इस पंक्ति में बिस्मिल्लाह खान की शहनाई के प्रति गहरी रुचि की अभिव्यक्ति हुई है।

बिस्मिल्लाह खान अपने खुदा से हमेशा यही दुआ मांगते कि उनकी शहनाई से हमेशा ऐसी सुरीली और दिल को छूने वाली आवाज निकले ,जिससे लोग हमेशा गदगद हो जाए। वे हमेशा चाहते थे कि उन्हें जीवन में भले ही कुछ और ना मिले लेकिन शहनाई की सूर हमेशा ऐसे ही बनी रहे जो लोगों के दिलों पर राज करें, उनके दिल को छू जाए,उन्हें मार्मिक कर दे, उन्हें रोने के लिए मजबूर कर दे।

प्र 5. काशी में हो रहे कौन - से परिवर्तन बिस्मिल्लाह खान को व्यथित करते थे?

उत्तर_ काशी में हो रहे परिवर्तन से बिस्मिल्लाह खान अत्याधिक व्यथित हैं। वहां अब खानपान की पुरानी परंपराएं खत्म हो रही है, अब मलाई बर्फ का वह स्वाद नहीं बचा जिसको खाकर वह कभी अत्यधिक खुश हुआ करते थे। कुलसुम की छन्न करती वह संगीतात्मक कचौड़ी और देसी घी से बनी जलेबी नहीं मिलती है। अब काशी में संगीत और साहित्य के प्रति वैसा प्रेम और सम्मान नहीं दिखता है। गायकों के साथ - साथ गाने वाले संगतकारों का भी पहले जैसा सम्मान नहीं रहा। अब हिंदू - मुस्लिम समुदाय के बीच पहले जैसा मेलजोल नहीं बचा है ।काशी के ऐसे परिवर्तन से बिस्मिल्लाह खान अत्यधिक दुखी हैं।

प्र 6. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि -

क. बिस्मिल्लाह खान मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

उत्तर_ बिस्मिल्लाह खान स्वयं मुस्लिम थे ,उनकी मुस्लिम धर्म और संस्कृति के प्रति गहरी आस्था थी। वे पांचों वक्त नमाज अदा करते थे, मोहर्रम में श्रद्धा पूर्वक भाग लेते थे ।इसके बावजूद हिंदुओं के मंदिरों में अक्सर शहनाई बजाया करते थे ।जब कभी भी काशी से बाहर होते तो बालाजी मंदिर की तरफ मुड़कर प्रणाम करते थे ।उनके लिए हमेशा गंगा मां के समान थी। अतः कहा जा सकता है की बिस्मिल्लाह खान मिली जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

ख. वे वास्तविक अर्थों में सच्चे इंसान थे।

उत्तर_ बिस्मिल्लाह खान को भारत रत्न के अलावा कई महत्वपूर्ण सम्मान मिले लेकिन कभी भी उनके व्यवहार में उनकी उपलब्धि का गुमान नहीं रहा। वे काशी की मिली-जुली संस्कृति का हृदय से सम्मान करते थे ।उन्होंने कभी अपने खुदा से धन-संपत्ति नहीं मांगी बल्कि हमेशा शहनाई की सुरीली तान की मांग की ताकि शहनाई की यह तान सभी धर्मों के संगीत प्रेमियों को खुश कर सके उनके जीवन में आनंद की धारा बहा सके ।अतः कहा जा सकता है कि वह सच्चे अर्थों में इंसान थे।

प्र 7. बिस्मिल्लाह खान के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया।

उत्तर_ बिस्मिल्लाह खान के जीवन और संगीत साधना को कई लोगों ने प्रेरित किया। रसूलन बाई और बतुलन बाई हमेशा ठुमरी, टप्पे, दादरा आदि शास्त्रीय संगीत को गाया करते थे जिनको सुनकर वे हमेशा प्रेरित होते थे। कुलसुम की कचौड़ी के बनने की प्रक्रिया के क्रम में भी वे संगीत ढूंढा करते थे। वे हमेशा अपने नाना जी के बजाये हुए शहनाई को ढूंढ कर बजाने का प्रयास करते थे उनके मामू जान अलीबख्श खान ने भी संगीत के प्रति उनमें गहरी रूचि जगाई। इस प्रकार उनके जीवन और संगीत साधना को अनेक लोगों ने प्रेरित किया।

कृतिका

अध्याय 1 | माता का आँचल

- शिवपूजन सहाय

कवि परिचय

<u>शिवपूजन सहाय</u> :-

जन्म - 1893 में

स्थान - गांव उनवाँस जिला भोजपुर बिहार

मृत्यु - 1963 में

संपादन - जागरण , हिमालय , माधुरी , बालक आदि पत्रिकाओं का संपादन

गद्य कृतियाँ- देहाती दुनिया, ग्राम सुधार, वे दिन वे लोग, स्मृतिशेष आदि।

1. शिवपूजन रचनावली के चार खंडों में उनकी संपूर्ण रचनाएं प्रकाशित हैं।
2. शिवपूजन सहाय हिंदी के प्रतिष्ठित पत्रिका मतवाला के संपादक मंडल में थे।

पाठ की सामान्य जानकारी- यह अंश शिवपूजन सहाय के उपन्यास देहाती दुनिया से लिया गया है। सन 1926 में प्रकाशित देहाती दुनिया हिंदी का पहला आंचलिक उपन्यास माना जाता है।इसमें ग्रामीण जीवन का चित्रण जनता की भाषा में किया गया है।

संकलित अंश में ग्रामीण अंचल और उसके चरित्रों का अनोखा चित्र है।बालकों के खेल, कौतूहल, मां की ममता, पिता का दुलार, लोकगीत आदि अनेक प्रसंग इसमें शामिल हैं।इसमें लेखक ने अपने माता-पिता के साथ बचपन के आत्मीय लगाव को खूबसूरत तरीके से व्यक्त किया है। ग्राम्य लोकोक्तियों का बेहतरीन इस्तेमाल हुआ है। जैसे

> "जहां लड़कों का संग, तहाँ बाजे मृदंग,
> जहां बुड्ढों का संग, तहाँ खर्चे का तंग।"

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

1• प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास ना जाकर मां की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर- माता का अंचल पाठ में बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव है किंतु वह विपदा के समय पिता के पास ना जाकर मां की शरण लेता है इसका मुख्य कारण है मां का स्नेह उसके मन में बैठे डर को दूर कर देता है। मां के आंचल में ममता की छांव की अनुभूति द्वारा भय से मुक्ति, मां का आंचल सुरक्षा कवच तथा मां में ही शक्ति का रूप है। इसलिए बच्चा पिता के साथ अधिकतर समय बिताने, खेलने पर भी सांप द्वारा भयभीत होने पर मां के आंचल में जाकर छिप जाता है।

2• आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- भोलानाथ अपने साथियों के साथ अत्यंत आनंद से खेलता था। अपने साथियों के साथ वहां तरह-तरह की शरारतें, हुल्लड़ बाजी, मस्ती, तमाशे करते रहते थे और उसी में मग्न रहते थे।उसी मग्नावस्था में वह सिसकना भूल जाता है।

3• आपने देखा होगा कि भोलानाथ और उसके साथी जब - तब खेलते - खाते समय किसी ना किसी प्रकार की तुकबंदी करते हैं।आपको यदि अपने खेलों आदि से जुड़ी तुकबंदी याद हो तो लिखिए।

उत्तर- छात्र स्वयं करें छात्र स्वयं करें।

अक्कड़ बक्कड़ बंबे बो अस्सी नब्बे पूरे सौ।

4• भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेल में की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री से हमारे खेल और खेलने की सामग्रियों में बहुत अधिक अंतर आ गया है। भोलानाथ के समय में परिवार से लेकर दूर पड़ोस तक आत्मीय संबंध थे, जिससे खेलने की स्वच्छंदता थी। बाहरी घटनाओं-अपहरण आदि का भय नहीं था। खेल के समान बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थीं। घर की अनुपयोगी वस्तु ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थी।धूल - मिट्टी से खेलने में पूर्ण आनंद की अनुभूति होती थी।

परंतु आजकल अंतःऔर बाह्य खेलों का प्रयोग खेल खेलते समय किया जाता है। जैसे- चैस, कैरम बोर्ड, लूडो, टेनिस आदि अंतः खेल तथा क्रिकेट, हॉकी, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, खो-खो, फुटबॉल, थ्रो बॉल आदि बाह्य खेल हैं।

5• पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गये हों?

उत्तर- पाठ में आए दिल को छूने वाले वर्णन निम्नलिखित हैं-

क• माँ का अचानक भोलानाथ को पकड़कर तेल लगाना फिर नाभी और लिलार में काजल की बिंदी लगाकर चोटी गूँथकर उसे कन्हैया बना देना तथा बाबूजी के साथ आकर रोना - सिसकना भूल कर अपने साथियों के साथ खेल में शामिल हो जाना।

ख• जब बाबूजी रामायण का पाठ करते तब हम उनके बगल में बैठे -बैठे आईने में अपना मुंह निहारा करते थे। जब भी हमारी ओर देखते, तब हम कुछ लजाकर और मुस्कुरा कर आईना नीचे रख देते थे।

ग• जब एक साँप बच्चों के पीछे पड़ जाता है तब वे गिरते- पड़ते भागते हैं और मां की गोद में छुपकर सहारा लेते हैं।

6• इस उपन्यास अंश में तीस के दशक की ग्रामीण संस्कृति का चित्रण है। आज के ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर - प्रस्तुत उपन्यास के अंश माता का अंचल में लेखक ने 30 के दशक की ग्रामीण संस्कृति का चित्रण किया है। आज की ग्रामीण संस्कृति में अनेक परिवर्तन दिखाई देता है। आज गांवों में भी शहरों के बच्चों की तरह खेलने के लिए विभिन्न प्रकार के खेलों का सामान गांव ले जाकर बच्चों को खेलने के लिए दिया जाता है। बच्चे आधुनिक मनोरंजन के साधनों टी वी, मोबाइल, वीडियो गेम से अपना मनोरंजन कर समय बिताते हैं। आज की नई संस्कृति बच्चों को धूल -मिट्टी से बचाना चाहती है। आज परिवारों में एकल संस्कृति ने जन्म ले लिया, जिससे समूह में बच्चे अब दिखाई नहीं देते।

7• पाठ पढ़ते- पढ़ते आपको भी अपने माता-पिता का लाड- प्यार याद आ रहा होगा। अपनी इन भावनाओं को डायरी में अंकित कीजिए।

उत्तर - बच्चे स्वयं करें।

8• यहां माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरः- माता का अंचल में माता - पिता के वात्सल्य का बहुत ही सरल और मनमोहक वर्णन हुआ है। पिता का अपने साथ शिशु को नहला- धुला कर पूजा में बैठा लेना, माथे पर तिलक लगाना फिर कंधे पर बैठाकर गंगा तक ले जाना और लौटते समय पेड़ पर बैठा कर झूला झूलाना अत्यंत मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है। पिता के साथ बच्चे का शैतानियां करना-मूंछ खींचना, कुश्ती लड़ना, कंधे

पर बैठना आदि क्रियाएं पिता को अत्यंत आनंद देती है। पिता द्वारा बच्चे के गालों पर खट्टा -मीठा चुंबन लेना पिता के रोम-रोम को खुशी प्रदान करता है।बच्चे के द्वारा मूछें पकड़ने पर बनावटी रोना रोने का नाटक और शिशु का हँस पड़ना अत्यंत जीवंत लगता है। मां के द्वारा बच्चे को मुंह भर चावल के कौर खिलाना और यह कहना

“जब खाएगा बड़े-बड़े कौर, तब पाएगा दुनिया में ठौर”

बच्चे के प्रति वात्सल्य, आशीर्वाद, शुभ आकांक्षाओं का ही चिन्ह है। बच्चे की चोटी गूँथना, काजल लगाना, रंगीन कुर्ता धोती पहना कर कन्हैया का रूप देखना माँ द्वारा अपने बच्चे में ही भगवान का रूप देखना है। बच्चे द्वारा भयभीत होने पर अपनी गोद में उठाकर उसे पुचकारना, आंखों को अपने आंचल से पोंछ कर बच्चे को चूमना आदि में मां के ममत्व के दर्शन होते हैं।

9• 'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर :- प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक 'माता का अँचल 'सर्वथा उपयुक्त है, क्योंकि बच्चों को कितना भी प्यार-दुलार मिल जाए लेकिन विपदा के समय वह हमेशा माँ के पास ही जाते हैं। माँ की गोद में ही वह सबसे सच्चा सुख प्राप्त करता है। पिता द्वारा गोद में लिए जाने पर वह माँ की गोद से नहीं जाना चाहता। अतः माँ का ममत्व बच्चे को संसार के बड़े-से बड़े भय से छुटकारा मिलता है। अतः अध्याय का शीर्षक विषयानुकूल होने के कारण सही है।

इस पाठ में बच्चे का पिता के साथ लगाव, शैशव की क्रीडाएँ, माँ का वात्सल्य आदि का वर्णन हुआ है, अतः इस पाठ का अन्य शीर्षक - 'मेरा शैशव', 'कोई लौटा दे मेरे बचपन के दिन' हो सकते हैं।

10• बच्चे माता - पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर - बच्चे माता - पिता के प्रति अपने प्रेम को उनके छोटे- मोटे कामों में सहयोग कर, उनकी सेवा कर, उनका कहना उनका सम्मान कर अभिव्यक्त करते हैं। बच्चे माता-पिता की इच्छा को पूराकर उनकी भावनाओं का खयाल कर अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हैं।

11• इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

उत्तर - यह कहानी उस जब समय की कहानी प्रस्तुत करती है जब बच्चों के पास खेलने के लिए अत्यधिक साधन नहीं होते थे। वे लोग अपने खेल प्रकृति से ही प्राप्त करते थे और उसी प्रकृति के साथ खेलते थे। उनके लिए मिट्टी, खेत, पानी, पेड़, मिट्टी के बर्तन, कंकड़ पत्थर आदि साधन थे। हमारी बचपन की दुनिया इन सबसे भिन्न है क्योंकि आजकल घर-घर में मनोरंजन के साधनों का विकास है। अतः हम घर पर ही टी.वी., वीडियो गेम आदि से मनोरंजन करते है। पढ़ाई की अधिकता होने के कारण अधिकतर समय पढ़ाई में बीत जाता है। छुट्टी वाले दिन माता - पिता के साथ या मित्रों के साथ पिकनिक पर जाना हमें अच्छा लगता है।

12• फणीश्वर नाथ रेणु और नागार्जुन की आंचलिक रचनाओं को पढ़िए।

उत्तर- फणीश्वर नाथ रेणु का उपन्यास- 'मैला आँचल'

नागार्जुन का उपन्यास - 'बलचनमा'

यह दोनों आंचलिक उपन्यास हैं।

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

1• शिवपूजन सहाय का जन्म कब हुआ था?

उत्तर- 1893 में

2• शिवपूजन सहाय की रचनाएं किस नाम से और कितने खंडों में प्रकाशित हैं?

उत्तर- शिवपूजन सहाय की रचनाएं शिवपूजन रचनावली नाम से चार खंडों में प्रकाशित हैं।

3• बोथकर का क्या अर्थ है?

उत्तर- बोथकर का अर्थ है- सराबोर कर देना।

4• वर्षा से बचने के लिए बच्चों ने क्या किया?

उत्तर- वर्षा से बचने के लिए बच्चे पेड़ के जड़ से चिपक कर बैठ गए।

5• लेखक के पिताजी उन्हें क्या खिलाते थे?

उत्तर- लेखक के पिताजी उन्हें एक फूल के कटोरे में गोरस और भात सानकर खिलाते थे।

6• उतान शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर- उतान शब्द का अर्थ है पीठ के बल लेटना।

7• शिवपूजन सहाय द्वारा संपादित दो पत्रिकाओं के नाम लिखें।

उत्तर- बादल और जागरण

8• बचपन में लेखक पिताजी के साथ कौन सा खेल खेलते थे?

उत्तर- बचपन में लेखक पिताजी के साथ कुश्ती खेलते थे।

लघुउत्तरीय प्रश्न उत्तर

1• माता का अँचल पाठ में बैजू तथा बच्चों ने किसे तथा क्यों चिढ़ाया? उसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर- 'माता का अँचल' पाठ में बैजू और बच्चों ने गांव के बुजुर्ग मूसन तिवारी को चिढ़ाया क्योंकि बैजू बड़ा ढ़ीठ लड़का था। वे वृद्ध थे और उनको कम दिखाई देता था। बैजू उनको चिढ़ाकर बोला

'बुढ़वा बेईमान माँगे करेला का चोखा'

सभी बच्चों ने बैजू के सूर में सूर मिलाकर यही चिल्लाना शुरू किया। परिणामस्वरूप मूसन तिवारी ने बेतहाशा खदेड़ा। सारे बच्चे भागकर बच गए। मूसन तिवारी ने पाठशाला पहुँचकर लेखक तथा बैजू की शिकायत की। बैजू भाग गया लेखक पकड़े गए फिर गुरुजी ने उनकी खूब खबर ली। लेखक के पिताजी को जब इस बात का पता चला तो वे लेखक को लेने विद्यालय पहुँचे और गुरुजी से उनकी ओर से क्षमा माँगकर उन्हें घर ले गये।

2• इस पाठ से आपको बाल स्वभाव की कौन सी जानकारी मिलती है?

उत्तर- इस पाठ से पता चलता है कि बच्चे अपने सुख-दुख को मन में नहीं रखते। उनका मन निश्चल होता है। वे दुखी होते हैं तो रोकर चिल्लाकर प्रकट कर देते हैं। यह आपसी झगड़े, रोना-धोना, कष्ट की अनुभूति जितनी जल्दी करते हैं उतनी ही जल्दी भूल जाते हैं। वे आपस में इस तरह घुल मिल जाते हैं ,जैसे कुछ हुआ ही ना हो।

3• 'माता का अंचल' पाठ के आधार पर लिखिए कि मां बच्चे को कन्हैया का रूप देने के लिए किन-किन चीजों से सजाती थी इससे उनकी किस भावना का बोध होता है?

उत्तर- भोलानाथ की माँ उसके सिर में बहुत सा सरसों तेल डालकर बालों को तर कर देती वह बच्चे का उबटन करती फिर भोलानाथ की नाभी और लिलार में काजल के बिंदी लगाकर चोटी गूँथती और उसमें फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन कुर्ता- टोपी पहना कर उससे खासे कन्हैया बनी देती। इससे भोलानाथ के प्रति मां के लाड़ - प्यार का बोध होता है।

4• साँप से डरकर सब बच्चे कैसे भागे?

उत्तर- साँप से डर कर सब बच्चे बेतहाशा भागे। कोई औंधा गिरा कोई अंटाचिट। किसी का सिर फूटा किसी के दांत टूटे सभी गिरते-पड़ते भागे, उनकी सारी देह लहूलुहान हो गई। पैरों के तलवे कांटों से छलनी हो गये। भोलानाथ एक सुर से दौडे हुए आए और घर में घुस गए, जाकर मां की गोद में छिप गए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

1• माता का अँचल पाठ में बचपन की कैसी तस्वीर बनती है?

उत्तर- 'माता का अँचल' पाठ में बचपन की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की गई है। लेखक ने बताया है कि उसे बचपन में अपने पिता और माता का अपार स्नेह मिला। वे अधिकतर समय अपने पिता के साथ व्यतीत करते थे इस कारण उनके पिता के साथ उनका मित्रवत संबंध स्थापित हो गया था। मां ने अपने पुत्र भोलानाथ पर असीम ममता लुटाई है।अपने बचपन के संगी साथियों के साथ उन्होंने अनेक प्रकार के खेल खेले, शरारतें की, मस्ती की ।बचपन में वे हमेशा खेल ही खेलते रहते थे। उन खेलों में अंत में पिताजी के शामिल होने पर सब शर्मा कर भाग जाते थे। वे रास्ते में आते जाते लोगों को कुछ बोलकर चिढ़ाया भी करते थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लेखक ने हुल्लड़बाजी मस्ती और खेल से भरपूर बचपन की तस्वीर प्रस्तुत की है।

2• इस पाठ के आधार पर पिता की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- 'माता का अँचल 'पाठ में भोलानाथ के पिता रोज प्रातः काल उठकर अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर नहा कर पूजा करने बैठ जाते थे। उसके बाद में अपनी रामनामा बही पर हजार बार राम नाम लिखने लगते। कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर राम नाम लिखकर उन्हें आटे की गोलियों में लपेटते थे और उन गोलियों को लेकर गंगा जी की मछलियों को खिलाया करते थे इससे उनके भक्त स्वभाव का पता चलता है।

पिता स्वभाव से अत्यंत स्नेही एवं भोले थे। बच्चों के खेल में बच्चों की तरह सम्मिलित हो जाते थे।वह बच्चों के साथ अपना समय व्यतीत करते थे अपने पुत्र से खूब लाल लड़ाते थे उनके मन में अपने पुत्र के प्रति अपार स्नेह एवं वात्सल्य था।

3• बच्चों के द्वारा बनाए गए घरौंदे का उल्लेख माता का अँचल पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर- लेखक की मित्र मंडली ने एक दिन घर बनाने का खेल खेलने का निश्चय किया। तिनकों का छप्पर, दियासलाई की पेटियों के किवाड़ , दातून के खंभे, घड़े के मुँहड़े की चूल्हा चक्की, दीए की कड़ाही और बाबू जी की पूजा वाली आचमनी कलछी बनती थी। पानी के घी, धूल के किसान और बालू की चीनी से ज्योनार (भोज, दावत) तैयार करते थे वे लोग ही ज्योनार करते और उन्हीं लोगों की ज्योनार बैठती थी।जब पंगत बैठ जाती थी तब बाबूजी भी धीरे से आकर पाँत के अंत में जीमने (भोजन करने)के लिए बैठ जाते थे। उन्हें बैठा देखकर सब हंसने लगते और घरौंदा बिगाड़ कर भाग जाते। वे लोटपोट हो कर पूछते फिर भोज कब होगा भोलानाथ? इस प्रकार लेखक ने बच्चों के अद्‌भुत व विचित्र घरौंदे का सजीव चित्रण किया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1• लेखक के बचपन का नाम क्या था?

क• मंजूनाथ   ख• तारकेश्वर नाथ

ग• हरिहरनाथ   घ• श्रीनाथ

उत्तर - ख• तारकेश्वर नाथ

2• मकई के खेत में किस का झुंड चर रहा था?

क• चिड़ियों का   ख• गायों का

ग• बकरियों का।   घ• भेड़ों का

उत्तर- क• चिड़ियों का

3• ठौर शब्द का क्या अर्थ है?

क• ठहरना   ख• स्थान

ग • दौड़ना   घ• आकाश

उत्तर- ख• स्थान

4• बचपन में लेखक किसका तिलक लगाता था?

क• चंदन का   ख• गोरस का

ग• रोली का   घ• भभूत का

उत्तर- घ•भभूत का

5• भभूत लगाने से लेखक क्या बन जाते थे?

क• श्री कृष्ण   ख• श्री राम

ग• बम भोला।   घ • राजकुमार

उत्तर - ग•बम भोला

6• 'चिरौरी करना' का क्या अर्थ है?

क• चिढ़ाना   ख• नकल करना

ग• चोरी करना।   घ• विनती करना

उत्तर- घ• विनती करना

7• 'बुढ़वा बेईमान मांगे करेला का चोखा' कह कर बच्चों ने किसको चिढ़ाया था?

क• बूढ़े दूल्हे को।   ख• मूसन तिवारी को

ग• स्कूल के हेड मास्टर को   घ• बूढ़े किसान को

उत्तर- घ• मूसन तिवारी को

8• अमोला किसे कहते हैं?

क• एक प्रकार की सब्जी।

ख• आंवला

ग• अनानास

घ• आम का उगता हुआ पौधा

उत्तर- घ• आम का उगता हुआ पौधा

9• मां ने भोलानाथ के घावों पर क्या लगाया?

क• पिसी हुई हल्दी।   ख• आम के पत्ते का रस

ग• नीम के पत्ते का रस।   घ• मरहम

उत्तर- क• पिसी हुई हल्दी

10• भोलानाथ किसको देख कर सिसकना भूल जाते थे?

क• अपनी माता को।   ख• अपने पिता को

ग• खेल के साथियों को   घ• अपने भाइयों को

उत्तर- ग• खेल के साथियों को

अध्याय 2 जॉर्ज पंचम की नाक

- कमलेश्वर

प्रश्न - अभ्यास

प्र 1. लेखक कमलेश्वर का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर_ लेखक कमलेश्वर का जन्म मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) में सन 1932 ईस्वी में हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए .किया। उन्होंने सारिका ,दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर जैसे पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया। उनकी मृत्यु सन 2007 ईस्वी में हुई।

प्रमुख रचनाएँ - कमलेश्वर नई कहानी आंदोलन के अगुवाओं में से एक हैं। इनकी रचनाओं में तेजी से बदलते हुए सामाजिक मूल्यों से उपजी विद्रूपताओं का वर्णन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इनकी प्रमुख रचनाओं में से राजा निरबंसिया, सोलह छतों वाला घर, खोई हुई दिशाएं, जिंदा मुर्दे ,आदि कहानी संग्रह है। इसके अलावा वही बात, डाक बंगला ,काली आंधी, आगामी अतीत और कितने पाकिस्तान आदि प्रमुख उपन्यास हैं।इसके साथ - साथ लेखक ने कई यात्रा वृतांत संस्मरण एवं आत्मकथा भी लिखी।

प्र 2. कमलेश्वर द्वारा रचित "जॉर्ज पंचम की नाक" का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर_ लेखक कमलेश्वर द्वारा रचित व्यंग्यात्मक निबंध "जॉर्ज पंचम की नाक" सरकारी तंत्र की सच्चाई को उजागर करती है। रानी एलिजाबेथ के भारत आगमन के दरमियान सरकारी संस्थाओं एवं संपत्तियों का किस तरह दुरुपयोग किया गया है, इसकी पोल इस निबंध के माध्यम से उजागर होती है।

इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ के भारत आगमन के समय नई दिल्ली की सड़कों एवं सभी प्रकार के सरकारी भवनों का रंग रोगन एवं सुंदरीकरण किया जाता है ।उनके आगमन के एक दिन पहले तक यह काम पूरा हो जाता है। उनके स्वागत के लिए पूरी तैयारी होती है लेकिन एक समस्या है - इंडिया गेट के समीप लगे जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक गायब है। भारत के सरकारी अधिकारी इस बात से अत्याधिक चिंतित हैं कि महारानी के आगमन के पहले जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक लगाई जाए । उनका मानना था कि जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक का ना होना , उनका नाक ना होना है। महारानी जॉर्ज पंचम की मूर्ति देखने जरूर जाएगी, यदि उन्हें पता चले कि जॉर्ज पंचम की नाक नहीं है तो उन्हें बहुत बुरा लगेगा। इसके लिए जॉर्ज पंचम की नाक लगाने के लिए सरकारी महकमे में कई बैठकें होती हैं, अंत में एक गरीब कलाकार अथवा मूर्तिकार को बुलाया जाता है । उन्हें विश्वास है कि वह जॉर्ज पंचम की नाक लगा लेगा लेकिन वह गरीब है उसे सरकारी सुविधा चाहिए।

सरकारी खर्चे पर वह देश के कोने कोने में कई बार घूमता है लेकिन जॉर्ज पंचम की मूर्ति जिस पत्थर से बनी होती है वैसा पत्थर कहीं नहीं मिलता है ।वह हमारे देश के विभिन्न महापुरुषों की मूर्ति की नाक का माप लेता है लेकिन किसी भी मूर्ति की नाक जॉर्ज पंचम की नाक से मेल नहीं खाती है । वह अंत में हार कर किसी जिंदा व्यक्ति के नाक काटकर जॉर्ज पंचम की मूर्ति में लगाने का प्रस्ताव सभापति को देता है । सभापति डरते हुए सहमति प्रकट करता है लेकिन वह कलाकार उसे आश्वस्त करता है कि डरने की बात नहीं है, यह काम वह बिना किसी को जाने बगैर कर लेगा, किसी को कोई बात खबर भी नहीं लगेगी और अंत में वह किसी जिंदा व्यक्ति के नाक को जॉर्ज पंचम की नाक में फिट कर देता है।

यह एक व्यंग्य लेख है जिसमें लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि आजाद भारत में भी हम गुलामी मानसिकता से उबर नहीं पाए हैं। हम जिनसे दो शताब्दी से ज्यादा समय तक गुलाम रहे , उनके सम्मान और अभिवादन के लिए भारत की संपत्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं ।हमें इस बात की क्या जरूरत है कि जिन्होंने हमारा शोषण और दोहन किया ,उसके सम्मान के लिए सरकारी तंत्र का दुरुपयोग करें। हद् तो तब होती है जब जॉर्ज पंचम की नाक का माफ करने के लिए हमारे महापुरुषों की नाक का माप लिया जाता है। हमारे देश की आजादी के लिए बलिदान होने वाले बच्चों के नाक के बराबर भी जॉर्ज पंचम की नाक की माप नहीं हो सकती है।

बहु वैकल्पिक प्रश्न उत्तर

प्र 1. जॉर्ज पंचम की नाक पाठ के लेखक कौन है?

क कमलेश्वर ख मधु कांकरिया

ग. शिवपूजन सहाय घ. मोहन राकेश

उत्तर_ क. कमलेश्वर

प्र 2 . कमलेश्वर का जन्म कब हुआ था?

क 1932 ईस्वी में। ख .1832 ईस्वी में ।

ग . 1934ईस्वी में । घ. 1936ईस्वी में।

उत्तर_ क.1932 ईसवी में।

प्र 3. सभापति ने नाक का हल ढूंढने के लिए किसको बुलाया?

क. लोहार को ख. कलाकार को

ग. गीतकार को। घ. संगीतकार को

उत्तर_ ख. कलाकार को।

प्र.4. जॉर्ज पंचम की नाक कहां लगी हुई थी?

क. चाइना गेट में ख. कोलकाता में

ग. मुंबई में घ. इंडिया गेट में

उत्तर_ घ. इंडिया गेट में

प्र.5. भारत में इंडिया गेट कहां है

क. कोलकाता में। ख. गुजरात में ।

ग. दिल्ली में घ. पंजाब में

उत्तर_ ग. दिल्ली में

अति संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. जॉर्ज पंचम की नाक कैसा लेख है?

उत्तर_ व्यंग्य लेख

प्र 2. किसका भारत में आगमन हो रहा था?

उत्तर_ रानी एलिजाबेथ का।

प्र 3. सभापति ने नाक का हल ढूंढने के लिए किसको बुलाया?

उत्तर_ मूर्तिकार को ।

प्र 4 नाक का ना होने का क्या अर्थ है?

उत्तर_ सम्मान ना होना।

प्र 5. जॉर्ज पंचम की नाक पाठ में किस पर व्यंग्य किया गया है?

उत्तर_ सरकारी तंत्र पर।

संक्षिप्त प्रश्न उत्तर

प्र 1. जॉर्ज पंचम की नाक लगवाना क्यों जरूरी था?

उत्तर_ जॉर्ज पंचम भारत में इंग्लैंड का प्रतिनिधि शासक था ।भले ही वह हमारे लिए सम्माननीय नहीं था लेकिन इंग्लैंड के लोग उन्हें सम्मान देते थे। इंग्लैंड की महारानी का भारत आगमन हो रहा था ऐसे समय में जॉर्ज पंचम की कटी हुई नाक को पुनः लगवाना जरूरी था।

प्र 2 महारानी के आगमन के लिए भारत में क्या _क्या तैयारियां की गई?

उत्तर_ महारानी के आगमन को देखते हुए दिल्ली की सड़कों को मरम्मत किया गया, सरकारी भवनों एवं दफ्तरों को दुल्हन की तरह सजाया गया। उनके आगमन को लेकर हर तरह की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया।

प्र3. जॉर्ज पंचम की नाक को लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या प्रयास किया?

उत्तर_ जॉर्ज पंचम की नाक को लगाने के लिए मूर्तिकार ने देश के कोने कोने में घूम कर पहाड़ों के पत्थरों की जांच की, इसके बाद देश के कोने कोने में महापुरुषों की मूर्ति की नाक का नाप लिया फिर भी उन्हें जॉर्ज पंचम की नाक के नाप का कोई नाक नहीं मिला। इस प्रकार उसने कई प्रयास किया।

प्र 4. जॉर्ज पंचम की नाक क्यों काटा गया था?

उत्तर_ जॉर्ज पंचम ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधि था ,जो भारत में शासन का प्रमुख था। इन्होंने भारतीयों पर जुल्म और शोषण किया। ये शोषण और जुल्म के प्रतीक थे। ऐसी स्थिति में जॉर्ज पंचम की मूर्ति लगाना देशप्रेमी भारतीयों को अच्छा नहीं लगा। इसलिए उन्होंने जॉर्ज पंचम की लगाई गई मूर्ति की नाक काट दी।

प्र 5. रानी के आगमन की तैयारियां सरकारी संपत्तियों का अपव्यय था। कैसे?

उत्तर_ रानी का आगमन भारत के लिए किसी भी तरह महत्वपूर्ण नहीं था बल्कि ब्रिटिश और उसके प्रमुख आजाद भारत के लिए एक काला अध्याय था। उन्होंने लगभग 200 साल से अधिक समय तक भारत को गुलाम बना के रखा,हमारा शोषण किया, हमारा दोहन किया। ऐसी स्थिति में रानी एलिजाबेथ के आगमन के लिए लाखों-करोड़ों रुपयों का खर्च ,भारत के करोड़ों लोगों का अपमान था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि रानी के आगमन की तैयारियां सरकारी संपत्तियों का अपव्यय था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र 1. जॉर्ज पंचम की नाक के लिए सरकारी तंत्र एवं अधिकारियों की चिंता लाखों शहीदों एवं महापुरुषों का मजाक है, कैसे?

उत्तर_ ब्रिटिश हुकूमत ने लगभग 200 साल से अधिक समय तक भारत को गुलाम बनाए रखा ।भारतीयों ने गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिए कई संघर्ष किए, हमारे कई महापुरुषों ने आजादी के लिए अपने जीवन की बलिदानी दी ।जॉर्ज पंचम हमारे देश में ब्रिटिश शासन का प्रतिनिधि था ब्रिटिश सरकार ने जॉर्ज पंचम के माध्यम से भारत में अपना वर्चस्व बनाए रखा था।

आजाद भारत में दिल्ली के इंडिया गेट के समीप जॉर्ज पंचम की मूर्ति स्थापित की गई, उस मूर्ति के नाक को स्वाभिमानी भारतीयों ने तोड़ दी। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ के भारत आने के दरमियान जॉर्ज पंचम की मूर्ति के टूटे हुए नाक को लगाने का प्रयास किया गया इसके लिए लाखों करोड़ों रुपयों का खर्च किया गया जबकि यह हमारे लिए कोई मायने नहीं रखती है। जॉर्ज पंचम भारत के ऐतिहासिक महापुरुष नहीं थे ।लोगों को तो उनके नाम से भी चिढ़ होनी चाहिए। ऐसे समय में उसकी मूर्ति की स्थापना तो मजाक है ही साथ ही साथ उसके सुंदरीकरण के नाम पर उसके टूटे हुए नाक को लगाना भी लाखों भारतीयों का मजाक है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानी दी।

प्र 2. लेखक कमलेश्वर ने जॉर्ज पंचम की नाक पाठ के माध्यम से व्यंग्य साधने में सफल हुए हैं ,स्पष्ट कीजिए।

उत्तर_ लेखक कमलेश्वर ने जॉर्ज पंचम की नाक पाठ के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि आजादी हमें उपहार में नहीं मिली बल्कि इसके लिए हमारे लाखों महापुरुषों ने कुर्बानी दी है।

रानी एलिजाबेथ के भारत आगमन के दरमियान विभिन्न प्रकार की तैयारियां की जा रही थी। दिल्ली के सड़कों का सौंदर्यीकरण किया जा रहा था ।विभिन्न प्रकार के सरकारी भवनों एवं दफ्तरों को सजाया जा रहा था, उसका रंग रोगन किया जा रहा था ,जैसे दुल्हन को सजाया जाता है। इसके बाद इंडिया गेट के पास स्थित जॉर्ज पंचम के टूटे हुए नाक को लगाने के लिए प्रयास किया जा रहा था ,इसके लिए सरकार और सरकार के अधिकारियों ने कई बैठकें की और जॉर्ज पंचम के टूटे हुए नाक को लगाने के लिए लाखों करोड़ों रुपया बहाया गया ।इस दरमियान होने वाली घटनाएं ऐसे लग रहे थे मानो रानी एलिजाबेथ और जॉर्ज पंचम भारत के धरोहर है जबकि ऐसी कोई बात नहीं है बल्कि वे दोनों हमारे भारतीय स्वतंत्रता इतिहास के लिए एक काला अध्याय है।

जॉर्ज पंचम की नाक के लिए चिंता करना उन भारतीयों के गाल पर तमाचा है जिन्होंने भारत को आजाद करने के लिए कड़ा संघर्ष किया था । इस पाठ में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि जिन्होंने भारत की आजादी के लिए लड़ाई नहीं लड़ी , वे अब सरकार चला रहे हैं, उन्हें आजादी के संघर्ष के महत्व का पता नहीं है, उन्हें लगता है कि यह आजादी भारतीयों को उपहार में मिली है। हम जिनके खिलाफ लड़े ,उनके स्वागत के लिए ,उनके सम्मान के लिए किस्म - किस्म की तैयारियां की जा रही हैं। यह भारतीयों के स्वाभिमान और संघर्षपूर्ण इतिहास का मजाक है। लेखक इस पाठ के माध्यम से पूरी तरह सरकारी तंत्र के अनुचित व्यवहार का पर्दाफाश किया है और यह बताने का प्रयास किया है कि उनके सम्मान के लिए इतना खर्च करना और चिंता करना लाखों करोड़ों भारतीयों के सम्मान के साथ खिलवाड़ करना है। लेखक पूरी तरह से इस पाठ के माध्यम से व्यंग्य साधने में सफल हुए हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न उत्तर

प्र1. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है?

उत्तर_ सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, यह उनकी गुलाम मानसिकता को दर्शाती है ।जॉर्ज पंचम भारत के लिए सम्मान के योग्य व्यक्ति थे ही नहीं बल्कि वे सच्चे भारतीयों के लिए बेहद घृणित व्यक्ति थे लेकिन सरकारी तंत्र में बैठे लोग उनकी नाक को लेकर जो चिंता जता रहे थे इससे यह साफ जाहिर होता है कि वे लोग जॉर्ज पंचम के कारनामों को उजागर होने देना नहीं चाहते थे। उन्हें उस व्यक्ति की नाक बहुत मूल्यवान लग रही है जिन्होंने देश को गुलाम बनाए रखा। यह गुलाम मानसिकता का परिचायक है जो कभी आजाद होना नहीं चाहता।

प्र 2. रानी एलिजाबेथ की दर्जी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएंगे?

उत्तर_ रानी के भारत आने के बाद नेपाल और पाकिस्तान का दौरा भी शामिल था इस दौरे में रानी क्या पहनेगी और उनके लिए कौन सा ड्रेस होगा ?इसकी जिम्मेदारी दर्जी को दी गई थी चूंकि रानी कोई सामान्य हस्ती नहीं थी इसलिए दर्जी का रानी के पहनावा के प्रति चिंता जाहिर है।

प्र 3. "और देखते ही देखते नई दिल्ली का कायापलट होने लगा "- नई दिल्ली के कायापलट के लिए क्या किया प्रयत्न किए गए होंगे?

उत्तर_ नई दिल्ली के कायापलट के लिए निम्नलिखित प्रयत्न किए गए होंगे -

क. सड़क को मरम्मत करके जवान कर दिया गया होगा इसके साथ इसे चौड़ा भी किया गया होगा।

ख. सड़कों के किनारे हरे - हरे पेड़ -्रपौधे लगाए गए होंगे।

ग. सरकारी भवन एवं ऑफिस को रंग लगाया गया होगा।

घ. सरकारी भवन और ऑफिस में विभिन्न प्रकार की रोशनी से सजाया गया होगा।

प्र 4. आज की पत्रकारिता में चर्चित हस्तियों के पहनावे और खानपान संबंधी आदतों का दौर चल पड़ा है।
क. इस प्रकार की पत्रकारिता के बारे में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर- किसी भी चर्चित हस्तियों के पहनावे और खानपान से संबंधित पत्रकारिता का कोई महत्व नहीं है। देश और समाज में इससे बड़ी बड़ी समस्याएं हैं। पत्रकारिता का यह कर्तव्य होना चाहिए कि ऐसे मुद्दों से इतर देश और समाज के ज्वलंत मुद्दों पर बहस करें, प्रश्न पूछे ।व्यक्तिगत पत्रकारिता पत्रकारिता की स्वतंत्रता को खत्म कर देती है।

ख. इस तरह की पत्रकारिता आम जनता विशेषकर युवा पीढ़ी पर क्या प्रभाव डालती है?

उत्तर_ इस तरह की पत्रकारिता आम जनता के साथ-साथ युवा पीढ़ी पर बुरा असर डालती है ।अगर बड़ी-बड़ी हस्तियों के पहनावे और खानपान संबंधी समाचार और जानकारी के प्रकाशन पर ही जोर दिया जाए और युवा पीढ़ी को अवगत कराया जाए तो युवा पीढ़ी उनके पहनावे और खानपान को ही अपना आदर्श मान लेंगे, इससे युवा पीढ़ी पर बुरा असर पड़ेगा।

प्र 5. जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या किया यत्न किए?

उत्तर_ जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने निम्नलिखित यत्न किए -

क. देश के कोने - कोने में उस पत्थर की तलाश की गई जिससे जॉर्ज पंचम की लाट बनी हुई थी।

ख. देश के विभिन्न महापुरुषों की मूर्तियों की नाक को मापा गया लेकिन इसमें भी वह असफल रहा।

ग. बिहार सेक्रेटरीएट के सामने 1942 में शहीद होने वाले बच्चों की मूर्तियों की नाक लगाने का प्रयास किया गया फिर भी नहीं लगा पाया क्योंकि उन बच्चों के नाक भी जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ा साबित हुआ।

घ. अंत में वह जिंदा व्यक्ति का नाक लगाने का प्रयास किया और इसमें वह सफल हो गया।

प्र 6. प्रस्तुत कहानी में जगह जगह कुछ ऐसे कथन आए हैं जो मौजूदा व्यवस्था पर करारी चोट करते हैं। उदाहरण के लिए "फाइलें सब कुछ हजम कर चुकी है," "सब हुक्कामो ने एक दूसरे की तरफ ताका" पाठ में आए ऐसे अन्य कथन छांट कर लिखें।

उत्तर_ पाठ में आए ऐसे अन्य कथन निम्नलिखित हैं_

क. इंग्लैंड के अखबारों की कतरने हिंदुस्तानी अखबारों में दूसरे दिन चिपकी नजर आती थी।

ख. किसी ने किसी से नहीं कहा किसी ने किसी को नहीं देखा पर सड़कें जवान हो गई।

ग. हथियारबंद पहरेदार अपनी जगह तैनात रहे , गश्त लगती रही और लाट की नाक चली गई।

प्र 7. नाक मान - सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक है ।यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है ?लिखें।

उत्तर_ वास्तव में नाक मान - सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक है यह बात इस रचना में निम्नलिखित तरीके से उभर कर सामने आई है -

क. जॉर्ज पंचम की नाक का गायब होना ब्रिटिश सत्ता की नाक अर्थात् मान प्रतिष्ठा का धूल में मिलना है।

ख. जॉर्ज पंचम की नाक पुनः लगाना ब्रिटिश सत्ता के सम्मान को पाने का प्रयास है।

ग. भारतीय महापुरुषों की मूर्ति की नाक का बड़ा होना ब्रिटिश शासकों के प्रतिष्ठा से बड़ा होने के समान है।

घ. बिहार में 1942 में शहीद बच्चों का जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ा होना उनके सम्मान का बड़ा होना है।

प्र 8. अखबारों ने जिंदा नाक लगने की खबर को किस तरह प्रस्तुत किया?

उत्तर_ अखबारों ने जॉर्ज पंचम की नाक लगने की खबर को केवल इतना ही छापा कि_ जॉर्ज पंचम की नाक का हल हो गया। इससे ज्यादा अखबारों ने कुछ नहीं छापा।

प्र 9. जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहां तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट ना होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है?

उत्तर_ नाक सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक है। जॉर्ज पंचम हमारा शोषक और क्रूर शासक था ।भारतीयों के दिलों में उनके प्रति कोई सम्मान नहीं है। कलाकार ने जितने भी भारतीय नेताओं, महापुरुषों के नाक की नाप ली अर्थात उनसे जॉर्ज पंचम के सम्मान की बराबरी करनी चाहिए तो उनके सामने जॉर्ज पंचम का सम्मान कुछ नहीं था ।इतना तक कि शहीद बच्चों के नाक के बराबर भी जॉर्ज पंचम का नाक नहीं था।

प्र 10. "नई दिल्ली में सब था...... सिर्फ नाक नहीं थी।" इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर_ इस कथन के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि नई दिल्ली में जॉर्ज पंचम की मूर्ति तो लगी हुई थी लेकिन उसका मान सम्मान नहीं था ।जॉर्ज पंचम की मूर्ति ब्रिटिश शासन के अवशेष की कहानी थी लेकिन उसमें से मूर्ति का गायब होना यह बताता है कि उस शासक और ब्रिटिश सरकार के प्रति भारतीयों के दिलों में कोई मान सम्मान नहीं था।

प्र 11. जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

उत्तर_ जॉर्ज पंचम की नाक का लगना उसके सम्मान की वापसी के समान है । उनके नाक लगने की खबर से अखबार वाले काफी नाराज थे इसलिए वे इसका विरोध चुप रह कर कर रहे थे। यही कारण था कि उस दिन ना तो किसी नेता का फोटो छपा और ना ही किसी कार्यक्रम का कोई खबर छपा।

अध्याय 3 साना-साना हाथ जोड़ि

- मधु कांकरिया

कवि परिचय

जन्म-	सन् 1957 में (कोलकाता)
रचनाएँ-	
उपन्यास-	पत्ताखोर
कहानी संग्रह -	सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु

विषय- समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्याएँ जैसे महानगरी असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की आदत की घुटन, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा आदि उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं।

सार- 'साना-साना हाथ जोड़ि' में पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य की राजधानी गंतोक और उसके आगे हिमालय की यात्रा का वर्णन है। हिमालय के अनंत सौंदर्य का ऐसा अद्भुत और काव्यात्मक वर्णन लेखिका ने किया है, मानो हिमालय का पल-पल परिवर्तित सौंदर्य हम स्वयं अपनी आँखों से देख रहे हों।

लेखिका हिमालय के सौंदर्य पर मुग्ध ही नहीं होती, वहाँ के निवासियों की मेहनत, अभाव और गरीबी को भी रेखांकित करती है। साथ ही यह बताना भी नहीं भूलती कि हिमालय तक पहुँचने के लिए बनाए जाने वाले रास्तों के निर्माण में लोग अपनी जान गँवा चुके हैं। इस पाठ में पीड़ा और सौंदर्य का अद्भुत मेल है तथा इसे पढ़कर अकेलेपन और करुणा के भाव जाग्रत होते हैं तथा सृष्टि की समग्रता का अहसास होता है। यात्राओं से मनोरंजन, ज्ञानवर्धन एवं अज्ञात स्थलों की जानकारी के साथ-साथ भाषा और संस्कृति का आदान-प्रदान भी होता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

1• झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था?

उत्तर- झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका में इस कदर सम्मोहन जगा रहा था कि उन जादू भरे क्षणों में लेखिका का सब कुछ स्थगित था। उनके भीतर बाहर सिर्फ शून्य था। चेतना के इस स्तर पर पहुँचकर उन्हें अतींद्रिय सुख की प्राप्ति हुई।

2• गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?

उत्तर - मेहनतकश का अर्थ है, कड़ी मेहनत करने वाले। गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ स्थितियाँ बड़ी कठिन हैं। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ के लोग मेहनत से घबराते नहीं और भरपूर परिश्रम करते हैं। इनकी मेहनत ने गंतोक को सुरम्य बना दिया है, इसलिए गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया।

3• कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- गंतोक से 149 किलोमीटर दूर स्थित यूमथांग के क्षेत्र में कहीं - कहीं एक कतार में लगी सफेद एवं रंगीन बौद्ध पताकाएँ दिखाई देती हैं। वहाँ जब भी किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है उसकी आत्मा की शांति के लिए एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती है जिन पर मंत्र लिखे होते हैं इन्हें उतारा नहीं जाता धीरे-धीरे थे अपने-आप नष्ट हो जाती हैं। किसी नये कार्य की शुरुआत में रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

4• जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं, लिखिए।

उत्तर- जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

प्रकृति संबंधी जानकारी-
सिक्किम में गंतोक से लेकर यूमथांग तक तरह-तरह के फूल हैं, पहाड़ों से घिरी हुई घाटियां हैं, जगह-जगह पाईन और धूपी के वृक्ष हैं, नदियाँ एवं झरने हैं। हिमालय का यह क्षेत्र अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है। पर्वत, झरने, फूलों से लदी वादियाँ लोगों को मोहित करती है।

भौगोलिक जानकारी -

जितेन नार्गे ने लेखिका को भौगोलिक जानकारी देते हुए कहता है कि यहाँ पहाड़ी मैदानी तराई वाले इलाके में बहुत ठंड पड़ती है। यहाँ के रास्ते टेढ़े-मेढ़े व ऊँचे-नीचे हैं। वहाँ के रास्ते फिसलन भरे होते हैं यहाँ तापमान माइनस में पहुँच जाता है।

जनजीवन संबंधी जानकारी-

सिक्किम के लोग मेहनत पसंद हैं। यहाँ के लोग बड़े मेहनती हैं। यहाँ बौद्ध मत को मानने वाले लोग हैं। औरतें पहाड़ों को काट-छाँट कर नया रूप देने के लिए कुदाली चलाती हैं। यहाँ लोग मवेशी पालते हैं औरतें बोकु पहनती हैं। यहाँ चाय के बड़े - बड़े बागान भी हैं।

5• लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक - सी क्यों दिखाई दी ?

उत्तर- लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को उसके बारे में पूछने पर पता चला कि यह धर्म- चक्र है।ऐसी मान्यता है कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा है कि गंगा में स्नान करने से सारे पाप धुल जाते हैं। सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, अंध-विश्वास और पाप-पुण्य अवधारणाएँ एक सी हैं।

6• जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

उत्तर- जितेन नार्गे में एक कुशल गाइड के सभी गुण प्रचुर मात्रा में थे। एक कुशल गाइड को अपने क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति तथा विभिन्न स्थानों के महत्व तथा उनसे जुड़ी रोचक जानकारियों का ज्ञान भी होना चाहिए। जैसा जितेन नार्गे को पता है कि 'गाइड' फिल्म की शूटिंग लोंग स्टॉक में हुई थी। इससे पर्यटकों का मनोरंजन होता है और उनकी स्थान में रुचि भी बढ़ जाती है।

गाइड के साथ-साथ नार्गे ड्राइवर भी था। अतः कहाँ रुकना है? यह निर्णय वह स्वयं है करने में समर्थ था। गाइड में सैलानियों को प्रभावित करने की रोचक शैली होनी चाहिए जो उसमें थी। एक सुयोग्य गाइड क्षेत्र के जन-जीवन की गतिविधियों की जानकारी रखता है और संवेदनशील भी होता है। वह पर्यटकों में इतना घुल-मिल जाता है कि स्वयं गाने के साथ नाच उठता है।

7• इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के जिन-जिन रूपों का चित्र खींचा है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- इस यात्रा वृत्तान्त में लेखिका ने हिमालय के विभिन्न रूपों को चित्रित किया है। जैसे-जैसे ऊँचाई पर चढ़ते जाते हैं हिमालय विशाल से विशालतम होता चला जाता है। लेखिका को हिमालय का यह रूप काम्य (कमनीय) लगा।हिमालय पल-पल परिवर्तित होता हुआ लग रहा था। 'मेरे नगपति मेरे विशाल' कहकर उन्होंने हिमालय को सलामी देनी चाही। हिमालय कहीं हरियाली के कारण चटक हरे रंग की मोटी चादर - सा नजर आता है, कहीं पीलापन लिए नजर आता है। कहीं पलस्तर उखड़ी दीवार की

तरह पथरीला नजर आता है। रात घिरने पर हिमालय काला कंबल ओढ़ लेता है।

कटाओं पर हिमालय पर्वत आधा काला - हरा दिखाई देता था। मानो उस पर किसी ने पाउडर छिड़क दिया है। ताजा बर्फ से ढके पहाड़ों को देखकर लगता था मानो साबुन के झाग हों।

8• प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?

उत्तर- प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका किसी बुत- सी 'माया' और 'छाया' के खेल को देखती रह जाती है। ऐसा लगता है मानो प्रकृति उसे अपना परिचय दे रही है। वह उसे और सयानी बनाने के लिए अपने रहस्यों का उद्घाटन कर रही है। लेखिका को अनुभूति होती है कि जीवन की सार्थकता झरनों और फूलों की भाँति स्वयं को दे देने में अर्थात परोपकार में है।इस दृश्य को देखकर सभी सैलानी गाना गाने लगे। पर लेखिका मौन थी। वह किसी ऋषि की भाँति मौन थी और इस सारे परिदृश्य को अपने भीतर समेट लेना चाहती थी। उसके भीतर कुछ बूँद - बूँद पिघलने लगा था।

9• प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन से दृश्य झकझोर गए?

उत्तर- प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को सड़क बनाने के लिए पत्थर तोड़ती, सुंदर पहाड़ी औरतों का दृश्य झकझोर गया। उसने देखा कि उस अद्वितीय सौंदर्य से निरपेक्ष पहाड़ी औरतें पत्थरों पर बैठी पत्थर तोड़ रही थीं। उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे और कईयों की पीठ पर डोको (बड़ी टोकरी) में उनके बच्चे भी बंधे थे। उनके मन को यह विचार बार-बार झकझोर रहा था कि नदी ,फूलों ,वादियों और झरनों के ऐसे स्वर्गीय सौंदर्य के बीच भूख,मौत ,दैन्य और जिजीविषा के बीच जंग जारी है। छोटे-छोटे बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ मवेशी चराने, लकड़ी ढोने का कार्य भी करते हैं।पहाड़ों पर काफी कम तापमान होते हुए भी फौजी सीमाओं की रक्षा करते हैं।

10• सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें।

उत्तर सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में अनेक प्रकार के लोगों का योगदान रहता है पहली भूमिका जो सैलानियों के लिए स्थान के अनुसार वाहन तथा उनके ठहरने संबंधी व्यवस्थाएं करता है । इसमें वाहन का चालक तथा परिचालक भी भूमिका निभाते हैं जो उन्हें गंतव्य स्थान तक पहुंचाते हैं।फिर उनके गाइड की भूमिका शुरू होती है जो पर्यटन स्थल की जानकारी देता है।पर्वतीय स्थलों पर कई बार सैलानियों को अपना बड़ा वाहन छोड़कर जीप जैसा छोटा वाहन लेना पड़ता है।प्राय इन छोटे वाहनों के चालक जितेन नार्गे की भांति ड्राइवर कम गाइड होते हैं।इसके अतिरिक्त उनके ठहरने व खाने पीने की व्यवस्था करने वाले होटल के कर्मचारी तथा पर्यटक स्थल पर छोटी-छोटी अन्य सुविधाएं जैसे बर्फ पर चलने के लिए लंबे बूट व अन्य जरूरी सामान किराए पर देने वाले दुकानदार तथा फोटोग्राफर जैसे लोगों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।

11• "कितना कम लेकर यह समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं।"इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?

उत्तर- लेखिका ने यह कथन पीठ पर बड़ी टोकरी में अपने बच्चों को संभालते हुए कठोर श्रम करने करने वाली औरतों को देखकर कहा है।ऐसा ही दृश्य वह पलामू और गुमला के जंगलों में भी देख चुकी थी जहां बच्चे को पीठ पर बांधकर पत्तों की तलाश में आदिवासी औरतें वन- वन डोलती फिरती हैं।उसे लगता है कि यह श्रम सुंदरियाँ 'वेस्ट इट रिपेइंग' हैं अर्थात् यह कितना कम लेकर समाज को कितना अधिक लौटा देती हैं। एक सत्य है कि हमारे ग्रामीण समाज में महिलाएँ बहुत कम लेकर समाज को बहुत अधिक लौटाती हैं। वे घर-बार भी सँभालती हैं, बच्चों की देखभाल भी करती हैं और परिश्रम करके धनोपार्जन भी करती हैं। यह बात हमारे देश की आम जनता पर भी लागू होती है। जो श्रमिक कठोर परिश्रम करके सड़कों, पुलों, रेलवे लाइनों का निर्माण करते हैं या खेतों में कड़ी मेहनत करके अन्न उपजाते हैं; उन्हें बदले में बहुत कम मज़दूरी या लाभ मिलता है। लेकिन उनका श्रम देश की प्रगति में बड़ा सहायक होता है। हमारे देश की आम जनता बहुत कम पाकर भी देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाती है।

12. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है। इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए।

उत्तर- प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने के क्रम में आज पहाड़ों पर प्रकृति की शोभा को नष्ट किया जा रहा है। वृक्षों को काटकर पर्वतों को खाली किया जा रहा है। शुद्ध एवं पवित्र नदियों को अनेक प्रकार से प्रदूषित किया जा रहा है। नगरों का, फैक्टरियों का गंदा पानी नदियों में छोड़ा जा रहा है। सुख-सुविधा के नाम पर पॉलिथीन का अधिक प्रयोग और वाहनों के द्वारा प्रतिदिन छोड़ा गया धुंआ पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ रहा है। इस कारण मौसम में परिवर्तन आ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं।

प्रकृति के साथ खिलवाड़ को रोकने में हम निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं -

1. वर्तमान में लगे वृक्षों को न काटें।
2.. यथासंभव वृक्षारोपण करें और दूसरों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।
3. वाहनों का प्रयोग यथासंभव कम करें। सब्जी लाने और व्यर्थ सड़कों पर घूमने में वाहनों का उपयोग न करें।
4 पॉलिथीन, अवशिष्ट पदार्थों तथा नालियों के गंदे पानी को नदियों में न जाने दें।

13. प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कमी का जिक्र किया गया है? प्रदूषण के और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आए हैं, लिखें।

उत्तर- प्रदूषण के कारण तापमान - वृदधि के चलते स्नो-फॉल मे कमी हुई है। यही कारण है कि जंगल एवं जंगली जीव लुप्त होने लगे हैं। उनकी पारिस्थितिक तंत्र का नुकसान हो रहा है । चारों ओर यूँ कहें नदी, पहाड़, तालाब, भूमि, सागर यहाँ तक की आकाश भी इससे प्रभावित हो रहा है। भूमि की उत्पादन क्षमता कम हुई है। नदियाँ सुख रही हैं। जल-प्रदूषण भी घातक स्तर तक पहुँच चुका है। वायु-प्रदूषण से मानवीय जीवन संकट की स्थिति में आ चुका है। इस प्रकार से हम देख रहें हैं कि प्रदूषण ने मानव को ही नहीं बल्कि प्रकृति के विभिन्न जीवों को प्रभावित कर दिया है।

14• 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए।

उत्तर- हम सामान्यतः यह देखते हैं कि किसी भी क्षेत्र- विशेष में दुकानें होने से व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं। व्यापारिक गतिविधियों के बढ़ने से लोगों का आवागमन बढ़ जाता है। आवागमन जब बढ़ता जाता है तो विभिन्न सुख- सुविधाओं की पूर्ति के लिए वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट किया जाने लगता है। उसके वास्तविक स्वरूप के साथ छेड़छाड़ होने से, वास्तविक सुंदरता प्रभावित होती है। प्रदूषण के फैलाव के साथ-साथ अपसंस्कृति को बढ़ावा मिलता है। जिसका उस स्थान विशेष में पहले कोई संबंध न रहा हो। इसलिए कटाओ पर दुकान का न होना एक वरदान ही है। सुख-सुविधाओं के अभाव में वहाँ लोगों की भीड़ न होने से प्रकृति को कोई खतरा नहीं होगा। इस तरह वहाँ प्राकृतिक सौंदय वास्तविक रूप में विद्यमान रहेगा।

15• प्रकृति ने जल-संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है ?

उत्तर- प्रकृति ने ऊँचे ऊँचे पर्वत-शिखरों पर हिम के रूप में जल संचय की व्यवस्था कर दी है। सर्दियों के दिनों में जल बर्फ रूप में जम जाता है, जिससे जल संचय होता है। गर्मियों में जब चारों ओर त्राहि-त्राहि मचती है तो वही जमा हुआ वर्फ पिघलकर नदियों के द्वारा हमारी प्यास बुझाती है।

16• **देश की सीमा पर बैठे फौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं? उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?**

उत्तर- देश की सीमा पर बैठे फौजी देश एवं देशवासियों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। सीमाओं पर रहना आसान नहीं है। उन सीमाओं पर उन्हें विषम संकट और परिस्थितियों में रहकर भी अपने देश के लिए मर मिटने का जज्बा कम नहीं होता । वे केवल सीमाओं की रक्षा नहीं करते बल्कि विदेशी घुसपैठियों, आक्रमणकारियों से भी संघर्ष करते हैं । चाहे समुद्री, चाहे रेगिस्तानी सीमा और चाहे पर्वतीय सीमा, सभी सीमाओं पर फौजी मुस्तैदी से तैनात रहते हैं। साथ ही साथ वे समय- समय पर देश को खण्डित करने वाली ताकतों से भिड़ते ही रहते हैं, जिनमें फौजियों को अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़ती है ।

देश के नागरिक होने के नाते हमारा यह कर्तव्य है कि हम फौजियों को सम्मान दें । जब भी आवश्यकता पड़े, हमें उनका सहयोग करना चाहिए। अपने आस-पास फौजी परिवारों के बच्चों, महिलाओं, माता एवं पिता को सहर्ष मदद करनी चाहिए । इस तरह से हम उनके साथ सहानुभूति के जुड़ाव महसूस करेंगे। जिससे वे देश की अखंडता एवं संप्रभुता के लिए सदैव प्रेरित हों । हम अपने देश में ऐसा कोई काम न करें जिससे उनकी एकाग्रता भंग हो ।

अति संक्षिप्त प्रश्न

1• **साना साना हाथ जोड़ि का क्या अर्थ है?**

उत्तर - साना साना हाथ जोड़ी का अर्थ है - छोटे छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ।

2• **लेखिका ने यूमथांग की यात्रा के दौरान कौन-कौन से वृक्ष देखे?**

उत्तर- पाइन और धूपी के खूबसूरत नुकीले पेड़।

3• **लेखिका ने साना-साना हाथ जोड़ि प्रार्थना किससे सीखी?**

उत्तर- लेखिका ने साना-साना हाथ जोड़ि प्रार्थना एक नेपाली युवती से सीखी थी।

4• **साना साना हाथ जोड़ि पाठ की लेखिका कौन हैं?**

उत्तर- मधु कांकरिया।

5• **मधु कांकरिया की दो रचनाओं का नाम बताएं।**

उत्तर- सलाम आखिरी और खुले गगन के लाल सितारे।

6• **लेखिका के ड्राइवर का क्या नाम था?**

उत्तर- जितेन नार्गे।

7• **खूब ऊंचाई से शिखरों से गिरते फेन उगलते झरने का क्या नाम था?**

उत्तर- सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल

8• **लेखिका ने बहते हुए झरने को किसका प्रतीक बताया?**

उत्तर- जीवन के अनंतता का प्रतीक

9• **लेखिका झरने के पास बैठकर क्या सुनने लगी?**

उत्तर- लेखिका झरने के पास बैठकर झरने के संगीत के साथ ही आत्मा का संगीत सुनने लगी।

10• **'चैरवेति -चैरवेति का' क्या अर्थ है?**

उत्तर- चैरवेति - चैरवेति का अर्थ है- चलते रहो ,चलते रहो

लघु उत्तरीय प्रश्न

1• **रात्रि में गंतोक के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में करें।**

उत्तर- गंतोक में रात में आसमान की ओर देखने से ऐसा लगता है मानो सारे तारे बिखरकर नीचे टिमटिमा रहे थे। दूर ढलान पर सितारों के गुच्छे रोशनियों की झालर की तरह दिखाई दे रहे थे। यह सुंदरता लेखिका में सम्मोहन जगा रही थी।

2• **कटाओ भारत का स्विट्जरलैंड है। इस कथन पर लेखिका की सहयात्री मणि को क्या आपत्ति थी?**

उत्तर - कटाओ सिक्किम का एक बेहद खूबसूरत स्थान है।किन्तु जब लेखिका वहाँ गई थी उस समय तक वह टूरिस्ट स्पॉट नहीं बनने के कारण सुर्ख़ियों में नहीं आया था। गाइड जितेन नार्गे कहता है कि कटाओ भारत का स्विट्जरलैंड है, तो लेखिका की सहयात्री मणि ने इस पर आपत्ति की, क्योंकि वह स्विट्जरलैंड घूम चुकी थी। उसने प्रतिवाद करते हुए कहा है कि "नहीं स्विट्जरलैंड भी इतनी ऊँचाई पर नहीं है और न ही इतना सुंदर ।"

3• **लेखिका को पलामू तथा गुमला के जंगलों और यूमथांग के पर्वतीय अंचल के जनजीवन में क्या समानता दिखाई दी ?**

उत्तर:- लेखिका ने देखा यूमथांग में कुछ पहाड़ी औरतें पत्थरों पर बैठी पत्थर तोड़ रही थीं। उनका शरीर अत्यंत कोमल एवं हाथों में कुदाल और हथौड़े । उनमें से कुछ ने पीठ पर बँधी डोको में उनके बच्चे भी बाँध रखे थे। वे कुदाल को पूरी ताकत के साथ जमीन पर मार रही थीं। इसी प्रकार एक बार पलामू और गुमला के जंगलों में लेखिका ने देखा था पीठ पर बच्चे को बाँधकर पत्तों की तलाश में वन-वन डोलती आदिवासी युवतियाँ । इस प्रकार दोनों अंचलों में महिलाएँ मातृत्व और श्रमसाधना को साथ-साथ निभाती हैं। इन पत्थर तोड़ती पहाड़िनों के हाथों में पड़े छाले और उन आदिवासी युवतियों के फूले हुए पाँव दोनों एक ही कहानी कह रहे थे कि आम जिंदगियों की कहानी हर जगह एक-सी है।

4• **पताकाएं बौद्ध संस्कृति का अंग किस प्रकार हैं?**

उत्तर - गैंगटॉक में जब भी किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है, उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं, उन्हें उतारा नहीं जाता धीरे- धीरे ये अपने आप नष्ट हो जाती है। किसी नये कार्य की शुरुआत में भी ये पताकाएँ लगा दी जाती हैं पर वे रंगीन होती हैं। इस प्रकार पताकाएँ बौद्ध संस्कृति की एक पहचान हैं, उसका अभिन्न अंग हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1• **कटाओ की सुंदरता का चित्र अपने शब्दों में खींचते हुए बताएँ कि सैलानियों ने वहाँ कैसे आनंद लिया ?**

उत्तर :- कटाओं में ताजा-ताजा बर्फ गिरी थी। जो पर्वत थे वे आधे हरे-काले दिख रहे थे लग रहा था जैसे किसी ने इन पहाड़ों पर पाउडर छिड़क दिया हो। कहीं पाउडर बच गई और कहीं वह धूप में बह गई। पहाड़ चाँदी जैसे चमक रहे थे। सभी सैलानी जीप से उतरकर बर्फ पर कूदने लगे थे। यहाँ घुटनों तक नरम - नरम बर्फ थी। ऊपर आसमान और बर्फ से ढके पहाड़ एक हो रहे थे। कई सैलानी बर्फ पर लेटकर हर लम्हे की रंगत को कैमरे में कैद कर रहे थे। लेखिका की भी इच्छा हुई कि वे भी बर्फ पर लेटकर इस बर्फीली जन्नत को जी भर कर देखें पर उनके पास बर्फ पर पहने पहनने वाले लंबे-लंबे जूते नहीं थे। अतः उन्हें अपनी इच्छा को दबाना पड़ा। लेखिका सोचती है शायद ऐसी ही विभोर कर देने वाली दिव्यता के बीच हमारे ऋषि- मुनियों ने वेदों की रचना की होगी। जीवन सत्यों को खोजा होगा। सर्वे भवंतु सुखिनः का महामंत्र पाया होगा। अंतिम संपूर्णता का प्रतीक वह ऐसा सौंदर्य था कि बड़े से बड़ा अपराधी भी इसे देख ले तो वह करुणा का अवतार बुद्ध बन जाए।

2• **'एवर वंडर्ड टू डिफाइड डेथ टू बिल्ड दीज रोड्स'**

(आप ताज्जुब करेंगे पर इन रास्तों को बनाने में लोगों ने मौत को झुठलाया है।) इस कथन के आलोक में पर्वतीय क्षेत्रों में सड़क निर्माण में आने वाली बाधाओं पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- पर्वतीय क्षेत्रों में सड़क निर्माण का कार्य बड़ा कठिन है। इन क्षेत्रों से गुजरने भर में लोगों के प्राण काँप उठते हैं उन रास्तों में सड़क निर्माण का कार्य मौत को चुनौती देने के समान है। लेकिन फिर भी जीत जिंदगी की होती है।

पहाड़ों पर रास्ता बनाने के लिए पहले डायनामाइड से विस्फोट कर चट्टानों को उड़ा दिया जाता है बड़े - बड़े पत्थरों को तोड़ मोड़कर एक आकार के छोटे - छोटे पत्थरों में बदला जाता है, फिर बड़े

से जाले में उन्हें लंबी पट्टी की तरह बिठाकर कटे रास्तों पर बाड़े की तरह लगाया जाता है यह बड़ा ही कठिन कार्य है, इसमें पल-पल बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है। जरा सी चूक होते ही व्यक्ति सीधे नीचे पाताल में गिर सकता है। डायनामाइट से विस्फोट होने के बाद धक्के से बाहर आते पत्थरों की चोट तथा सँकरे रास्तों के किनारे पाँव फिसलने से कई बार मजदूरों की जान चली जाती है, पर फिर भी मौत को झुठलाकर आदमी आगे बढ़ता ही रहता है। इन रास्तों को बनाने में कितने ही जीवन अपनी मियाद से पहले ही खत्म हो जाते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1· साना साना हाथ जोड़ी पाठ --------है।

क· एक संस्मरण   ख· एक रेखाचित्र

ग· एक यात्रावृतांत   घ· एक कहानी

उत्तर - ग· एक यात्रावृतांत

2· साना साना हाथ जोड़ी पाठ में किस शहर के सौंदर्य का वर्णन है?

क· अगरतला   ख· गुवाहाटी

ग· महाबलेश्वर   घ· गंगटोक

उत्तर- घ· गंगटोक

3· 'गंतोक' का क्या अर्थ है?

क· घाटी   ख· जंगल

ग· पत्थर   घ· पहाड़

उत्तर - घ· पहाड

4· गंतोक में श्वेत पताकाएँ किस अवसर पर फहराई जाती हैं?

क· शांति के अवसर पर

ख· युद्ध के अवसर पर

ग· शोक के अवसर पर

घ· किसी उत्सव के अवसर पर

उत्तर - ग· शोक के अवसर पर

5· लेखिका ने गंगटोक को किसका शहर कहा है?

क· मेहनतकश बादशाहों का

ख· परिश्रमी लोगों

ग· वैज्ञानिकों की देन का

घ· प्राचीन परंपराओं का

उत्तर- क· मेहनतकश बादशाहों की

6· रहस्यमयी तारों भरी रात लेखिका के मन में क्या जगा रही थी?

क· आदर   ख· प्यार

ग· सम्मोहन   घ· आशा

उत्तर- ग· सम्मोहन

7· प्रकृति जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार करती है?

क· सर्दियों में पर्वतों पर बर्फ पड़ती है

ख· गर्मियों में वह वर्फ पिघलती है

ग· पहाड़ों से निकलने वाली नदियाँ लोगों की प्यास बुझाती हैं

घ· सभी कथन सत्य है।

उत्तर- घ· सभी कथन सत्य है।

8· गैंगटॉक नगर किस राज्य की राजधानी है ?

क· आसाम   ख· सिक्किम

ग· बंगाल   घ· अरुणाचल

उत्तर- ख· सिक्किम

9· कंचनजंघा किस पर्वत की चोटी का नाम है?

क· हिमालय पर्वत   ख· कंचन पर्वत

ग· सुमेरु पर्वत   घ· नीलमणि पर्वत

उत्तर - क· हिमालय पर्वत

10· जितने नार्गे की जीप में किसकी तस्वीर लगी हुई थी?

क· महात्मा गाँधी   ख· दलाई लामा

ग· महात्मा बुद्ध   घ· महावीर की

उत्तर- ख· दलाई लामा

11· 'कवी- लोंगस्टॉक' नामक स्थान पर कौन - सी हिंदी फिल्म की शूटिंग हुई थी?

क· गाइड   ख· क्रांति

ग· उपकार   घ· देशप्रेमी

उत्तर- क· गाइड

12· 'मशगूल' शब्द का अर्थ है-

क· व्यस्त   ख· मशहूर

ग· प्रसिद्ध   घ· सुंदर

उत्तर- क· व्यस्त

JAC वार्षिक माध्यमिक परीक्षा - 2023

विषय - हिन्दी

हिंदी-A
पूर्णांक- 40

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

विषय- हिंदी
समय 1:30 घंटा

खण्ड 'क' (अपठित गद्यांश एवं काव्यांश)

निर्देश- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 1 से 4 तक के लिए सही विकल्प का चयन करें:

हम जिस तरह भोजन करते हैं, गाछ - बिरिछ भी उसी तरह भोजन करते हैं। हमारे दांत हैं, कठोर चीज खा सकते हैं। नन्हे बच्चों के दांत नहीं होते, वे केवल दूध पी सकते हैं। गाछ बिरिछ के भी दांत नहीं होते, इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। गाछ बिरिछ जड़ के द्वारा माटी से रसा पान करते हैं। चीनी में पानी डालने पर चीनी गल जाती है। माटी में पानी डालने पर उसके भीतर बहुत से द्रव्य गल जाते हैं। गाछ - बिरिछ वे तमाम द्रव्य सोखते हैं। जड़ों को पानी ना मिलने पर पेड़ का भोजन बंद हो जाता है, पेड़ मर जाता है।

1. गाछ बिरिछ का क्या अर्थ होता है?

1. फल -फूल
2. पेड़ -पौधे
3. घास -पात
4. मिट्टी -पानी

उत्तर- 2. पेड़- पौधे

2. गाछ -बिरिछ के क्या नहीं होते?

1. पत्ते
2. फूल
3. फल
4. दांत

उत्तर- 4. दांत

3. 'गाछ - बिरिछ' किसके द्वारा माटी से रसपान करते हैं?

1. जड़ के द्वारा
2. तना के द्वारा
3. पत्तों के द्वारा
4. टहनी के द्वारा

उत्तर- 1. जड़ के द्वारा

4. पेड़ कब मर जाता है?

1. मिट्टी न मिलने पर
2. दवा न मिलने पर
3. पानी न मिलने पर
4. खाद न मिलने पर

उत्तर- 3. पानी न मिलने पर

निर्देश: प्रस्तुत पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 5 से 8 तक के लिए सही विकल्प का चयन करें

लक्ष्य तक पहुंचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा।
लक्ष्य है अति दूर, दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं,
किंतु पथ के कंटकों को को हम सुमन भी मानते हैं,
जब प्रगति का नाम जीवन, यह अकाल विराम कैसा।
लक्ष्य तक------
धनुष से जो छूटता है बाण कब मग में ठहरता है।
देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही वेध करता है
लक्ष्य प्रेरित बाण है हम, ठहरने का काम कैसा।
लक्ष्य तक----------
बस वही है पथिक जो पथ पर निरंतर अग्रसर हो,
हो सदा गतिशील जिसका लक्ष्य प्रतिक्षण निकटतम हो ।
हार बैठे जो डगर में पथिक उसका नाम कैसा।
लक्ष्य तक-------
बाल रवि की स्वर्ण किरने निमिष में भू पर पहुंचती
कालिया का नाश करती ज्योति जगमग जगत धरती
ज्योति के हम पुंज फिर हमको अमा से भीति बीच कैसा।
लक्ष्य तक-------

5. धनुष से छूटा हुआ बाण क्या करता है?

1. लक्ष्य भेद
2. प्रभेद
3. अभेद
4. अभेद्य

उत्तर- 1. लक्ष्य भेद

6. लक्ष्य के पथिक कंटकों को क्या मानते हैं ?

1. पत्ते
2. फल
3. पौधे
4. फूल

उत्तर- 4.फूल

7. बाल रवि की किरणें कैसी होती हैं?

1. रजत
2. हरित
3. स्वर्ण
4. श्याम

उत्तर- 3. स्वर्ण

8. कहां तक पहुंचे बिना पथिक को विश्राम नहीं करना चाहिए ?

1. घर
2. लक्ष्य
3. बाजार
4. धर्मशाला

उत्तर- 2. लक्ष्य

खंड 'ख, व्याकरण

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन करें

9. जिस वाक्य में कर्ता और क्रिया उपस्थित हो, वह कौन सी क्रिया होती है?

1. अकर्मक
2. सकर्मक
3. द्विकर्मक
4. प्रेरणार्थक

उत्तर- 2. सकर्मक

10. 'बच्चा पुस्तक पढ़ रहा है' कौन -सी क्रिया है ?

1. अकर्मक
2. सकर्मक
3. द्विकर्मक
4. प्रेरणार्थक

उत्तर- 2. सकर्मक

11. 'किसान खेत जोत रहा है' इसमें क्रियापद कौन है ?

1. किसान
2. खेत
3. जोत
4. जोत रहा है

उत्तर- 4. जोत रहा है

12. कौन सा वाक्य अकर्मक क्रिया का उदाहरण है ?

1. रमेश हंस रहा है
2. मां भोजन बना रही है
3. वह गीत गा रहा है
4. मैं शरबत पी रहा हूं

उत्तर- 1. रमेश हंस रहा है

13. 'अंबर' का एक अर्थ होता है 'वस्त्र' और दूसरा ?

1. आकाश
2. सागर
3. पाताल
4. पोशाक

उत्तर- 1. आकाश

14. निम्नलिखित में से श्वेत का अनेकार्थी शब्द नहीं है ?

1. सफेद 2. श्याम
3. उजला 4. सफेदी

उत्तर- 2. श्याम

15. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द समुच्चयबोधक अव्यय है ?

1. धीरे-धीरे 2. अरे
3. अथवा 4. वाह

उत्तर- 3. अथवा

16. पता नहीं वह---- चला गया। सही अव्यय पद चुने:

1. यहां 2. वहां
3. तब 4. कब

उत्तर- 4. कब

17. 'शिक्षक चाहते हैं कि उनके विद्यार्थी अच्छा बने'- यह कौन सा वाक्य है ?

1. सरल 2. मिश्र
3. संयुक्त 4. उपवाक्य

उत्तर- 2. मिश्र

18. 'प्रतिदिन' कौन -सा समास है ?

1. अव्ययीभाव 2. तत्पुरुष
3. दिगु 4. बहुव्रीहि

उत्तर- 1. अव्ययीभाव

19. निम्न में से बहुव्रीहि समास कौन सा है ?

1. शरणागत 2. दिन रात
3. लंबोदर 4. पंचवटी

उत्तर- 3. लंबोदर

20. 'पक्षी आकाश में उड़ेंगे'- यह कौन सा वाच्य है ?

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य 4. इनमें से कोई नहीं

उत्तर- 1. कर्तृवाच्य

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक

निर्देश: प्रस्तुत पठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों में से सही विकल्प का चयन करें:

बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह कुछ सुस्त और बोदा सा था, किंतु इसी कारण बाल गोविंद भगत उसे और भी मानते।

21. बाल गोविंद भगत का बेटा कितना था ?

1. एक 2. दो
3. तीन 4. चार

उत्तर- 1. एक

22. बाल गोविंद भगत का बेटा कैसा था ?

1. सुस्त 2. दुरुस्त
3. तंदुरुस्त 4. सुस्त और बोदा- सा

उत्तर- 4. सुस्त और बोदा-सा

फादर को जहरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए इस शहर का विधान क्यों ?

23. फादर बुल्के की मृत्यु किस रोग से हुई ?

1. जहर बाद से 2. तपेदिक से
3. कैंसर से 4. ज्वर से

उत्तर- 1. जहर बाद से

24. 'विधान' का क्या अर्थ होता है ?

1. विधा 2. विद्या
3. विघ्न 4. नियम

उत्तर- 4. नियम

निर्देश: प्रस्तुत पठित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों में से सही विकल्प का चयन करें:

हमरौ हरि हारिल की लकरी।

मन क्रम वचन नंद नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।

जागत सोवत स्वप्न दिवस -निसि, कान्ह- कान्ह जकरी।।

25. गोपियों की दशा किस पक्षी की तरह हो गई है ?

1. हारिल 2. हरित्र
3. हिरण 4. कपोत

उत्तर- 1. हारिल

26. यहां नंद -नंदन किसे कहा गया है ?

1. उद्धव को 2. अक्रूर को
3. सुदामा को 4. कृष्ण को

उत्तर- 4. कृष्ण को

घेर घेर घोर गगन, धराधर ओ।

ललित ललित, काले घुंघराले,

बाल कल्पना के - से पाले।

27. यह पद्यांश किस कविता का अंश है ?

1. आत्मकथ्य 2. कन्यादान
3. उत्साह 4. अट नहीं रही है

उत्तर- 3. उत्साह

28. कवि बादल को क्या घेरने को कह रहे हैं?

1. पूरा आकाश 2. जंगल
3. सागर 4. पहाड़

उत्तर- 1. पूरा आकाश

29. कैप्टन कौन था ?

1. सैनिक 2. चश्मा बेचने वाला
3. मिठाई बेचने वाला 4. घूमने वाला

उत्तर- 2. चश्मा बेचने वाला

30. लेखक ने खीरा खाने से क्यों इंकार कर दिया था ?

1. आत्मसम्मान की रक्षा के लिए
2. खाने की इच्छा नहीं थी
3. घमंडी होने के कारण
4. दूसरों की चीज खाना पसंद नहीं था।

उत्तर- 1. आत्मसम्मान की रक्षा के लिए

31. बिस्मिल्लाह खा क्या बजाते थे ?

1. बांसुरी 2. सितार
3. शहनाई 4. वीणा

उत्तर- 3. शहनाई

32. लेखिका (मन्नू भंडारी) का बचपन किस शहर में बीता ?

1. कानपुर 2. अजमेर
3. जयपुर 4. जैसलमेर

उत्तर- 2. अजमेर

33. परशुराम के गुरु कौन थे ?

1. शिव 2. ब्रह्मा
3. विष्णु 4. गणेश

उत्तर- 1. शिव

34. कवि नागार्जुन मैथिली में किस नाम से प्रतिष्ठित है ?

1. यात्रा 2. यात्री
3. बाबा 4. भक्ति

उत्तर- 2. यात्री

35. मृगतृष्णा का अर्थ है ?

1. छलावा 2. हिरण
3. मृग की प्यास 4. दिखावा

उत्तर- 1. छलावा

36. मुख्य गायक की आवाज कैसी थी ?

1. हल्की-फुल्की 2. लकड़ी जैसी
3. चट्टान जैसी भारी 4. पतली

उत्तर- 3. चट्टान जैसी भारी

37. भोलानाथ के सिर में क्या थी ?

1. तेज दर्द 2.छोटे-छोटे बाल
3. लंबी लंबी जटाए 4. घुंघराले बाल

उत्तर- 3. लंबी-लंबी घटाएं

38. कभी-कभी बच्चे किस का जुलूस निकालते थे ?

1. नारेबाजी का 2. बारात का
3. संगीत का 4. खेल का

उत्तर- 2. बारात का

39. जॉर्ज पंचम की लाट कहां स्थित थी ?

1. आगरा 2. कोलकाता
3. मुंबई 4. दिल्ली

उत्तर- 4. दिल्ली

40. 'गंगटोक' नगर किस राज्य की राजधानी है ?

1. सिक्किम 2. असम
3. अरुणाचल 4. मिजोरम।

उत्तर- 1. सिक्किम

JAC वार्षिक माध्यमिक परीक्षा - 2023

विषय - हिन्दी

विषयनिष्ठ प्रश्नोत्तर

हिन्दी 'ए' 'खण्ड 'क'

अपठित गद्यांश

(1) हँसी भीतरी आनंद कैसे प्रकट करती है?

उत्तर:- प्रसन्न व्यक्ति अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति मुसकुराकर करता है। यदि प्रसन्नता अधिक होती है तो उसकी मुसकुराहट खिलखिलाहट में बदल जाती है। वह उस समय सभी दुश्चिंताओ से मुक्त हो जाता है। हम व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं स्वास्थ्य का आकलन उसकी को हँसी को देखकर कर लेते हैं।

(2) पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्व क्यों दिया ?

उत्तर:- पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्वपूर्ण निम्नलिखित कारणों से माना है:-

(क) हँसी विभिन्न कला-कौशलों से युक्त हैं।

(ख) आनंद से हँसने से आयु बढ़ती है।

(ग) हँसी को औषधि के रूप में माना जाता है, यह रोगियों के साथ- साथ स्वस्थ्य व्यक्तियों के लिए भी लाभकारी है।

(3) डॉ. हस्फलेण्ड ने एक पुस्तक में हँसी के बारे में क्या लिखा है ?

उत्तर : डॉ हस्फलेण्ड ने लिखा कि हँसी उत्तम चीज है, जो औषधि के रूप में काम करती है। यह रोगियों के साथ-साथ सबके काम की वस्तु है।

(4) एक अंग्रेज डॉक्टर ने क्या कहा है?

उत्तर:- एक अंग्रेज डॉक्टर कहना है कि किसी नगर में दवाई लदे बीस गधे ले जाने से ज्यादा लाभकारी एक हँसोड़ आदमी ले जाना है।

अथवा

जिन्दगी किसका नाम है ?

उत्तर:- जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है।

(5) हँसी खुशी उत्तर का ही नाम जीवन कैसे हैं ?

उत्तर:- व्यक्ति जब भारी अवसाद, तनाव एवं दुःख में भरा होता हैं तब उसका एक - एक पल कठिन हो जाता है। तब वह बहुत कम जी पाता हैं। जबकि खुशहाल व्यक्ति जिंदा दिली के साथ जीता है तब उसकी आयु लंबी हो जाती है।

अथवा

हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिन्ह कैसे है?

उत्तर: जब व्यक्ति का आंतरिक मन उमंग एवं उल्लास से भरा होता है तो हँसी दर्पण की भाँति उसके मन के आनंद को प्रदर्शित कर देती है।

हिन्दी 'ए' 'खण्ड 'ख'

पाठ्य पुस्तकें (लघु उत्तरीय प्रश्न)

(6) सेनानी न होते हुए भी लोग चशमे वाले को कैप्टन क्यों कहते थे ?

उत्तर:- चश्मेवाला एक साधारण बूढ़ा, मरियल एवं लंगड़ा आदमी था। वह सेनानी भी नहीं था। किन्तु उसके हृदय में देश एवं इस पर मर मिटनेवाले शहीदों के प्रति बड़ा ही आदर था। इसलिए वह नेताजी की मूर्ति को रोज बदल- बदल कर चश्मा पहनाता था। लोग उसके इस व्यवहार से प्रभावित होकर उसे कैप्टन कहा करते थे। उन्हें लगता था कि शायद कैप्टन नेताजी के साथ फौज में होगा। इस प्रकार की अटकलें लोग लगाया करते थे।

(7) काशी में हो रहे कौन से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे ?

उत्तर :- वैसे तो परिवर्तन संसार का नियम है। फिर भी पुरातन से भावनात्मक जुड़ाव, चीजें बदलने पर पीड़ा पहुँचाती हैं। उसी प्रकार बिस्मिल्ला खाँ की कर्मस्थली काशी में सबकुछ परिवर्तित हो रहा था। वहाँ का खान-पान, पुरानी परंपराएँ, मलाई बर्फ का स्वाद, कुलसुम हलवाईन की संगीतात्मक कचौड़ी के साथ-साथ संगीत एवं साहित्य एवं उनसे प्रेम करने वाले साहित्यकार एवं संगीतकारों का सम्मान भी बदल गया है लोग अब उन सब चीजों को महत्व नहीं देते। वे जीवन के आखरी पड़ाव में यह भी देख रहे थे कि " हमेशा भाईचारा एवं प्रेम का संदेश देने वाले काशी में अब हिन्दू मुस्लिम समुदायों में प्रेम भाव नहीं रहा। इन्हीं परिवर्तनों को देखकर बिस्मिल्ला खाँ व्यथित थे।

(8) बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

उत्तर :- बच्चे की मुसकान बड़ी आकर्षक एवं आनंदित करनेवाली होती है चूँकि उसकी मुसकुराहट में किसी प्रकार का छल कपट नहीं होता, वह अपना-पराया, अथवा अच्छा-बुरा सोच कर नहीं मुसकुराता बल्कि निष्कपट मुसकुरा देता है। वह बिल्कुल निश्छल एवं अबोध। जबकि एक बड़े व्यक्ति की मुसकुराहट बच्चे की मुसकुराहट से एकदम अलग है। वह समय, स्थिति, व्यक्ति एवं परिस्थितियों को देखकर सुनकर एवं विचारकर मुसकुराता है। वह अपनी मुसकुराहट में नियंत्रण भी रख सकता है जबकि बच्चे की नहीं। उसकी मुसकुराहट निष्काम एवं स्वच्छ है। जबकि बड़े व्यक्ति की मुसकुराहट कामनाप्रद एवं नियंत्रित।

उद्गम

(9) सफलता के चरम शिखर पर पहुँचकर यदि व्यक्ति लडखडाते, हैं तब उसके सहयोगी उसे किस प्रकार सँभालते हैं ?

उत्तर: जब कोई साधारण व्यक्ति सफलता के चरम शिखर को प्राप्त करता है तब कभी- कभी अत्यधिक संवेगों के वेग से वह डगमगाने लगता है। उस समय उसके साथी जो पीछे होते हैं; उसे सहयोग, साहस, उत्साह, शाबासी एवं प्रेम देकर सँभालते हैं। पीछे ठहरे हुए साथी कभी-कभी अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं कि वह शिखर पर पहुँचा हुआ साथी कही नीचे न गिर जाए। लोग ऊँचाई को प्राप्त व्यक्ति की प्रशंसा तो करते हैं परंतु उसके साथियों के सहयोग एवं सपर्मण को समझ नहीं पाते उसे कोई प्रसिद्धी नहीं मिलती। फिर जिए भी दूर रहकर कर वह पीछे का संगतकार साथी ऊँचाई पर पहुँचे साथी का सहयोग करता है।

अथवा

लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं हैं?

उत्तर:- लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नांकित विशेषताएँ बताई है

(1) वीर योद्धा अपनी वीरता युद्धभूमि में प्रदर्शित करते हैं।

(2) वीर योद्धाओं को अपने पराक्रम का परिचय बोलकर बताना नहीं शोभता।

(3) योद्धा धैर्यवान, एवं सहनशील होते हैं।

(4) योद्धा कभी अपशब्द नहीं कहते !

(10) 'माता का अँचल' पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का उल्लेख करें जो

आपके दिल को छू गए हैं।

उत्तर:- शिवपूजन सहाय द्वारा रचित उपन्यास "देहाती दुनिया" से लिया गया पाठ 'माता का अँचल' में ढेर सारे ऐसे प्रसंग है जो मेरे हृदय को छूते हैं; जैसे पिताजी के साथ भोलानाथ का अधिकांश समय व्यतीत करना। आजकल की भागती हुई दुनिया में माता- पिता अपनी संतानों के लिए समय नहीं निकाल पा रहे हैं। हम यहाँ देखते है कि भोलानाथ अपना अधिकांश समय पिता के साथ दिखाई देते हैं जैसे उनका सोना, पूजा-पाठ, खेलकूद, फसलों की बुआई के साथ-साथ बारात निकालने तक। किन्तु मेरा मन भोलानाथ को भोजन कराता हुआ एक पिता और माता को देखकर मेरा मन द्रवित होता जाता है कि किस प्रकार गोरस सान कर उनकी माता तरह-तरह के पशु-पक्षियों का नाम लेकर बड़ी आत्मीयता से एक नटखट बालक को भोजन कराते हैं। आज के समय में उस तरह के आत्मीय भाव से बच्चों को भोजन कुराने का सारा जिम्मा मोबाइल और टीवी ने ले लिया है यह देखकर मेरा मन बड़ा दुखी होता है।

अथवा

गंगटोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर क्यों कहा गया है?

उत्तर :- गंगटोक मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है। जिसका अर्थ है कड़ी मेहनत कराया किन्तु गर्मी के मालिक । चुक यह एक पर्वतीय क्षेत्र है इसलिए परिस्थितियाँ बडी कठिन हैं। यहाँ के लोगों को अपनी सामान्य जरूरतों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी यहाँ के लोग विभिन्न आपदाओं, विपदाओं एवं बाधाओं के बीच मस्त होकर अपना जीवन जीते हैं। इसलिए गंगटोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा जाता है।

हिन्दी 'ए' खण्ड 'ग'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

11. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में निबंध लिखें ।

(क) हमारा राज्य झारखंड

संकेत बिंदु - परिचय, इतिहास, सीमा, निवासी

परिचय :- हरियाली की गोद मे अवस्थित हमारा झारखंड राज्य बहुत ही प्यारा है। इसका गठन 15 नवंबर 2000 ई० को हुआ। यह बिहार के दक्षिणी भाग को अलग करके बनाया गया है। झारखंड का अर्थ है 'झार झंखारों और खनिज संपदाओं का क्षेत्र'। हरियाली से भरपूर झारखंड खनिज संपदाओं में भी काफी संपन्न है। यह भारत का 28वाँ राज्य है।

इतिहास :- झारखण्ड शब्द का उद्‌गम दो शब्दों से मिलने से हुई है- झार अथवा झाड़ जिसे स्थानीय भाषा में वन कहते हैं और - खण्ड अर्थात् टुकड़ा । झारखण्ड राज्य का सर्वप्रथम साहित्यिक प्रमाण 'ऐतरेय ब्राह्मण' से प्राप्त होता है। 'ऐतरेय ब्राह्मण' में इस क्षेत्र के लिए पुण्ड्र / पुण्ड शब्द प्रयोग किया है।

सीमा :- झारखंड राज्य के उत्तर में बिहार है। इसके दक्षिण में उड़ीसा, पूरब में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश राज्य हैं। इस राज्य की लंबाई पूरब से पश्चिम की ओर 163 किलोमीटर है तथा चौड़ाई उत्तर दक्षिण की ओर 380 किलोमीटर है।

निवासी :- झारखंड में कुल 32 जनजातियाँ पाई जाती हैं, जिनकी संख्या कुल जनसंख्या की 26.2% है। साथ ही हिन्दू- श्रम आबादी में कुलीन उच्च जातियाँ ब्राह्मण, भूमिहार, राजदूत, और कायस्थ के साथ-साथ यादव, कुर्मी, अनुसुचित जातियाँ दलों निवास करती है। जो खोरठा, संथाली, बांग्ला, उर्दू, नागपुरी कुड़ुख, मुंडारी, हो, उड़िया, फुरमाली, पंचपरगनिया आदि भाषाएँ बोलते हैं।

यहाँ की संस्कृति रंग-बिरंगी है। लोग यहाँ प्यार से रहते हैं।

(ख) निबंध परिश्रम का महत्व

संकेत बिन्दु:- भूमिका, श्रम जीवन का सत्य, उन्नति और विकास में सहायक, उपसंहार

भूमिका :- हम यदि जीवन को ऊँचा उठाना चाहते हैं तो उसमें सबसे पहला काम होगा श्रम करना, परिश्रम करना। जिससे जीवन का उत्थान होगा एवं सुयश मिलेगा। श्रम से कठिन कार्य भी संपन्न किए जा सकते हैं। जो श्रम करता है उसका भाग्य अवश्य साथ देता है। श्रम के बल पर ही कितने ही योद्धाओं ने उत्तंग, अगम्य, पर्वत- चोटियों पर अपनी विजय का ध्वज फहरा दिया। कितनों ने अंतरिक्ष की सीमा लाँघ कर चंद्रमा में कदम रखे। श्रम के बल पर ही मनुष्य ने समुद्र को लाँघ लिया। इस तरह से हम देखें तो परिश्रम ही जीवन में उत्कर्ष और महानता लाने वाला है। वास्तव में परिश्रम ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

श्रम जीवन का सत्य : इस तरह से हम देखते हैं श्रम ही जीवन का सत्य है। इस सत्य को जिसने समझा है वह मेहनत से कभी जी नहीं चुराता जिससे उसके सारे मनोरथ होते हैं, व्यक्ति जो श्रम को समझ जाता है वह निरंतर परिश्रम करने से कभी नहीं घबराता वह संसार की सारी सुख - सुविधा का उपयोग एवं अपने कर्म से समाज को भी अच्छा योगदान देता है, जिससे उसका जन्म सफल होता है। इसी के स् पर आलसी व्यक्ति कभी सुखी नही रहता है। वह बैठा बैठा साथ सुख पाना चाहता है लेकिन वह अभागा दूसरों के भाग्य को देखकर जलता रहता है और कुंठित होकर जीता है। इसलिए जिसे भी सफल होना है उसे श्रम करना होगा यही जीवन का भी सत्य है।

उन्नति और विकास में सहायक :- श्रम व्यक्ति के सामाजिक आर्थिक, नैतिक आदि विकास में सहायक है। यह व्यक्ति की आर्थिक रूप से समान व साथ ही यह व्यक्ति को सामाजिक प्रतिष्ठा भी दिलाता जिससे व्यक्ति सशक्त बनता है, जीवन के प्रति अच्छे दृष्टिकोण का विकास होता है, आन्तरिक चेतना के साथ-साथ आधारभूत नैतिक शक्तियों का विकास होता है।

उपसंहार : परिश्रमी व्यक्ति सिर्फ परिवार का ही नहीं वरन् समाज का भी बहुमूल्य पूंजी है। श्रम वह महान पूंजी है, जिससे व्यक्ति का विकास और राष्ट्र की उन्नति होती है। इस मरणशील जीवन को अमर करने के लिए परिश्रमशीलता की आवश्यकता है।

परोपकार

संकेत बिन्दु :- अर्थ, महत्व, कुछ उदाहरण, उपसंहार

अर्थ:- परोपकार शब्द पर उपसर्ग एवं उपकार से बना है पर + उपकार अर्थात् परोपकार। जिसका अर्थ होता है। दूसरों की भलाई करना और दूसरों की सहायता करना।

महत्व :- परोपकार एक ऐसी भावना है जो हर किसी के अंदर होना चाहिए। चूंकि समाज में इससे बड़ा कोई और धर्म नहीं है। हमें प्रकृति ही सिखलाती है कि निः स्वार्थ भाव से हमें सबकी मदद करनी चाहिए नदियाँ, तालाब, सूर्य, पेड़-पौधे सभी निःस्वार्थ भाव से ही सेवा देते हैं। इसके बदले वे हमसे कुछ नहीं मांगते ।

उदाहरण :- परोपकार के उदाहरण तो प्रकृति के कण-कण मे बसा है। जिस तरह से वृक्ष कभी भी अपना फूल नहीं खाते नदियाँ पानी नहीं पीती सूर्य हमें रोशनी से भर देता है। इन सबों से हमे निर्वाध परोपकार की भावना सीखनी चाहिए। मानवता के कल्याण के लिए हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों की लंबी कतार को याद कर सकते हैं जिन्होंने अपने तन, मन, धन को समर्पित कर इस देश को आजाद कराया। भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि असंख्य उदाहरण हम देख सकते हैं।

उपसंहार :- हम इस प्रकार देखते हैं कि परोपकार में किसी प्रकार का अपना स्वार्थ नहीं होता बल्कि वह मानवता के नाते दूसरों की भलाई करता है। "सर्वे सन्तु सुखिनः, सर्वे भवन्तुः निरामया।" की भावना होती है। यही सज्जनों का आभूषण है । जिससे समाज पुष्ट

होता है। अतः दूसरों के प्रति अपने कर्तव्य को निभाएँ और दूसरे के प्रति हीन भावना न रखें।

12. अपने मित्र को एक पत्र लिखकर झारखंड के किसी ऐतिहासिक स्थल का वर्णन करें।

उत्तर-:

राँची
19 मई 2023
प्रिय मित्र अर्थव
सप्रेम नमस्ते

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्ता हुई कि तुमलोग कुशल हो। हमलोग भी यहाँ सकुशल हैं।

पत्र में तुमने झारखण्ड के किसी ऐतिहासिक स्थल के बारे में जानने को जिज्ञासा प्रकट की है। मैं इसी संदर्भ में तुम्हें बताने जा रहा हूँ। राँची शहर से मात्र 10 कि. मी. दूरी पर प्रकृति के सुंदर वातावरण में एक छोटी सी पहाड़ी पर स्वामी जगन्नाथ जी का प्राचीन मंदिर अवस्थित है। यह मंदिर यहाँ के शाजा एनी शाहदेव जी द्वारा लगभग 100 व पूर्व स्थापित की गई थी। यह प्राचीन मंदिर झारखंड की धरोहर है प्रतिदिन यहाँ दर्शनार्थियों का मेला लगा रहता है। इस पहाड़ी के ऊपर से हम राँची के विहंगम दृश्य को हृदय से स्पर्श कर सकते हैं। प्रति- वर्ष आषाढ़ मास में यहाँ रथ यात्रा का आयोजन हुआ करता है। भारी भीड़ होती है। दूर - दूर से पर्यटक आते हैं। कोरोना काल में मेला नहीं लगा था। इस वर्ष जोरदार मेला लगेगा। तुम सब यहाँ मेला देखने आओ। बहुत मजा आएगा।

पूज्य चाचा जी को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

आनंद

13. छात्रों में शिक्षण के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

पढ़े चलो बढ़े चलो

सबका है ये अधिकार, पूरी शिक्षा पूरा प्यार अपने बच्चे बच्चियों को स्कूल भेजिए शिक्षा
अच्छा नागरिक बनाती है और अच्छे नागरिकों से बनता उत्तम देश।

शिक्षा ही विकास की नींव है, पढ़िए और पढ़ाइए.

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत जनहित में जारी

(13) स्वास्थ्यवर्धक पेय सामग्री बनाने वाली कंपनी की ओर से लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

स्वाद भी और सेहत भी प्रोटीन स्वास्थ्यवर्धक पेय

प्रोटीन स्वास्थ्यवर्धक पेय

- प्रोटीन, विटामिन और आवश्यक मिनिरल से भरपूर
- कमजोरी को दूर भगा कर दिनभर आपको ऊर्जावान बनाता है।
- स्वाद ऐसा की सबको पसंद आए।

निर्माता : हेल्दी फूड प्रोडक्ट्स राँची 7923235551

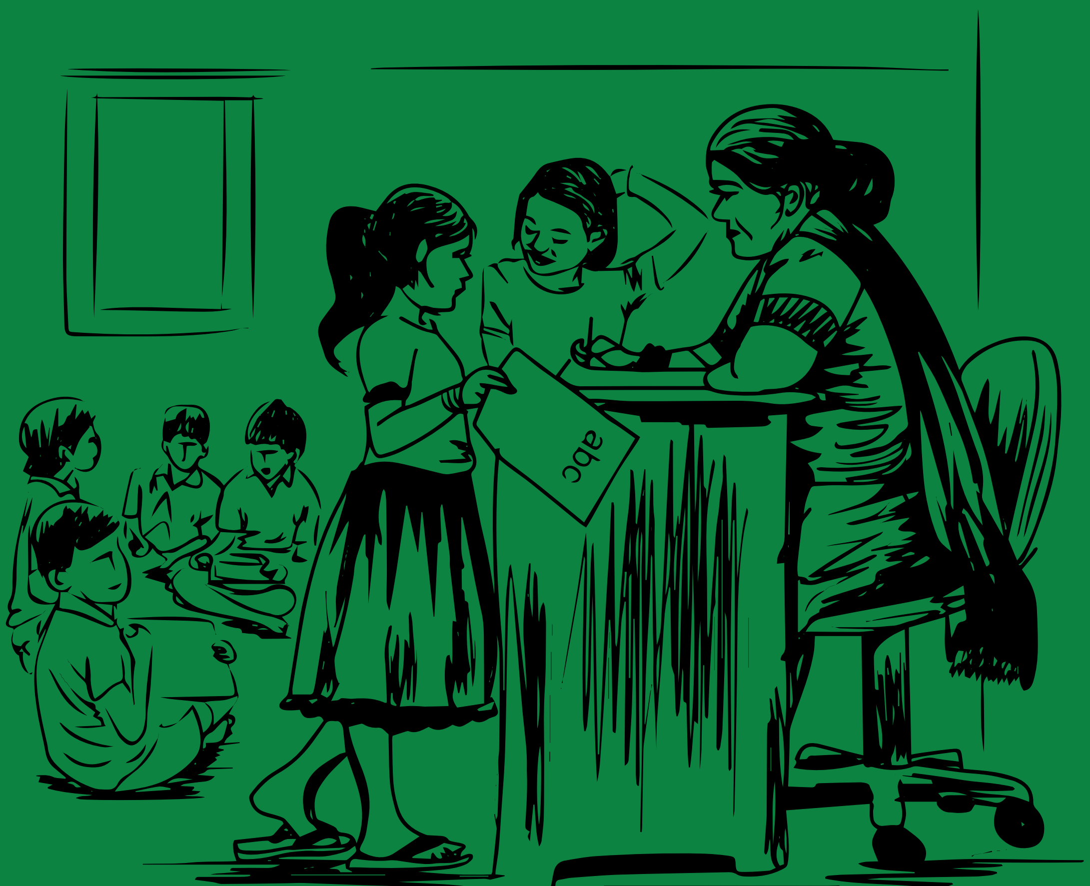

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi